A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 363 Subject

Name of MSS अनेकार्थ नाम माला आदि

Author नंददास

Period Folios 88

Script Devnagiri Source Prithipal Singh.

Missing Folios

8

15

घनन्दन धरसु
गुनजोना।।ग
ठन प्रे

A. no. 363

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ अथ अनेकार्थ लिष्यते॥ श्रीहनुमताय नमः॥
दोहा॥ जो प्रभु जोतरजगतमै कारन करण अभेव॥ विघन
हरन सभ सुभ करण मो नमो नमो तिह देव॥१॥
एक वसत अनेक ह्वै जगमगात जग धाम॥ जिम
कचन ते किंकनी कंकन कुंडल नाम॥२॥ उचर सकत
निह संसकृत समझन को असमरथ॥ तिन हित नंद ज
था सुमत भाषत अनेकार्थ॥३॥ सबद एक नाना अर
थ पयत जहां सब चंद॥ सो जे अनेकार्थ को सगम करत है
गो प्रा घु॥ गो इंद्री गो वाक जल सर्ग वज्र सर दंद॥
गो धर गो तरु गो किरन गो पालक गोविंद॥५
सुरभी प्राद्॥ सुरभि चंदन सुरभि मृग सुरभि वहुर वसंत॥
सुरभि चातर वन सुनै जो जग करता कंत॥६॥
कलि प्रा०॥ कलि कलेस कलि युद्ध स्मा के [illegible]॥
कलि कल जुग मै और निह केवल केसव नाम॥७॥
मधु प्रा॥ मधु वसंत मधु चैत्र जल मधु मदरा मकरंद॥
मधु नभ मधु पय मधु सुधा मधु सूदन गोविंद॥८
आत्मा प्रा॥ मन बुद्धि चित स्वभाव तनु धरम जीव हंकार॥
एकिये सब आत्मा परमात्मा के अधार॥९
धनंजय प्रा०॥ अगिन धनंजय कहत कवि पवन धनंजय आह॥
अरजुन विहर धनंजय सन्न [illegible] ह॥१०॥

२

अरजुनप्रा॥ अरजुन द्रुम अरजुन धवल अरजुन कांचन जान॥
सहस बाहु अरजुन कहै अरजुन पांडव सोउ॥ ११॥
पत्र प्राद॥ पत्र परन सो पत्र रथ वाहन पत्र सो चित्र॥
पत्र पंछ विधि नहि दीये उडि उडि मिलते मित्र॥ १२
पत्री प्राद॥ पत्री तरु पत्री कमल पत्री बहुर विहंग॥
पत्री सरका चित्र जिम समस्त बहुन रंग॥ १३
धाम प्राद॥ धाम तेज सो धाम गुन धाम किरन सहधाम
धाम जोत जो ब्रह्म की कियत संदर स्याम॥ १४
कामसद॥ काम भोग अभिलाख पुन मनमथ कहिये काम॥
काम काज जिन भूल मन भजि लै निसदिन राम॥ १५
विरही प्रा॥ विरहि हंस विरही अंग नविरही कुरक नाम॥
विरही ओर किसोर को धारे चंद सर स्याम॥ १६
वामप्रा॥ वाम जु टेल सो वाम प्रिव वाम काम कर वाम॥
वाम मनोहर को कहित तासे संदर स्याम॥ १७
भवप्रा॥ भव संकर संसार भव भव कहिये कल्यान॥
भव जनम जग सुफल तव भवलयं संदर स्याम॥ १८
कं प्राद॥ कं सुख कं जल कं अनल कं सिर कं पुन काम॥
कं कंचन सो प्रीत जिम असु कर रे रहि दस नाम॥ १९
खप्राद॥ ख मन खे गह खं नवंत ख चर खर को नाम॥
खं छी दुख देत है दयाकरो हरि स्याम॥ २०

अथ कल्पार्थ ॥ कलप दिवसको विधि कहत कवि कल्प सरथ
जोहोइ ॥ कलप कपट तजि हरि भजो कलप विग्रह मेटि सु
कर प्रावृ ॥ करि गज शुंडकर कर हसत किर कहिये जुपे दान
करि विष सम तज विषय रस भजु हरि अमी निधान ॥२२
दर प्र० ॥ दर जु कहत कवि संख को दर देख भय को नाम ॥ दर
दर ते राखो कुंवर गिरिधर सुंदर स्याम ॥२३॥०००
वर प्र० ॥ वर सुंदर वर श्रेष्ट पुन वरज देवतो दान ॥ वर द
लहि सो कान मिज द्विज जो पै हिय हरि लेत ॥२४
विष प्र० ॥ विष सरपनि विष करन पुन विष जु विष का काम
विष सुधारस कर हरि भजो जा विध सब धाम ॥२५
पतंग ॥ तरुन पंतग पतंग खग पाकै वै वहर पतंग ॥ सवै
तजो रंग पतंग को हरि एकै नवरंग ॥२६॥
दल प्र० ॥ दल कहिये नृप को कटक दल पल्लव को नाम ॥
दल वरहीके चंद्र सिर धरे स्याम अभिराम ॥२७
पल प्र० ॥ पल आमिष को कहत कवि घट उनाम पल रूप
पल जु पलक कर हरि विधि परे सो पुन नरक जु गहे ॥२८
वल प्र० ॥ वल वीरज धीरज वहर वल नृप दल को नाम ॥
वल साहस वलदेव पुन वल कहये वलराम ॥२९
अमल ॥ अमल अमल नरथ समरथ पुन अमल पुरन को नाम ॥
अमल अमिर न अमल अमली सुत भजै मन मोहन स्याम ॥

3

वय॥ वय विहंग को कहित कवि वय कहीयत न काल॥
सुमर सुवेद क्रम जात वय अजसमंद तडपाल॥ ३१
जीव॥ जीव ब्रहस पति को कहित जीव कहावे चंद॥
जीव सा स्वामि त जीवै जी जी के गुवंद॥ ३२॥
मार॥ मार हाडमी मार विष मार कहावे काम॥
मार मीच तें जव वचे जपे राम अभिराम॥ ३३
सार॥ सार छीर जो सार वल वहर पुरुष रस सार
सार कहत पुन वीज को धरम सार संसार॥ ३४
कलभ॥ कलभ कहत करवार को वाहरो कलभ उताल॥
कलभ कलभ केल कान तें काडै कुम्भ गुपाल॥ ३५
नम॥ नम अगहन नभ भाद पद नभ सामन को मास॥
नभ अकास नभ प्रि कटही नर जार राम निवास॥ ३६
वसु॥ ... वसु वसु धन नरत वसु वसुम फिर न वसु नीर
वसु धन जाके साई धन धन जाके वल वीर॥ ३७
पट॥ पटनी लता को कहत कवि पट अरोगप कहंत॥
पट प्रवीन जो जगत रमे रुकमनी कंत॥ ३८॥
तुरंग॥ तुरंग तुरंग तुरंगम न वहर तुरग तुरंग॥ --
हरन तुरंग कुरंग सो नरि रूपा है रसरंग॥ ३९
सामज॥ सामज कहीयत रूधर को समय सामज कहियत कों
सामज पुत्र सो पुत्र सुभजे जु सुंदर स्याम॥ ४०

3

कबंध॥ विनसिर कहत कबंध है कबंध पुन नीर॥
राछसै एक कबंध है जिहि हीनो रघुवीर॥४१॥
हंसपु॥ हंस तुरंगम हंस रवि हंस मराल सु पुंज॥
हंस जीव को कहित कवि परम हंस गोविंद॥४२॥
वारा॥ वारा कहावे वलतनय विसष ग्राह पुन वारा॥
वारा कहित पुन स्वर्गी कर मनी हरि पर्वनिरधारा॥४३॥
पयोधर॥ मेघ मारक कुच तेल कुंभ ये जु पयोधर आहा॥
भूधर गिर भूधर नृपत भूधर पाद वराह॥४४॥
गोत्रपु॥ गोत्र विप्र को कहित कवि गोत्र सेल सुरखत॥
गोत्र वंस सो धन्य है गोविंद गुन न गावत॥४५॥
तनुपु॥ तुन सरीर वस तार तुन तुन सो तिमतुन जात॥
तन विरको जुगत मै भजै न मदन गोपाल॥४६॥
वाल॥ वाल सिसु रारह वाल सिलमूक कहावे वाल॥
वाल सोई है जिगत मै भजै न मदन गोपाल॥४७॥
जाल॥ जाल झरोषा जाल वान जाल हेम गज मंद॥
जाल भज रवि पुत्र जगत निर मूंड़ जपि नंद॥४८॥
काल॥ काल असित गो काल वाल धर्मराज पुन काल॥
काल व्याल काल हिर भजे मोहन मदन गुपाल॥४९॥
ताल॥ ताल ताल हरि ताल पुन कारहस फल न ताल
ताल विघ फल षाय कर हत्योज नंद को लाल॥५०॥

२ जलज॥ जलज मीन मोती जलज संखै रु चंद॥ जलजै॥
जलज कमल कर फेरते ऐसे जलजा के कंत॥५१
व्याल शब्द॥ व्याल कूरन व्याल गज बाघरु अति जु व्याल॥
व्याल सर्प सिर चढ नचे नट वर वपु नंदलाल ५२
तम प्रा॰॥ तम तामस गुन राहु तम जु तिमर तम क्रोध॥
तम अग्यान को हरि हरि उर धर दीप प्रबोध॥५३
गुन प्रा॥ गुन रस गुन सूत्र पुनं गुन कविउ कीजेह॥
गुन निधि चत्र गोविंद को गाव हिय भर नेह॥५४॥
अव प्रा॥ अव पर्वत अव मेघ पुनि अव सविता नाम॥ को
अवर छाकें सभ जगत के रोके सुरे स्याम॥५५॥
वन प्रा॥ वन पानी को कहत कवि वन वारद नाम॥ को जाल
वन को नटवे सु अभिसंग आवत मंद गोपाल॥५६
घन प्रा॥ घन दृढ घने विसार पुनि घन जो कारे तूनी हार॥
घन अवंद घन से घन सार विंद घने नंदकुमार॥५७
२ वारण प्रा॥ वारण स्तुति अधार वरन द्विजादिक चार॥ वरणे
वरण अरुण सित पीत पुन अवरन राको मुरारि ५८
पोत॥ पोत कहावे निपट सिसु पोत जो पात्र अनूप
पोत नाव चढ जलद मै कृष्ण नाम मुष रूप॥५९
बुध॥ बुध पडत को कहत कवि बुध ससि सुत विख्यात॥
बुध हर को अवतार बुध अयो जिह ग्यान॥६०

अनंत॥०॥ गगन अनंत कहत कवि वहुर अनंत अनेक॥ सेष
अनंत अनंत क्रिष्न हरि अनंत अद्वैत एक॥ ६१॥
छय॥०॥ छय पुनि दिवस को कहत कवि छय कहीय खइ रोग
छय सलेम धुरहि भषेली नुहोत सब लोग॥ ६२॥
राव पुं॥०॥ राव बननि राज कमल राव सकल करा मीत॥
राजे काम गोबद को जैरनी गजर घुवीर॥ ६३॥
लोक॥ लोक व्याकरन लोकजिन लोक रसमूल॥
तीन लोक मत उदर दुधर हीन सो गनत भूल॥ ६४
सक्र पुं॥ सक्र विबुज अगम इन पुन सक्र जेठ का मास॥ ६५
सक्र अमर वाव नि अपि ते बल हि न करत विलास
घन पुं॥ घन रवि घन ससि घन पवन घन सोवत को प्रास
घन विरुत घन देवता मन घन समनि अमान॥ ६५
कलाप॥ गुलि कलाप नर नीपुन अमर न अपि मलाप॥
वैरी चंद कलाप है हरि का नाम अलाप॥ ६८
ब्रह्म पुं॥ ब्रह्म वेद ब्रह्म कुल ब्रह्म विघ ब्रह्म रोग
जीव॥ ब्रह्म नरन के सदन ताहू न वात तीय॥ ६९
उड पुं॥ उड विहग उडन छत गन उडु के वर न कमाह॥
उड पचंद ना का उड पजु राउ विराह॥ ७०॥
भेद पुं॥ भेद प्रान नर भेद बल भेद अलप अघ भेद॥
भेद गरुड नर ते जगत भजै न वेद नेद॥ ७०
वरन॥ वरन कहीये वर जको वरन पुन मनाह॥
वारन गज हरि उ धिरयो ज्ञान गर्जगनाह॥

5

संधन ॥ संदन जल को कहत कवि संदन चित नुरंग॥
संदन रथ जे हरकमन नीलकंठ घे चीर गा॥ ७१

पंछी ॥ पंछी सिसि पंछी मदन पंछी गोहे सचेउ ॥ केते
पंछी वहरयो हु जो हरिकीनी विवषेउ ॥ ७२

कोसक ॥ तव कोसक जल कवि रग रक कोसक गुगल नाम
कोसक विस्वामित्र जिन जाचे रघुवीर राम ॥ ७३

पुषकर ॥ पुषकर जल पुषकमल पुषकर अमृत रंगा॥
पुषकर तीरथ पाप हरि पुषका नाम जो वेद ॥

संवर ॥ संवर अंकत कोकहत संवर गंवान हुभाय ॥ ४
संवर पीत जुस्याम नवर रहो मनो तडन लभाय ॥ ७

संवर ॥ संवर जल संवर मन ले संवर मेल अनूप ॥
संवर वांधहि गाठ गहि कपंग बैरूप ॥ ७५

केवल ॥ कंवल गुगल कहत कवि कवल जल परवाहु॥
कवल घेन चरावते ऊठे व्रज गके नाहु ॥ ७७॥

नग ॥ नग कहित दुम नमै रतन नग कही ये पुन धाम॥
नग गिरजा ने का हू को नागर नग धर राम ७८॥

नाग ॥ नाग कहि नाम पुवाज नाग दुष वर वाम॥
नाग सरपन सार को सिद्धमंत्र हरि नाम ॥ ७९

करन ॥ करन कहावे रवि तनेय कर कहु पुन कान॥ ८०
करन नाव जिह मे धये कर धारु भगवान॥

द्विजपंछी ॥ द्विज पंछी को कहत है कवि द्विज कहिये पुरोत
नीतहर द्विज तु व मजे जब जाने भगवान॥

5

अज प्र॥ अज बकरा अज पता कहि अज कहीये पुत रस
अंजं जो वन अवरन कहत अजन अजकहे त॥ ८२ ॥

पुण्डरि॥ पुण्डरिक पुण्डरीक कलस नाम पुन कहे कुलशपकूर्वीसों
सवसंकाहियो कहत रहे विवहाय॥ स्फुटलाग॥ ८३ ॥

विरोचन॥ कहि विरोचन सूर्य्य पुन चंद विरोचन जान॥
दैत्य विरोचन धन्य है जा को बल दान॥

वल प्र॥ वले वर है वल गुजरी वल भोजन वलमान॥
वैरी वके जाउ वल है य हरि अकुराग॥ ८४ ॥

त्रिक॥ त्रिकं पाव के को कहत सविविक्ष अश्वा को
नाम॥ वक दानव वक कहत पुरा श्याम सेर॥

रज॥ रज राजस रज कहत पुन रज पुष्प मै है य॥
रजे धूर लीं रज पाय के हरि न मेल नजल दोय॥

कुस॥ कुस सीता सुत देव नौ कुस कहीये पुन नीर॥
कुस दानव दल द्वार को मधुपर बसे वलवीर॥ ८५

कंबु॥ कंबु संख सो कंबु गज कंबु गुड को नाम॥
भवन गगन सो भवन जल त्रिभुवन नायक स्याम॥

कूट प्र॥ कूट कहत सो कूट गिरि अहरन कूट कहंत॥
कूट कपट कोगिरि पट तजे भजन संत सो भगवंत॥ ८६

घर प्र॥ घर राक्षस घर सात पुन घर तीक्ष्न विषेश
घर गरे घर स्मेत जगत जे सम से कहकात॥ ८७

हरनी॥ हरनी मित नमा है मित हुर नी मिया जीत॥
हरनी जुथी नास की फूल माल है सिहीय॥ ८८

कुंज ॥ कुंज मंगल कुंज मान द्रुम कुंज में सुर नाम ॥
जमुना ग जम राज ते राखो हु सोदर स्याम ॥ ९३
धात्री ॥ धात्री कहिये आवला धात्री धाय विषामे
धात्री धरनी सी सपर सा हत तिल पर वान ॥ ९४
रसना ॥ रसना काची कहत रसना वह रथ्यो दाम ॥ कवि
रसना त्रिह्वा प्रसुद्ध है क्यौ न ररै हरि नाम ॥ ९५
पिका ॥ पिका मन की सद री पिका स्यान को वाम ॥
पिका हरै रपु रोग को इम जघ हरि नाम ॥ ९६
रम्भा ॥ रम्भा है कदल पसरी रम्भा कदली नाम ॥
रम्भा जो कुल गौ व्व निज मो है धा न स्याम ॥ ९७
वारुणी ॥ गज चौंत कहीय वारुणी सरा वारुणी नाम
पस जम दिस पुन वारुणी वारुणी वसै जिह ग्राम ॥ ९८
माधवी ॥ मा धवी घालमयरा देखो मा या नैन कहते ॥
माधवी मोहत लाल की जिन माहे सम्पंत ॥ ९९
इला ॥ इला मही बुध तिय इला इला उमा अभिराम ॥
इला सरस्वती तो मलीनो नै हरि को नाम ॥ १००
जोति ॥ जोति नखत गन जोति दुत जोति ति अग्नि प्रकास ॥
जोते वंर स्वधा घर नंद को रखो प्रस्लिद लाग ॥ १
समना ॥ समना कहिये मालती समना सहरी तीय ॥
समना रति काल सो कर लै ले पट जीय ॥ २
इडा ॥ इडा कहत पुन देव ता इडा भूमि अभिराम
इडा भव का मात मो हिरति दीजै हरि नाम ॥ २

रसनाम॥ रस जल रस विष कहत पारस रस पारद पुन होय॥
रस शृंगार रु जो रस सही हीउ जिन नकि व सोर॥ ५
निसानाम जौं॥ निसा जामनी को कहत निसा ऊरदि हा नाम॥
अजा छाग अरु माया अजा जा जित सारे अजवायन॥ ६
विधनाम॥ विध वेधा विधि रु वहतो पुन विधि कहीये जेः धि
विध कैं विधि जो विधि रची सोई विधि परवान॥ ७
जिह्वनाम॥ जिह्व आलस कर चलत न जिन कहावे मूढ॥
जिह्व कपट तज हरि भजो पर घट पर गति गूढ॥ ८
हसतनाम॥ हसत कहत गज सुंड को हसत नक्षत्र सुभाय॥
हसत हाथ तें डार जिन तूं ही रा तन पाय॥ ९
क्रीतानाम॥ सो मंत्र क्रीत हैं पुन क्रीता सुनिधान॥
जम क्रीतात के त्रास तें त्रातो कला कत॥ १०
मित्रनाम॥ मित्र भानु को कहत कवि मित्र सगन को नाम॥
मित्र मानत सैं न जगत के यके सुंदर स्याम॥ ११
सारंगनाम॥ रवि ससि हय गज गगन किकिहैं कुरंग कूर्म
चातक दादुर आलि कमल पिय कहिये सारंग॥ १२
हरनाम॥ हर हर चंद्र अरविंद अलि कपि कहत केकयाने
कंचन काक कुरंग पवन कहत पुन भानु॥ १३
हरनाम॥ पानी पावक पवन पय गज गिर नगर
यह रत्ते हैं मकर मणि हरि र पुकारे गोविंद॥ १४
ध्रुवनाम॥ ध्रुव निस ध्रुवल धवडो गोपति धव पद सो ध्रुव
ध्रुव तारे जेम अटल तें गुन हैं गुन गोपाल॥ १५

7

समनसि॥ समनस सुर समनस पुहुप समनस वंक रु वसंत॥
समनस जे जिन के मन वसै कोमल काम ली कंत॥१६
विपट॥ विपट सु सग पल विपट विपट कहत विस्तार॥
विपट वृछ की डार गहि टाडे नंदकुमार॥१७॥
दान॥ दान द्विज को दीजिये जैसे मद करि ये दान॥
दान सु करो लेत वन जो पी प्रमत्ति च्यान॥१८
जोरी॥ जोरी मैं सुत तिय जो जोरी हय तीय होय॥
जोरी जिता पत्तिव ते वहर देर दर जो सु॥१९
स्यामा॥ स्यामा सुवती रंज स्यामा स्यामा रजी होय॥
स्यामा पीपर को कहत स्यामा रजी पुन सोय॥२०
हरिद्रा॥ कहत हरिद्रा वन थली निसा हरिद्रा होय॥००
वहर हरिद्रा मंगली मंगल करणी होय॥२१
कहा दग॥ वस्या नदी करे हरी मघु मा थी मैरली
उकै को कवि कहा कहे पुन धन्हा है दाधा॥२२
सुधा॥ सुधा दुग्ध वजरी सुधा सुधा लेपनी नाम
सुधा वसु धात्री सुधा सुधा अमृत को नाम॥२३
सीता॥ सीता नदी सीता छीमा सीता गंगा होय॥
सीता कृष्ण न पुन देवता राम सुंदरी सोय॥२४
वला॥ वला सेन कसुधा वंध्या वला सो धरी सोइ
वला कहावे लछ मी सिद्ध जीवे सब कोय॥२५

हार प्र॥ हार मुकतन के फूल को हार छत्र विसतार॥
हार बरही को बोल वो मारग कहियत हार॥२८
आहि प्र॥ अहि वासुर अहि राहु पुनि अहि इक कंद नवकाम
अहि काली सिर परन चे नटवर वपु नंदलाल॥२९
कुथ प्र॥ कुथ कंथा कुथ कीर इक कंदर्भ कै ऊन कुथ कोस॥३०
प्रात सनानी विप्र कुथ कुथ कर कंवल सोंधे ३१
कुंत प्र॥ कुंत सलिल अरु कुंत कुसुम नल नभ काल॥३२
कंवल कुंतल विषानी पें कांत कांचडम कौर ३३
कुंतल॥ कुंतल सूत्र धार कछु कुंतल कपटी वेस
खड्ग धान कुंतल बहर कंत कहावे केस॥३४
तंत्र प्र॥ तन्त्र सास्त्र सर्वत्र पुनि सिद्ध औषधी तंत्र॥
तन्त्र कहत संतान को सिधि समत निपुन तंत्र॥३५
पुंडरीक॥ पुंडरीक सर सिंधु पुनि सिंघ ... छत्र॥
पुंडरीक पंकज जु कहै पुनि ... बाम
चक्र प्र॥ चक्र चार नररथ चक्र गन चक्र दोष पुनि हेत
चक्रवाक खग चक्र पुनि चक्र समुद्र सोय
परघ प्र॥ परघ पवन जल रंध्र नदी परघ सरस सुलेष
परघ वज्र परवत परघ परघ जेस त्रुवि प्रेष॥
कातर॥ कातर कानन कहो कातर जो कातर॥
उर भिद्यो जो कातर करे कायर कहिये कातर॥३६

8

खजूर॥ सरस भानव खजूर पुनं अरु रूप खजूर॥ खजूरस्य॥
कुदजात खजूर इक पुन नाली सखजूर॥ ४०
द्रोण॥ द्रोण गाहू छिने द्रोन पुन द्रोण वहर महकाए
द्रोणंकाक अरो द्रोण गिर अरु कुलचार जद्रोण ॥४१
कट॥ कष्ठ लेना विप्रो धरक कष्ट दिसाजु स्यार॥
कष्टां वहर वमेध्यरा बुधहीनं नरस्य॥ ४२
सित॥ सितं तीक्षन सितं सर्क पुनेसितं रूपे कोनामे
सित हिमगिर सितं सेयनपुन सितसकर सब पैधो॥ ४३
गुरु॥ गुरु नृप गुरु मातृ पिता गुरु जो परयत घाट
गुरु भारी गुरु देव पुने सभ वाग्रु सो वंद॥ ४४
नंदन॥ नंदनं चंदन कोकाड नंदनं कहीयेतानं॥
नंदन पुनं वंस इक कोनंदनं नंद विष्यात॥ ४५
केतकी॥ केतकी वन स केतकी कुसम केतकी मर जंचर
केतकी कामनोजको केतकी वडो धाय॥ ४६
मनमिथ॥ मनि मधु केष्टत देवता मनमिथं कर नेत॥
मनमिथ का करालसभ जाकि कघर नं प्रेत॥ ४७
कृष्णा॥ कृसनं काल हीन दीकृष्णा पिपर होय॥
कृष्णा वहर चो द्रोपदी हरि राषी अवरसे॥ ४८
पलास॥ हरत वरन सुपलास राष्यस वहर पिसास॥
हमवहर सभं पलास हैविहरे कंपलास॥ ४९

8

संरह॥ नेल मनेह सनह घत ३ न मम सह॥ मनेहै॥
सानिज चरन का नर दास कर हुँ देह॥१५०
भवर समुद मे सवदगुरु का काठ सम सच्या॥
मरनी पास म कंतजसतसे आवर हय॥१५१
जो मनकथी को पठमुनेनिर कार॥००
॥ताहिमनकथ धिहै पुनमर माध्य हाय
॥इति अक्षके का थीस पुरण म॥
॥संवत १९१७ वि म॥ १०॥
॥नदकिसोरने लीखी॥ ॥
॥३स ३का ३ तार॥
देवीचंद नेलिखा॥
पठनअथिआ॥
नेसा १९३६ मा॥
मविहे फाण
न के पेले॥
२ वजेके
कीवा।
जमा।
फा।
हा
ही।

लपी पोथी
सा १९३६
मठा
१११

ختم از دو ادن کتاب
در ماه ... ۱۹۸۶
بیا ... اول

9

[illegible]

آج [illegible] چیت [illegible]

(۱) [illegible] (۲) [illegible] (۳) [illegible]

(۴) [illegible] (۵) [illegible] (۶) [illegible]

(۷) [illegible] (۸) [illegible]

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीरामाय नमः ॥ अथ नाममाला
तेन मामि परवर मगुरु के अकमल दल नैन ॥ जगत रस
करुना रवन गोकुल जिन को ऐन ॥१॥ उचित सकल न
सकृत जान्यौ वाद न नाम ॥ तिन लग नंद सुतहि यथा
चित नाम की दाम ॥२॥ गुंथन ता ना नाम को अमरकोश
भाय ॥ मानवती के मान पर मिलें अर्घ सब आय ॥३॥

हिरदे ना०	व छ रिदै उर हिया के उपजत अभिमान ॥
	ताको घव को घो भई ताको कहि अनमान ४
मान ना०	अहंकार मद दर्प पुन गर्व समय अभिमान
	मान राधका कुवर को सवक हु करत वखान
सखी ना०	वित्या माघी वा सखि हितु सहचरी आह ॥
	अली कुवरि नंदलाल की चली मनावन ताहि ६
बुद्धि ना०	बुद्धि मनीषा सेमुषी मति धी धिषना ...
	मन लोमतो कर चली भली विचक्षन तीय ॥७
अंगना ना०	बानी वाक सरस्वती इरा सारदा नाम ॥
	चली मनावन भारथी वचन चातुरी काम ॥
... ना०	अरलुरत मरे तासु नु तर न पुन सोय ॥
देवता ना०	कारसत्वर त्वरित सब अरु लै घुरे रे घस ...
॥	वाजवेग जव रभस ... लव न उ ता ... ॥
१९	चपल चली चातुर आली वा ... दिवनरता ॥

सदन सदन ... हकत ... ली नैन ... ता ...

१
10

सोनानां० कंचन अरजुन कों तसर हेम हिरन्य सुवरन॥
अष्टापद हाटक पुरट सातकुंभ जान सुवरन॥११
रूपनामा० जातरूप कलधौत हरि चामीकर तपनीय॥
रुक्म रैद्र रोचन कनक महारजत रमनीय॥१२
रूपानां० रूभ वरजत दुरवरन पुन जातरूप खजर॥
रूपे की गो सार तिद भय भवन तेहू र॥ १३॥
उजलना० सकल सुभ्र घौ गिरि विसद अरजुन सित अवदात॥
नवल धवल उ वे अटा करत घटा सो तात॥१४
सोभाना० भा स्रो भ[illegible] सो भा प्र भा भास छमी पर भाकांत॥
दुतिल परत चारु भवन की सर भलत दिखमान १५
किरना० अंसु गभसती मिउख कर गो मरीचि ववर जोत॥
रसमि पर स समतर सकी जग मग जगमग जोत॥१६
मयूर० नीलकंठ केकी विरही सिखी सिखंडी होय॥
शिव सुत वाहन अहि भखी मयूर कलापी सोइ १७
सिंघना० कंठीरव ह[illegible] केसरी पुंडरीक पनय हर॥
म्रिगपति [illegible] व्याघ पुन पंचा चन पल भ[illegible]
[illegible]० वाजी वाह तुरंग है सैंधव अरध कन्कियान॥
तरल तुरंगम भीर फतंग ने कनपै ये पान॥१८

हाथीना॰ हसती दंती दुरिद द्विप पदमी वारन व्याल।।
कुंजर इभ कुंभी करी मत्त वैरी संडाल।। २०
सिंधुर अनक पनाग हूं गज नाम जे मातंग।।
इत राखत हम तबरे रंगत नाना रंग।। २१
आठसिध॰ अणिमा महिमा गरिमा लघिमा प्रापति कामा।
वसीकरण अरु ईसता आठ सिद्धि के नाम।। २२
नवनिध॰ महापदम जो पदम पुनि कछप मकर मुकंद।
संख अरु खर्ब अरु नील रव ... कहत है कै द।। २३
मोछना॰ अमृत निर्मुक्त कैवल पुनि ... नरभव अपवर्ग।।
निश्रेयस निरवाण धाम ... सिद्ध वड स्वर्ग।। २४
राजाना॰ स्वामी अधिप पर भृटि नृप पति भूप।।
राजा ... वृषभान जे बैठे सभा अनूप।। २५
इंद्रना॰ सक्र संक्रदन सचीपति ... पुरहूत।।
कौसिक वासव वृत्रहा मघवा ... सतन।। २६
जिसन पुरंदर वज्र ... रिपु पाक।।
सो है जिह वृषभान तिह को है इंद्र वराक।। २७
देवताना॰ देव अमर निरजर विबुध सुमन ...
सुर दिवौक स्वर्ग गिरवाण ...।।
कौन देवता रेक ... बैठे ...।। २८

नर ॥

२ अमृत॥ सो वं सुधा पीयू छं जम तें अगद जरा न अरु भोग
अमीज हूं गिनत कथा मंं नर हू तन सब लोग॥ २०
सेवक॥ विधि किंकर दास पुन आनु च दूत नगयदान॥
अति धीरत जिं मैं न सै व वर रागी नर हू जात॥ २१
दासी॥ दासी अति सा गि करी चेरी भर दू नं प्रेम॥
राजत मन मैं अजर मै को उर वस को रं म॥ २२
खेलाकर॥ खों त हि दय मन मुष पितां मों सों मन मान ३॥
मन मह तो है सह चरी भी नर कि ह वि धजा उ॥ २३
अंजन॥ कजल गर्ज पार ल मसी ना दीप लत होर
लो कों जल गू ढै चली ना हिन दैवै कोर॥ २४
तिलक॥ तिलक पर कस्त्रो वव्र पुन हिरा वनेनु भैन॥
नकुची गति नलन देख जन आपक वन के नैन॥ २५
मुकता॥ मगि गो नों मो ती गुलक के तु जसी ... ॥
मुकता वंदन माल जनु विरहे तें सदर घो मा २६
मेंगल॥ कुन ... मौ म पुनि लोह ताग मह वाल
में गल सें ठों ठा उ दित परै जु है मगताल॥ २७
...॥ उ रु ना मा र गर्व का वक व चाल रंप रे ... र
न ... तौ जो ली जहां ... परै है पोर॥ २८॥

सही नी ... त

॥

मानहु मित्र टीका रिलमौर मलिर कर भालका॥
बहुत काल बीते तरक के बीठल मलका॥

भ्रिकुटी०॥ तेजन्रा भअमुमना के का मोहु भरी अति दानु
जनु शिव प सिस भरवहुर मैन गङ्गा को । ५७

सिरना० उत्तम ंग कर सीरब सिर मोती मांग सहार
भाहु रधा कर उरत जनु सोह नवेद ललार ५८

होडीना० धव कैवाल विवनी लकल पौर जंत छवि मैन॥
मनु हुरती ले भाव की पुहर बर मेरी मैन॥ ५९

वदनव० बदन
ज्ञानन न सा मलपेन वक कवहेड घाव मौन॥
मुख रख है जात रम जिम द रप न मुख को न॥ ६०

कर० हसत वंह मुख पान कर कव हप रत वे पोत
वरस अरविंद व छाय जनु सोवत रेहु फोड रही

गीवा०॥ गलन लवे पर गीव इव कं ठ क पैती कि न
पीक लीक जह झलमलात सम छवि कीनि अन ६२

उरोज०॥ उरज पयो धर कुच सत न रमोंडन छवि के न॥
के चन लेपुट देव जनु प्रजं पुजारा मैन॥ ६३

रोमावली राजी कवली मालतन रोमवंक निमार
जनु उलते उनझलमले वर वेनी की धार ६४

४

12

किंकनी० ॥ रसना कौं बीकिं कनी सत्र मेखला जु लग ॥
घुंघुरावल जनु मदन गृह कों पौरि दरवान ६४

नूपर० नलंकोट में जीर घुन न कपर झलकन वार ॥
गमक डठन जनु मैन की बीसा हुद जस मार ॥ ६५

[illegible]वर० ॥ चौलन चोल दुकूल पट अंगस वासन बीर ॥
प्रियतन वासनु बसन में धि[illegible] कसन कपीर

गरछ० गुवति जिते हत फंगरित गरठु रद निलार ॥
लो काजन में लुकत सबी देषे सब रहमार ॥ ६.८

उक० ॥ स्वल किंतु सवकीर जव पठन लगत पीयना मा ॥
गुवनु कजरा वन बहु कस्पात घावपाव लवाय

दरपन० प्रतिबिंबी आदर सपुन मुकर सुकर जो लेत ॥
पीय मुरत नैनन निरष स्पांति बडार निह चेत ॥ ७०

बेंदो० तैं जो बीनाकस्वकी वहु रवि पचीस्याह ॥
जेत वजावत हार चरी वरजत तरजत ताहे ॥ ७१

नागबेल० नष्व कसन नैोव लहू में पौन सषी करचार
पान० मोर्ह जमैठन विनत जनु चाप चढावत मार ॥

तानदीवेल

सम्मान॥ साधजन सभै मनीह विय मानमि षवेलाकाल
वडिवेर लै निछी यो देषी वाल रसाल ॥ १३
पानी॰ अंबु कमल कीलाल जल पय पुहुकर घनसार
अमृत तारन जीवन भवन घन रस कतपीयार ॥ १४
मेघ पुष्प पयषि व सर वसुधके कबंध पुतोर
उदक पाथ सवरि सलल भ्याप के कवीर दुन सोर ॥ १५
भय॰। साध्वस डर आतंक भय भीत उपज पुन त्रास ॥
डर तो डरती सहचरी गई कुंवर के पास ॥ १६
चरन॰ चरन चलत गत वंत पुन आंघ्रपाद पद पाइ ॥
पग वंदन कर कुंवर के ठाढी लाल नब जाइ ॥ १७
हरदी॰॥ पीता गौरी कांचनी रजनी पिंडा नाम ॥
हरद रंग चरन मिलत ज्यो त्यो तिह रिष भई स्याम
क्रोध॰॥ कोप मन्यु जन आमरष रद रोष मानतनै रोइ ॥
क्रोध भरी तीय को निरख दीनू चरी सार
कुंडल॰॥ वक्र आगत कुंचित कुंडल हीन को ढै
आरनक मल पर कोलनजु नुपे बसन वारन कैर ॥ १८

13 श्री डटी नैं मनै का निसुटी कुटिल सौं ढ तनरि करमा

सुलीकवत लहुत कोल वीते नरक को लीलिलर ना॥

५ क्षेम.ना. क्षेम अनाम जो भद्र मव शिव सेमर्व कल्यान॥

कातडोल तनकाधु कुसल है प्रधानकु वरसनान॥८

नाम नाम. ले स्यू का धर गोत्र डुन नैन धाम लव नाम॥

आमीवरस हरि दरसनु व जिनते पूरन कोम॥८२

युवती. इस्त्री ललना अमतनी वा नावनतां नाम॥

नार्व लीकाला संग नी म दुरा कोला भाम॥८३

तरुनी रमनी सुंदरी नन दरी दुन सोइ॥

लो सम तिय निहलो कमे रची विरे वन कोइ॥८४

बेला॥ आर्जकमन लज विप [redacted] धात पित धाता सत पित

[redacted] चतुरानन चिषन भिवन स्वयंभव सोइ॥८५

मेरु र०॥ सुमगेरु सुमेरु वपु रगिरि कांचुक मनके मनीय

रि मेरुप सत्ता लो नृमलाड सद हु सनाय॥८६

फाल्गुन. जिसन धनि जै विजै नरफाल्गुन क्रीटी होइ॥

गुडाकेस गांडीव धर धार श्वेत वर धज सोइ॥८७

~~सोरतु निगध नुधर स्पाव. धनि हु सम मकावन सां~~

~~निसत. म भवंध हविषर वीतलन मकतीय॥८८~~

13

युधिष्ठिर ना॥ अजातशत्रु जातरिपु कौंतेय ठाकुर राव॥
नृपत युधिष्ठिर सम [illegible] होत [illegible]
गंगा ना॥ विष्णुपदी [illegible] सुरसरी देव॥
[illegible] भीष्मसू [illegible] ॥ २२
हिरण्य ना॰ प्रबल [illegible] कनक [illegible] सुवर्ण
[illegible] लेत [illegible] को [illegible] ॥ २३
शरीर ना॥ काय कलेवर कुणप वपु देह [illegible] ॥
[illegible] घन [illegible] शरीर [illegible] ॥ २४
कमल ना॥ पुंडरीक पुष्कर कमल जलज [illegible] ॥
पंकज सारस तामरस कुवलय [illegible] ॥ २५
मकरंदी [illegible] केसर [illegible] ॥
[illegible] ॥ २६
कपड़ा ना॥ [illegible] वस्त्र [illegible] ॥
[illegible]

14

६ कामनाम॥ मदन मनमथ मनोभव पंचसर समर मार॥
मीनकेत चंद्रोदय गुन रूपक विरह विहार॥ ५२
पुहुपचाप मनसिज वितन सैवरारि रतिकाम॥
रतिपति सो जिमि रूठ के रहत न रमे इव मनरत भाम॥ ५३
मेघन॥ धाराधर जलधर जलद जगजीवन जीमूत॥
६ मुंदर वोलाहक वृत तडतपति कामद धूमसुत॥ ५४
भ्रमरन॥ मधुकर भ्रमर द्विरेफ अलि [illegible] सिलीमुख भृंग
चंचरीक रोलंब पुनि कीलाल [illegible] सारंग॥ ५५
मधुप मधुव्रत मधु [illegible] इंदिंदिर मधुकर॥
षटपद इंदिंदिर भ्रमर मधुलिह गुंजर भौर॥ ५६
दामनी॥ घनरुचि चंचल छटा अकालिका तडित चंचला ह्रादिय॥
दामिनि विज्जुल घनवनै [illegible] नावनै न सोय॥ ५७
सेना॥ ध्वजनी वाहनी चमू वरूथनी सैन॥
सेना विन न नृप वनै नृप विन वनै न सेन॥ ५८
धनुष॥ धनु कोदंड इष्वासन करमुक [illegible]
चाप विन [illegible] चक धनु [illegible] विना न चाप॥
प्रिया॥ [illegible] प्रिया [illegible]
[illegible]

ता०॥ विनती विसखी वल्लँ की विसनी लता अनान॥
अमर वल्लि जिम फूल विन ३ मदे षत तरु नगन॥१
मित्र०॥ सुहृद देतन वलभ सखा मीत मप रम सुजान॥
पीयप्यारे आय मिलन करे अका स्पअनान॥२
पुत्र०॥ आत्मज सुत नअमर षं पुनंतनुज तनुज पंतान॥
नेरके नंद गुविंद सौ न कर गरव की वात॥३
मनुष०॥ मानुष मरत मनँ ष नर मानव मनुज सुमान॥
नर जन जाने नंद को हूर ३ स्वर भगवान॥४
जोगेस्वर०॥ रिषमिष तापस जनीत पीवृती मुन आह॥
जो गी निरमल मन कीरा गनित ही षो जत ताहप
वेदना०॥ आमानय श्रुत वेद द्रुम धर्म मूल सवका म॥
आगम निगम जा लोकह त सोई सुंदर स्याम॥६
धर्मराज० वैवस्ति तपुत्र भ्रेतपत सजन मी पत सोर॥७
महषरध्वज नर देउ धर सम वरती पुनहेर॥
अंतक काल कृतांत जम जाते जग उरपात॥८
सो उत्तर पीय प्रभु आ भ गते पर पार अतजपात
पुन जनेस्वर वैसव नयनद ए लविलद्दो याग८
कुबेर०। ३३ कुपति त्रिवकसखा जौज राज पुंन सोर॥

नरवाहन किंनरस्याधिप दूर व्याधि स कुबेर ॥
२२ हरपद पंकज परसकरु पावत नाहन वेर ॥
सेसना० ॥ सेस महा अंहि तरवपति धरनीधर नअनंत ॥
सहस वदन करउनगनित तरपन पावन अंत ॥
वरुन० ॥ वरुन प्रचेता पासपत जलपति जलचर ईस
सोउ बनत ह पीय पगन पर धरत रहत नित सीस
जनन० । भव उदभव उदरस जनन निजन उतपत है भाम ॥
जन मूल फल तवहो जवै भजी ये सुंदरस्याम ॥
धन० । इनद विवस वित्त संपदा राइ अरथ सुभ औक ॥
धन जे ताव्रज नेर के ते तोन लीनो लोक ॥
मनोहर० ॥ मंजुल संजुत मनोगम धुमधुरुचिर सुकमार
ललित उदार सुनंद को [illegible] ब्रज को आधार ॥
दुरगा० । उमा उपनाँ [illegible] री गवरी गौर जाहोइ ॥
मृडानी चंडका सिव को भवा भवानी तोर ॥
गनेस० ॥ लंबोदर हेरंव पुन दुयमातल इकदंत ॥
मूषकवाहन गजवदन गणपति गौरजा नंद ॥
वेचक० ॥ वाजी [illegible] हा कुरल कतव घरमी कुह कंध [illegible]
कंपदां कों [illegible] कुवर की केती कहत भलीज ॥

कुंजर०॥ सारंग हस्ती वारन पच्छी करि मातंग पुनि गाह॥
सिंगसिंधु केसे इभ गज तिरावल धोरो इतराइ॥
कापथ०॥ रानेवजन दुरह क्रितदुरगति अधिकै हनुमानक॥
किलविष कलमष अकलष पुन कलमलि कलिलकलक॥
पखान०॥ ग्रावअश्म पसतरदुपल पुन पखान अतभार
पाथर पानी पर तरे जाके नाम उचार॥
वेडीन०॥ उडप पोत नौका पलव तरवडि तिन जलजान॥
नावा नाम वउ भव उदध केते तरे अजान॥
रुधिर०॥ श्रोणित लहू क कोन पुन रुधिर अस्र जघतज
लोहु सोहीत रतना हत भई धूरे जात॥
राकस०॥ कोनिप आक्रिय पुन नजन वघ्या कासलद्रुरवाद॥
करवर मासरतनि सा चर जातधान क्रमभाद॥
धारनी०॥ धरसासरीरिहरज्जे पासरद्रुकरामेद॥
जापद पंकज रेन को वाघार मनकसनेद॥
महारुद्र॥ गंगाधर हर सालधर समि धरसि करवाम॥
हरपद से ह शिव भीम भवँगर कामरिपुनाम॥
त्रिनयन त्रिवुकं त्रिपुर अरि रुद्रै उमापति हार॥
जटी पिनाकी धूरजटी नीलकंठ सोर॥
[illegible]ना० देवदिवाकर विभाकर दिन तीर भासकर हंस॥
मित्र तिमिरहर जोतधर ता[illegible]रने मित्र अंस॥

चित्रभानु विहंद्र भानं पुन विवस्वान भास्वान ॥
अंसुमान हरभानु रवि अंवरमणि भगवान ॥
विधन विरोचन विभासपुन मारतंड तपसांग ॥
अंवरमणि दिनमनि तरुन सविता सूरपतंग ॥
मिथ्या॥ मोघा मृषा मिथ्या अंनृत वृतिथ अलीक वितथ
अंसत्तीय सो रूठवल किउ वोल्यो ये वितथ ॥
वेस्या॥ दासी दारी लज्जका बल्लापुंसली होइ ॥
रूपाजीवा कामनी पुनजो भता होइ ॥
वारवधू जगवलभो कहत हैं मलीनाइ
सुषसे मारवोलत नहीं कोऊ वेस्या आइ
निमित॥ निमित गात न कुवज अंध क्राकच अपसषीक
नीचे नरनतऊ रवलनै ककसो सो मान ॥
निकट॥ आत परसुन आनि हूर नरंतर उपसमीप अंत्राम
अवसमि दरदर हो तर्हे र हूनैर नरवास ॥
चंदन॥ गंधसार श्रीषंड हर मलयज भद्रपटीर ॥
तिलकौ चंदन कहत मलवासी मीर
मीन॥ सफरी अनमत्स्य मनलपत प्रिथुरोम पाठीन
मकरझ्र उलासी अउभव तेष्टा वनजम मीन ॥

समुद्र ॥ सिंधु सरितपति सललपति जलधि नीधि कूपार ॥
३ रत्नाकर सागर नदउदधि कुसर मकरं अपार ॥
मरकट ॥ कपि साखामृग वलीमुख कीस सै प्लवंग ॥
वानर करवर नारी मुख रक्तो भिधा तारुक ॥
बलभद्र ॥ रोहिणेय बलभद्र बलदेव संकरषन बलराम ॥
नीलांबर रेवतीरमण मुसली हलधर राम ॥
पृथवीत ॥ पृथवी छिति भू रसा भुवि धरनी धात्री गार
उरवी जगती वसुमती विस्वंभरा वसुधा सहार
... वली विपुला नागुरा धरा लोकधरा होइ ॥
गोत्रा अवनी कुंभनी महि मेदनी होइ ॥
विस्वंभरा वसुधरा थिरा कांहु पी जोइ
र... ... इला विलकरहत पुनता ह ॥
वारण ॥ नौ मुरबगि किनग ... विसिखलिस ... ॥
करि मातंग नरनाच दरथ पत्री कोपन मान ॥
कोकिला ॥ पारक वहिहान ... तिवी धनंजय हो ॥
...उबरि कृपा ... ... पुनसोर
जातवेद ... ... मान ॥
... ... बस निरजर ... मान ॥

मरहठ०॥ सुगल मंदनउ मकनउ सगरकहु कवर लठं॥
मरहमनंद जानेकहा कपजैहे मनरठ॥

पद्धतिका॥ किती कुलले गको विद निपुन घुरा मवीन तिसनात॥
पद विदगधनागरउ को जानै रसकी बात॥

मधुभार· सघस्रा गन सहलनसहित सबगुने जोहे पीय॥
कूपकोह जिमराछीर पीनभाछीर तीय॥

गीतका· दोहद लहे हेलनेह हित मनपरागसनुराग॥
गितगयो तेरो प्रेम बहुरा भामन बड भाग॥

परवान० सगनग भस्ति तदहीं लिंगी लिबरी होह॥
हैल हलो दै गोत्र हरसचलस्रा इधुन होह॥

भुजंगमना· पेतग नागभुजंग उरगी जिहनेगीसभोगी सरप॥
चषुस्रवा वाहहसरी सरलकाकोदर गरदरप॥

मनी· स्राही गूढ विषधर फनी विलसय व्याल॥
चक्रदरवी गरुपोलेलइ केवलकाल॥

पीड० व्याधा विधुरा विथा रुज पीडा स्रारत तीलाप॥
अवज्ञं ... तत पीरवल किनं कि बीपरवान॥

वन नाम॥ कानन बिपुन अरन्य बन गहन कछु कांतार
अटवी मैं आकल लै दई मोहन नंद कुमार॥
कपोल॥ गंड कपोल सु लालते करहा तो करतीय॥
स्याम सुफुंदा मध ललक को दिखसकत समरीय
राहु॥ सिंहकीय सुर भानु तम राहु विधुंतद की भाय॥
वदन चंद मनि मनौ राहु रह्यौ है गहि आय॥
असुर॥ दानव दनुज दैत्य पुन सुररिपु निसचर सैन॥
मायारूपी वन दिन डोलत असुर अनंत॥
हेष्या॥ हेष्या निनद अपित्र पद सुनायं काल सद्रेव॥
हाऊ परी है घोल खव घाउ हिजाकर रोत॥
रविसुत॥ गरल हलाहल गरअंस नीकालकूट रसमार
रहमै विष जिन घोर वल चल आवन करविचार॥
पपीहा॥ कालकंठ दातक हरि चातक सारंग नाउ॥
घन निसि ऊर रटै पपीहा रान रह नवन वैव लजाउ॥
रजनी॥ छनदा छपा तमस्वनी तमी तमस्वा होइ॥
निसा सरवरी विभावरी ... जामनी होय॥

आकास॰॥ अंवर पुषकर नैंम विअम अनंत रषीं घनवास॥
व्यौम अनंत विआर तीर्थ सुर व तै आकास॥
नषत्र॰ कर जं पुनर भवं नषर नषत्र रेगं भीनी भांस॥
कव की गति नहि जु धनत वल नर केघु नहि सेकाम
मेघनाम॰ आरोहण वन आज मिघ आवै तकरं सपीक॥
तंवरीय संग र नम स्तंनु गंकल इमानीक॥
रूपम॰ त घ्रे आल पल वसुषमा तनु केनि पटगै कारोत्रौं
किंद्दु वलरातेमानस चरा छिर्यो है किंद्दु और॥
मकरी०॥ लता सत्रामर कटी उर ननाभ पुन सोर॥
जनु कहु मकरी गुरकरी पकरी विद्या सोर
नारद०॥ वरन आयुर्वद तर गापथ संचर परवी कोर ह
मगरे घल द्वै है रई मोहन नैंरगकुमार॥
गोपाल०॥ मपार्टया किर वो हि रगा आनु के वो आनु केस
कर गां कर करगा तिचे राचे जिन करसोह
चतुर०॥ रिष्टक पथ कि पो न आस बंड लागै कर वाल
वृगजे जी तै गकाहा घार करन कहियौ वाल

दिसानाम॥ ककुभ काष्टा दिस गो आसा है हरि और॥
चितवत है है पीय मग जिउ ससि उहै चकोर॥

नदीनाम॥ सरिता धुनी तरंगनी तरनी झरनी होइ॥
स्रोता आपवती निम्नगा नावगा चरे कासोइ २१
सैलावती स्रवनी द्वीपवती जलमाल॥
नदी नहन कोउ वाट मैं सोच कहा है वाल॥

छोटाभाई॥ अनुज अवरज स नाम है रज वष्ट कनिष्ट कनीय॥
लघु भईया की होर तह कहि वल कातम हीय॥

पितानाम॥ तात जनक सविता पिता वावा तोर गुसान॥ ८
तरूपि पहले नंद नंद को देतै तो है मान॥

विवाहनाम॥ वरन विमै वसर प्रनन तं उद्वह विग्रह न्हिवार
सोत भई जिभयो नह नदु बी दे बीउ हनांह॥

मद्यनाम॥ मधु माध्वी परसता मिरा सुरा वारुणी होइ
आसव मद कादंवरी मदुवा नामै सोइ॥
सिधु प्रसता को वुध हाहा हासी धु प्रसन्न॥
मदपी राजिउ वकत है को हा वकत है दन्न॥

सभावनाम०॥ मं क्रित निसय्या सगोष्ठी जन्याग नि जं विस्वसलील सभाव॥
कवन देव टेटी परत सुदरस कलक हाव॥
अंधकार०॥ अंध तिमर अज्ञान के वीतमस ध्वांत कुहर नीहार
सो तेरै निरष्यौ कवर समन तेल अंध्यार॥
विरक्ष०॥ साषी विटपी अनोकह कुह कुज द्रुम पादप सेह॥
पत्री दली फली वरद विरछ महीरुह सोह॥
पत्र०॥ पत्र परन दल वरह छद करषत जव पैदात॥
नव आगम भ्रम चौक पीय ३४३४३ तलै जात॥
पवनना०॥ स्वासन सदगत मरुत मर प्रान जगत पराना॥
~~नम तनपरमलपरसजब~~
अनल प्रभंजन गंधवह नमस्वामी पवमान॥
पुनना०॥ नाद निनद निसान सबद सोर अमुर षरु नराव॥
वैवे ही मे कहत पीय दे आराे स्वर आव॥
आगमना०॥ वय आदेस निदेस पुन आगम सेत नियोग॥
आयु सहै सव जाउ ढिंग लही पीय के लोग॥
अंत०॥ क्रिस अनल सै अलवेल अलअयके नितंत॥
अत सर वर मलीन रनकस वे से न असेत॥ अतं
कमकहं०॥ निकर प्रंकर अंकुटे व वृज पुरा अक व लवूह
केर लक लौ लावकुल निकरन वयसे पर दे॥

19

12

चक्र अनंत कंदर्व गन सो मतो मव हु विंदु ॥

मै अलेक व तें कही मर्द नव की वृंद ॥

घोरा ॥ दर हतो क ईषद अलप है चक मे दम नाक ॥

नव पीय अस दृ चरन न चितें मु सकेकुंवर नंद ॥

दुष ॥ कदन विधुर अकदन उर दैनहु नरिजनपुजंमार ॥

दुषजिन दै अवजान दै जिनवै ठी इन दार ॥

अर धरा ॥ नि सन ही वचो म हा रिसे हौन लगी अधरान ॥

कौन चलै वल लहो दृरदु जै है उठ पर भान ॥

वक्र ॥ अस निकुल से निरघात पथ वक्र ही नरी नोर ॥

पसो वुरे केही सपर चिर सुकरे रस मार ॥

लज्जा ॥ दर लज्जा वी डी त्रिया सकुच न कर चिन काज ॥

चल वल प्यार पीय पै ओ षद षाल कि लाज ॥

परनधनी॰ पाद त्रान सु उपान हू पार पी ठ मद हु पार ॥

मन हूी वन ही का वती आगे धरी वनार ॥

आटान ॥ सो धा हू रसल प्रा दंते चली हु त्रिय गत मंद ॥

सो मत लषजन गग नन ते अवनी उत्तर अनंद ॥

मकरचंदती॰ जो त्रिसना सो जी को मुदी वर चंद्र कला ॥

जो न जुपर हल वदन ते घोर हरस व लजा ॥

वीथीका।। परम प्रतोली वीथ[illegible] हैनाद ।।
ऊह वीथी चलमार्ग वल निपट निकट पीठ होद ।।
उपवनका। कृत्रिम वन उद्यान पुन उपवन सो हि सुभाराम।।
उह वृंदावन वाग तरु दिष वल घ्यल को धाम।।
वसंतका।। कुसमाकर रितुराज पुन माधव रत्य वसंत
माली जिम सु गत लता पाते अधिक लसंत।
षगका। जंजीर कुंती पंषी सकुन औऊ ज विरध विहंग।।
विलाग पतंत्री पत्ररथ पत्री नभाग पतंग।।
पीपलका।। चलदल पीपल गज असन बोध द्रिम प्रस्स।।
पीपल तै वल दाह नो जो रघु धरम ईस।।
गालव।। धाली पट लाल फर हरा वामों सोम नाम।।
औ कुबस मधु हल पद पाउ यकर तमनाम।।
प्रवका।। विकल लभकमंग पुन मद रोलब सहकार।।
पहर लालकी माल वल नै जुरही काल भार।।
चंपका।। चंपय चंपक स्वर्णभ औ है मपं दुपर ठमार।।
यह चंपा पग पतवल लीराय दुव पहार।।
मधूकका।। माधव मधु द्रुम मधु ष्मवा मधु स्री वृय उठल।।
राम मध्य कौ ऊह पवल कुछ तर वरी उन माल।।

दारमना: रक्तबीज हा लेदो कर रकत लुकापीय कुसमदार॥
दादार मर त देख वलकथ तुव दसन कार॥

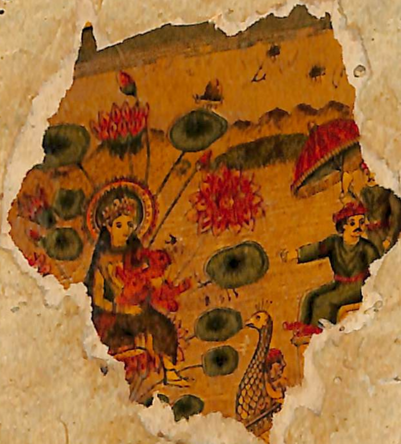
कदलीना॥ रभा मो च गज कुसमान फल कम कामर॥
कदलीज न मे कछु करत तुव रूप कांम केहर

विलेकेना॥ मुख सल बी सदा तालविल मा लूर॥ कुर
रा फ्री फलतुव कुच हम कहत वो हलकवि

तमालना॥ काल कंध ता पद छह कुन्ड कत मकुज तमाल॥
वेणी हैं जह काल व तु म आर मोहन लाल॥

केदवना॥ तुल गनी य दीय प का फ्य जो दलका॥
यह कदव वल काल चड क्रदेर राम हु

कमलेकना॥ वाघ पाध्य तन म डर मे देख वल प्रमदि
वाय पाद्य त्र स डर मे लेख जाह न नि कवि लाफ
वरहो तनक कोला



दास्य॥२ कति बीज हालह कर सु क मियकोटसदार ॥
ऐदार मद त देसरि सब लंक घु तुव दरसनकार ॥
कदली २ सा मोचगा ज मवु सा आ न फकसकमार ॥
कदली जुन भे कच्यु कर त तुव रफनुसार ॥
तमाल ३ कौ लकठ तापिच्छ पुन दुकत हकाजुनमाल ॥
वे हरे यह कालं बल तुव अरमोहन लाल ॥
कदंब॥ तुलगानीप पीप कंग्रो अदर डाघसवाह॥
यह कंदंब वल कानं जो घड कुदे र नमाह॥ ६
किसक॥ वाम्य पोथ पुन ब्रम्ह हम दयवलपरन विसा॥
बरही गन को लाल रा नोहर नयर विलास॥
बेहड़ा॥ ऋषघवि भीत का कार यफलाक्ष लोमविटप॥
भूता भवाम वहेंतुर है जिन बलसृगहप॥
नालेर॥ वा नर सुप लगुरे पुन नार रोरमवकाम ॥
एनारी एना रमहेवल तु हकारत मनाम॥
सुपारी घोंटा कमुक गवाक पुन पुगा सुपारी सह॥
वारे नारी कहत व लर वंक ए तुनचार॥
कोचन॥ वो लल का कंप लता विचार प्रदरीनमा
कुडकारत हक मांगमे कचोव है वलता॥ ७॥
श्रीफल वा नकेता ३ अमा कोमला फाम्रु कला पुनना
सर वलता परम्रर वे तत भली वनता ३॥

जोगधी तीगमनंडलाहोय॥
पीपली॥ कोलाकिसनामेंगधी तीकहीराहोय॥
वैदेहीस्यामाकंरणामागधीकहीयतहोय॥
हरीतकी॥ आभयापथ्याअकथामंतिचेतकीहोय॥
कायसथपथ्यापुनपूतनाशिवाजोयसीहोय॥
पुंडरोदा मवालता॥ मवसनटीनलीमपुननकपोधोतपरवाल॥
येविदुमपामरकहेहेवलिचलयेहकाल॥
लाषकाः॥ लाहीमडुकामध्यरसोकालमेषलाहोइ
रडुआमपालाजोमननीचारफलापुनहोइ
केसरः॥ कासमीरीकुंकममेंरुचरदेववलभानाउ॥
केसरहिगमरकहतमोहनैकधवौवलनाह॥
नरदचवका चरननुपका॥ हरसीगगीकानुपकोहेमपुलपकाजाय॥
यहयधीगंधीपुलनठाढीलेतवलाय॥
राजवलीनः॥ ज्ञाविष्टीप्रियावादनीराजपुत्रकोजाह
रायलतातवपगवतफूलीतमैजुदा
मालतीकः॥ सुमनजातीमेंलकाउतमगंधाहोय॥ हां
जोविष्णोप्रियवादनीपुरुपकोरोय॥
कुदनामः॥ मोचीकुरपवगनपेहरीवलयरनाहि॥
याकीकालियनमेंकधरनुवरसननकोधार
गुंजानाः॥ काकचिंचपुनकिसनलोगुंजाकरननाम॥
किसनकहतपुरुषश्रीसननेयातेसगीकम

३. २२

कौमुदी॥ चरमतकेलकातंवरइतपिकधुनेतहरेखकुंज॥
जनविपक्षारतनहिं वलवनछेरतकी पुंज॥

बंधूकन॥ बंधुजीव बंधूक पुनि जपाकुसम ते नन पेख॥
येफूलनवलउपरहीं आव फलै हम देख॥

केतकीन॥ तालकज रीतिं राहु मां केतकी करत मनाम॥
हरबहरिविं वरषहु कुसम तोहनिरखहै भाम॥

माधवी॥ फूलउत सव आलिमुकनसो रमह माधवी नाउ
उतवासंती कहत मुरे नैं कछु वोलवल जाउ॥

संजीवनी॥ जीवजीवन मधु आव संजाती पुन नाउ॥
यहसंजीवनपांपरे जैसी तेवलजाउ॥

लवंग॥ देवकुसम स्त्री संगपुन वहुरजायकी नाउ॥
~~उतकलायपठाही विनतमुखनकरेवलजाउ॥~~
उत.लवंगकीवेलपर पांपरै वलजाउ॥

इलायची॥ चेहकनिकांतपुन ~~वहुरजायकीनाउ~~॥ कांत ... करा ... लजाउ
इतइलायपठाढी विनतमुखन करोवलजाउ॥

तांबूली॥ तांबूली अहि वलरी द्रजा पानकी वेलि॥
... सरस भई तव रस तें वलरे चक मुख मेल॥

मकरंद॥ सारवमधुपुन पुरपरस कुसम सार मकरंद॥
२ जितहिं रेन असीसवल लैं आपे अलिवृंद॥

वटकाउ॥ जटीक परसीर कंतफल वहुवट वरनि गोच॥
इह वैसीवट निकंट है पचल वलिपियहनरोध॥

सरोवरनाम।। पदमाकर कासार सर सरसी ताल तडाग।।
परमानस जु सरोज सम फूल्यौ कै अनुराग ते
कालिंदी।। रविजा जमना जु अजमी किसना स्याम सुभाय।।
~~परमानं जमुना जु स से जमना ... फिर ... आवत तप स~~
परम जमुना जु समुद्र फिर आवत तस परताप।।
तरंगनाम।। भंग तरंग कलोल लहरी बीचि उरम सुभाइ।।
लहरी हाय पहाय्वल जमुना परसत पार।।
नदीतीरनाम।। कूल पुलिन उपकंठ तट निकट रोधस अभ्यास
तीर तीर चलि जाउ वल पैआराधीय पास
बेतनाम।। बेत्रु लसी नव बिदुल रथी अअंबुस पकानीर।।
पै बेतस के कुंज लखि लाल बहर बलवीर।।
द्वैकेनाम।। जुगम जुगल जुग द्वै दुंद मिथुन उभय बिवदीय।।
जुगल किसोर सुरावको तैररास करे हीय।।
डेढीनाम।। गोरदेही कहै कटइगुन देहरि पंगो जसपाय।।
मिले परस पर पिय प्रिया परम प्रेम करि आय।।
मालानाम। माला स्त्रीक जो गुनवती पर जमुना की दाम।।
करहै जो नर कंठ पर सो ह्वै है अति छबि धाम।।

इति नंददास कृत नाममाला संपूरणम।। सुभमस्तु
इति ... लिखितं किसोर देवीचं
... १९३३ ...
रूप ठाकुर ... ।। सुभं भवतु ...।।

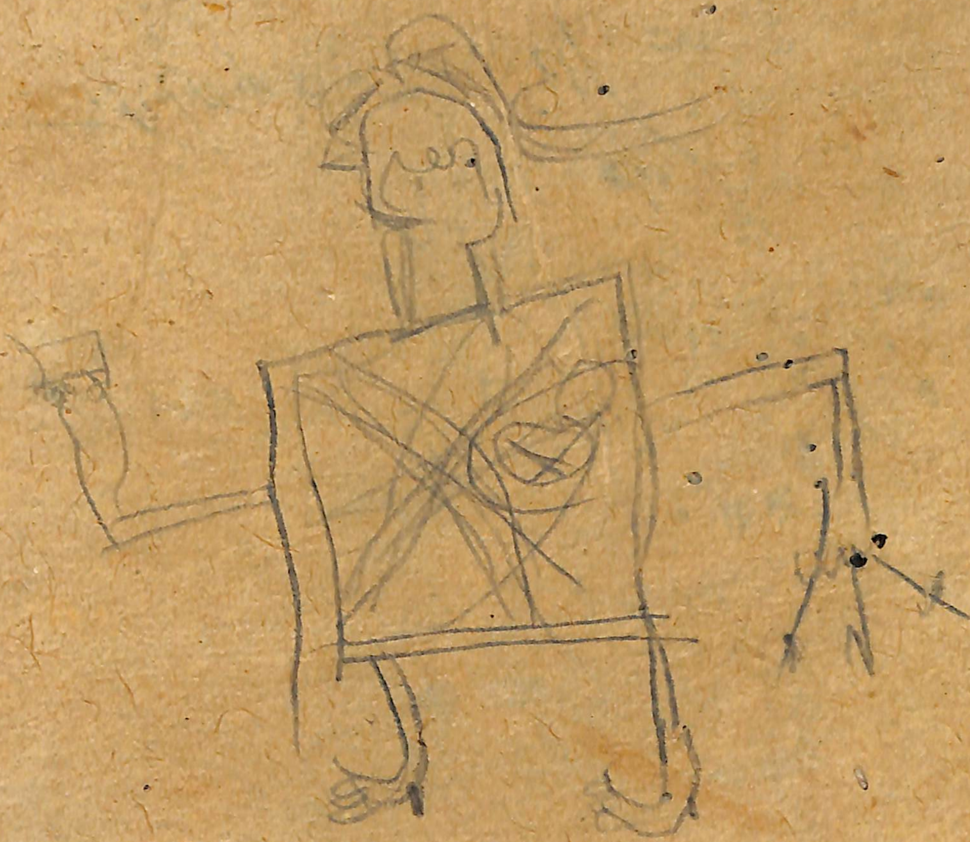
23

23

کاسک میا بلند کرنے کا طریقہ

سہ وار - ۹ بترہ کہ جسم

دیگر سیاہ و رخیم کرنا



24

25

करुन बिभत्स रुद्र भय
वीर हास्य पुन जान।।
सिंगार अरु अद्भुत सांत है
ये नव रस करत बखान

दोहा।। करुन

क

दो।। करुन विभत्स रुद्र भय
वीर हास्य पुन जान
सिंगार अद्भुत सांत को
यह नवरस विधान

दोहा।। करुन बिभत्स भय ... वीर

30 15
5 5
120 75

ॐ म 25

ॐ श्री गणेशाय नमः ।। श्रीरामाय नमः श्री हनुमतेनमः
अथ कविवल्लभ मंगल ।। मंगल दोहा ।। मोहन चरन
पयोज में हैं तुलसी को वास ।। ता हित समर हरी भगत
सभ करत विघ्न को नास ।।१।। आनंद को कंद वृष
भानजा को मुख चंद लीला ही तें मोहन के मानस
को चोरै है ।। दूजो नैसोरच वे को चाहन विरंच
नित ससि को वनावै आज जो मन को न मोरै है ।।
फेर तहैं सान आसमान पै चढ़ाय फिर पान पच
ढाय वे को [illegible]रच में वोरै है ।। राधिका के मुख को
समान न विलोकि विधि टूक टूक कर तोरे पुनि टूक
टूक जोरै है ।।२।। अथ दोष लच्छन ।। रस अनादर स
रूप [illegible] तें है दोष ।। आत्मको ज्यों अंधिता
और वधरता दोष ।।३।। पंच प्रकार दोष हैं ।। पद में
पद के अंस में वाक्य अर्थ में मान ।। रस में पंच
प्रकार ये कवि दूषन पहिचान ।।४।। दोष नाम

दोषकर्णकटु च्युतसंस्कृत अप्रयुक्त है फेर असमर्थ
निहतार्थ हू न भाखिये ॥ अनुचितार्थ त्यागो निरर्थ
कलो दूर भागो कवहू न त्रिविधि अश्लील लखि अभि
लाषिये ॥ छाडिये अवाचक संदिग्ध अप्रतीत
हू को ग्राम्य नेयार्थ पर दोष है न राखिये ॥ विरुद्धम
तिकारी अविमृष्टविधेयांस हैं क्लिष्ट तीन दोष
पद हूं न माह राखिये ॥ ५ ॥ दो० ॥ च्युतसंस्कृत अ
समर्थ पुन औ निरर्थक त्याग ॥ कानहि मे
खटकत है दोष लखो अनुराग ॥ ६ ॥ पदसमूह
सो वाक्य ॥ दोष कर्नकटु अप्रयुक्त पुन औ निह
तार्थ हू जान ॥ अनुचितार्थ अवाचक ले अश्ली
ल तीन प्रमान ॥ ७ ॥ संदिग्ध अप्रतीत हू ग्राम
नेयार्थ हू कवि कहत ॥ ए दस दोष समास मे
पर होमें भी रहत ॥ ८ ॥ अथ कर्नकटु ॥ कान
न को जो शब्द न भावै ॥ श्रुतिकटु ताको सकल बतावै ॥ ९

26

उन्नतरे ... कहै   २ हूं नैर घर कें नरहै ...

उदाहरन॥ जब तें कंत विदेस कों गयो सखी सुन वैन॥
पीय पीय करि कैसदा वैर उनहै विच सैन॥ १०॥ विरही
उरैनैं नि घर घटयो दिये रा रावरी क चाल॥ विससी
लागत है बुरी हसी खिसी की लाल॥ ऐसें संकेत
षावन मंडन होय॥ गत संकेत है सोय॥ १२॥
उँगी सरद राका ससी वहु रिस लसत मकार॥ तो
भाग अनत फुलन कों लखि मन वटत हुलास॥ १३
वि०॥ कियौ सयानी सखिन सों नहीं सयान यहु भे
ल॥ दुरे दुराये फूल लौं क्यौं पीय आगम फूल॥ १४॥
रसक मयां॥ लाजन गारी माह की घाउ दई सम त्रास
दृष्टी दोषन मान यी धष्ट सकें सव रास॥ १५॥ फू
ल्यौ है तरु वाग के सखी वसंत के माह॥ लसै चेत की
चोरनी तो मुख लागी नाह॥ १६॥ अमपुके
सदू शावद है कविन धरे॥ अमपुके नाह सो बुधरे॥ १७
वि०॥ स्यौ विजुरी जनु मेह आन दहां विरहा परयो
आठो जाम अछेह दृग जु वरन वरसत रहत॥ १८

कविप्रिया॥ ठौनरहै लै चारि है लोचनको रुरुचेर
चरोचनको है॥ अथ व्यानसमर्थ॥ दोय अर्थको शब्द
जहँ है के अर्थन विष्यात॥ अप्रसिद्ध मैं कवि धरै तन
हूं असमर्थ लष्यात॥ ३०॥ हैं तो भो परदेसको सज
नी तेरो कंत॥ कैसैं कै दिन बीतहै आयो समै वसंत॥
२२ अ०॥ वेसन यो योवन नयो नई लनाई गात॥ सैपरै
रे अनुराग सर अति उजाल सो भात॥ पीन
केसर लोचन ललित अमर नियन नै वेस॥ कैल
न जीते परप हिर जलमै भूलेस केस॥ ग्रौवी ३०॥
लवाहीते हो तवस कहा नरे समहे॥ दूरर हैं सरिता
न ते पावै कहा वलेस॥ अथ निरस्तार्थ॥ दोय अर्थ
के शब्द को अप्रसिद्ध लै अर्थ॥ यो उप्रसिद्ध ही क
रै जहै तहँ दूषन निरस्तार्थ॥ २६ ॥ आलगु
हीगुन लाल लटै लटकै लखि ति नकी सब वैनी॥
नागरि विलोकन आरसी लै कर आरस सौं रुकनी
सनैनी॥ केसव स्याम हुरै रस सैं परसी उपमा मति

27 ...

को अति पैनी ।। कारन मंडल में तब मंडल मध्य
धसी जु ताहि त्रिवेनी ।। ३३ वन में मैं सिकार
न प मार के तेज कौ ।। ता यैक सो सरन हने कीयरो
अद्भुत कौ ।। ।। अथ अनुचितार्थ ।। कहै अर्थ जहां
अनुचित भासै ।। अनुचितार्थ तहां तक व मकासै ।। २९
जो गति कौ जोगि लहै कठिन समाधि लगाय ।।
मो पवस न पर न जन को सो गति लहि सनाय ।। ३०
३१ कारन के दल को लले को तक करै जतन ।। रन में
निहवल यौ रहै होय काठ को रूप ।। वि ।। ३२ और स
वै हर षी हल त गावत भरी उछाह ।। सखी बहु वि
लखी फिरैं क्यौं देवर के ब्याह ।। ।। ३३ अथ निरर्थक ।।
वरन पूरन का म ।। सो निरर्थक नाम ।। वि ।। ३४ फूली
फाली फूलनी फिरत जु विमल विकास ।। और तो
या हि हितेव लल न तोहि पियपा स ।। ।। अथ अवकरता
ता है अलीक्यौं वैठ तहै रूठ ।। जो है वद उदै भर
विन दे घे वे उठ ।। ३५ ।। र स बोलन चाल विलोनर
सी न स नापन के उनजान लरा ।। सम बान कम

उत लोगन देवतु रैवें परे सब गातन नए ॥ नित हठ
ठ जेठी बडीन पै जाय सयानप नो सिष वे को मरए ॥
कहि कौं करषे लन जै ये महू नव षेलन के दि
न षेलगए ॥ ॥ अथ त्रिविध शील ॥ लज
जु गुप्सा अतुम को व्यंजक जहं पर होय ॥ त
हाँ लज्जा लक्षण कहत है दूषन कौ विसव कोय ॥
अथ लज्जा व्यंजक ॥ आयो मीत विदेस ते तघि सा
जो सिंगार ॥ विरह दसा को दूर करि कीजै जै जैकार
वि ॥ लगत सुअंग सीतल किरन ग्रीस दिन सब
अव गाह ॥ माह ससी भ्रम करज्यों रही चकोरी
चाह ॥ ॥ ग्लानि व्यंजक ॥ दुर्जन सौं जीते सफ
पावतु है सब काम ॥ एक बार जो लेत है मुह ते गुर
को नाम ॥ ॥ मोह सुही वेनी लषै गुहिवे को लोभो
र ॥ लागे नीर चुचान जे नीठ लकाए जार ॥ ६ ॥
अथ मंगल ॥ मरी उरी फिर री विया कहा बरी च
लि वाह ॥ रही कराह कराह अति अव तु वपरा
हन चाह ॥ ॥ तापन वत अवरी रही आलवाल

सनकत जबहै जाके नहिं सुमन लघुपन खों पंथ ॥
रुदन रवि तुव सुनि सरस नैनन सों नावन कों पंथ ॥

१. २

षेकवाल ॥ श्री नमकुल दीपक तुम्यो विरहमि
लत नतकाल ॥ ४४ ॥ अथ अनवाचक ॥ जाहि प्र
ष मैं जो परस्थाने ॥ कहै न तिहि सअनवाचक जानै ॥ ४५
विरहकन रहद विरह नापनै जवतव वीर विनास ॥
व चैन वडी सवी लहहु वील चैस वे मास ॥ ४६ ॥ विरह
सकाह देहने हकी पो आगि उर उहो ॥ जैसै वरसैमे
ह न रैजवा साज्यो जमे ॥ ४७ ॥ मा ॥ जाहि न तेरषी
ह्नैग नँअ्रहू रव जोत ॥ देसै दिन विन लषै असत
व तै मोको होत ॥ ४८ ॥ अथ सौहित्य ॥ सैहिच्छित
हसे रह ॥ रसमे मलो है नेह ॥ ४९ ॥ सुषसो सोय सको
न निसन हू दिन मे आराम ॥ तो सौ मिलव कौ न
अलि आपस कौ वसकाम ॥ ५० ॥ कैचाहत है पर
कै भपत को ध्यान ॥ विषै ध्यागि तप मैं रमे कै रस
रावपपान ॥ ५१ ॥ अथ अमतीत ॥ केवलि साङ्कि
मै विष्यात ॥ अमतीत पर ज्ञान वात ॥ ५२ ॥ ज्ञान न
को प्रतीत फिरै रहो वहु नमत जोय ॥ तपसा दिन
ज्ञान न विनागै तन वतावै बोध ॥ ५३ ॥ भक्ति को

हके मिलनके उपजत है निरवान॥ सुनि हि ज्यौं उ
पजाय है कहो न तुं सकज्ञान॥ विंगौं जो तुम नलि
ध मलि मनो महामुनमैन॥ चाहत पिय अहै तनो
लेवनका नन नैन॥ ५५ ॥ सनो वे भी बनतु बहर
न दसरथ सुत महाराज॥ वालि विदारन मे। धरे मक
रेदा है आज॥ ५६ ॥ तोहि धीर न वेत रहै सोई पूरन का
म॥ है ज्ञाता जो केहि ये ज्ञान आये धाम॥ ५७ ॥ अथ
गाम्य॥ जो कहत वचन गवार॥ व गाम्य है निरधा
र॥ ५८ ॥ तोहि सो पीय वे घर रह्यो मनिमानै कपु कोर
मुरड़ाको करै कहा रविकै रुषी त्यो र॥ ५९ ॥ कहत ल
षी सो था त मिलवन विहार की वात॥ तन मन
लोचन लाल के त्यौं त्यौं फूलत जात॥ ६० ॥ अथ
नेयार्थ॥ रूढ न यो जन नार है विन समै गि परका
स॥ करै जहाँ लक्षार्थ को तहाँ नेयार्थ ह वास॥ ६१॥
स॥ कहिये विहि भाँत इसास जनी अनिताकी
कथा रसना ही रहे॥ अरज्यौं हि पदी मधि घर
रहो तो दुखी जिय कौ कर ताहि सहे॥ धनआ

नैरज्ञाननकाानकरै रतनकेहितकीकितकोऊकहै॥
उतउतरपायलगीमहदीसकहाकरधीरज्नहाय
रहै॥६२॥दो॰॥मानहुविधतनअछछबछबस्वछ्या
छवकाज॥दृगपगपोछनकोकियेभूषनपायन
दाज॥६३॥मुखछविसमपैपगधरैकेजविधयो
नाकीन॥दृगनदासकरपायकीमगलोचनपै
दीन॥६४॥विरुद्धमतिकृतिलछनविधयोस
क्लिष्टतानदोषपरसमंहूविधैहोतहै॥६५॥विरु
द्धमतिकृत॥जोविरुद्धमतलखनकोउपजावै॥
सोविरुद्धमतिकृतलौंकहावे॥६६॥सूद्रानीवलभ
नपतिकरेसदाकल्यान॥सदासमैकेवारमनरेउ
अचलधनज्ञान॥६७॥लीनेहेमसवानकोकी
नेविविधवनाव॥करमैवेसीलेललनगयका
रतचउमाव॥६८॥नरउरसौउपरगरीकजलज
लछिरकाय॥पियपातीविनहीलिखीवांची
विरहवलाय॥६९॥रसक॥वापपरैमनहारकरै
परुकापरपापरीपोमैं भीनै॥सोपागईकहिकेर

व कैहू कोरै कोर कासौं हू न कीनै ॥ साहस कै पुरुसार
थ ऋद्धि न मै पौरुष मान सबै सब लीनो ॥ एकाउ सासे
रि कैउ सासे निगरे हौं सेगय विध्याकारदीने ॥
सेठै ॥ देवतनैन नकौ कोपन लौ अध सन हीमैं
हुसकौ नकौ पानौ ॥ वोलत तौल हकैठ गौ पै
चलतै पग पैतै कहू अहूटानौ ॥ सेरकौ पनडी
लपनैंकुं भयो तो मनहीमैं बिलानौ ॥ मैवसुधा
वृहुपार हिलवै वलियाकी लपाई लपाई हैं मानौ ॥
आयंजवसुह विधेयांस ॥ है ऊवमूह विधेय
सो जहां न सापक विध्येय ॥ कहू समास उद्देश्य पद
की धैन हूं लख लेय ॥ ६३ ॥ प्रथम सिद्ध को क
हत है कवि उद्देश्य बनाय ॥ जो पीछे तो कीजि
ये सो विधेय पठराय ॥ ६४ ॥ प्रथम कहो उद्देश्य को पी
छे कहो विधेय ॥ जहां न ऐसो कीजिये तहां
दूषन लख लेय ॥ ६५ ॥ सो है वैन लपन पे वा न क
उद्देशताय ॥ मेलौ चेद उरह तौ लीराक विपविधा ह
हत क्रान हत.

हैं न पहू जो काम सो हू जीरत सी नार ॥ छठें गान से
मैं नके तिपके नैन गैविचार ॥६९॥ अथ वाक्य मै ॥ चा
हे रहै मृतनै नकोरहै निरंतर राम ॥ कौंन वहै स
नीपे रूपसंहग चहहे ब्यो धाम ॥६८॥ क्रि॥ काय का
व भली करी मे दिन मानम रोर ॥ दूरकरो पहदेही
है फल लाग्यो गुनी छा घोर ॥६९॥ समझें पहलवि
रूपरस लहै नीठ जहां दोष ॥ चौंसे दो षन सो नहीं रस
को होतच पदोष ॥७०॥ अथ क्लिष्ट ॥ नरहिवेग अर्थ
प्रतीत ॥ नरह क्लिष्ट है यह रीत ॥७१॥ दधि सुतके नी
चे वसे सोती सनके वीच ॥ सो मांगत है दधिं कों
के सो स्याम व कसी स ॥७२॥ पावस कठिन सुपीरछा ३ कुल
वला क्यो करसु हि सकै ॥ तेऊ चरनन धीरकंत
वीजसम ज्यौं तरै ॥७३॥ लोभ लगे हरि रूप के करी
मोट जुर जाय ॥ होइ न वेची वीच ही लोयन वडीव विकानई रतनाउना
लाय ॥७४॥ अथ पदसमक्रमुतिकटु ॥ झादझादनी
कोजहां व र्तिनको निझाद ॥ ३ पौन कर्कक कर सलगो

३८ 31

कनि निरदर दुनंद ॥ ७५ ॥ विधाना गरवि विध विला
सतनव सीगवेलनमाह ॥ मद्यैमै गीनवीकनहदौ
दै रठलाहि ॥ ७६ ॥ श्रुति कदु आदरनु सेठजनवाक्स
माहनो है य ॥ चाहत नपर सैपो गनहि रा नोकी वंकौ
प ॥ ७७ ॥ वाका मै अनपुक ॥ केलि कुसम सेदु पध
र कठिन चंनहै छंग ॥ नौ सीतन ही जगनमै लो चनका
मतिछगो ॥ ७८ ॥ सोलन है नट सालसी क्यो हनिक
सत नाह ॥ मनमथने जानो कसी षुभी कुश्री जिंपमा
ह ॥ ७९ ॥ वाका कामै निरतार्थ ॥ वैठि वो नवो पनैन
मैल षिकाकर पजनेह ॥ अजव जो नि मुछजोत
सो हरे सुठ काहि तेलहु ॥ ८० ॥ अनु चितार्थवाक्यमै ॥
अनि करालहै कालते नमवाहन दवजात ॥ जै
सोगजपैतन चडे सुवगनि सैंतो गात ॥ ८१ ॥ समास
मै सोकाने री परव कोदे षवे पटन सकै ठहराय ॥
मिलन को मैवस को मनी जैवत नसो आय ॥
हलन सलै कर तो लदे नोग रनावे नाव ॥ गयो ग्रं

बगुन को सबै गवारै गांव ॥ ६३ ॥ आय केवल काव्य
होय ॥ विरुद्ध मति कृत अविमृष्ट विधेयांस हि जोय ॥ क्लिष्ट
पद है तीनो नरे द वाक्य ही मै हम होय ॥ सब इह दोष कोर
कवित ॥ प्रतिकूल वर्न है हतवृत न्यूनाधिक प
द कथित पद पतित प्रकर्ष है बषाने है ॥ समाप्त
पुनरात्त अर्द्धांतरैकवाचक है अभवन्मतजोग नी
२ हतै जाने है ॥ अनभिहितवाच्य अपदस्थ पद
कौ समास संकीर्न गर्भित प्रसिद्धहत ठाने है ॥
भग्न प्रक्रम अक्रम कौ अमत परार्थ लघो राते
वाक्य दोष चरन जे सषा ने है ॥ ६४ ॥ प्रतिकूल वर्नन
जि हरस को लायक बरन सो न धरै तिह ठौर ॥ है
प्रतिकूल स्रवन तह दोषक है कवि मौर ॥ ६५ ॥ वि
हतु चलत चित आर महीं बिछुरी लाज लजाय ॥
ठरिक ठोर दु रहि भरि ठिठुकि ठाढी जाय ॥ ६६ ॥ अ
लत तरग लु अंगमै आनंद के मन मार ॥ कोटि
कुंभी कुंभ को चढि तरग रन मार ॥ ६७ ॥ ॥

१५ जहाँ जाति धर्म से भंग ।। तहाँ रतन वचन भंग
अथ रतनव्रत ।। जो होत जाति भंग ।। सो रतन ह्वजभंग ।।
कवित्त ॥ हरि हर के सेवक मदन मोहन धनस्याम
जान ।। पौवज वासी द्वारकानाथ र रतन दिन मान ।।
अथ न्यून पद ।। जिहि विन कहे अर्थ न भासै ।। सो
पद न हीन कहो न्यून प्रकासै ।। ५२ ।। काहू के संग र
लीन वली अन्न कछु चेत दई के सवारे ।। नासि
के पके वेदु ली अव सोउ परे रन मां नउ घारे ।। लेक
विरान भई कविगग चहू दिन वैठ गरार कवारे ।। रा
वन के मुख नावन को मुरली भरको विनमीकर हारे ।।
लसे मुरासाति य आवन पो मुकतन मुतवार ।।
नानो पर स कंपोल को रहे स्वेद कन धार ।।
अधिक पद ।। जाहि कहै विन विगरे नाही ।। है स
अधिक पद कविता माही ।। ५४ ।। वारन नो डर उर
जभर भरन रन रई विकार ।। वो गिल सौ तिनके री
मे आवन तें पीउ मामु ।। ५६ ।। त्यप टीपुं हैं अप
रागपट सनी स्वेद मकरंद ।। आवन नारन वौ ठलो

उघटवाघुगति भेद ॥ ९६ ॥ अथ कवित्त बदार केश

व हैं है बार ॥ पुनि रंभ सो उच्चार ॥ ९८ ॥ तेरो मुख सौ

कारण

चंद लखि तांगत मैं दमरीच ॥ मुख तेरो सोहै सखी

घूंघट पट के बीच ॥ ९९ ॥ पतन अकथि [illegible] जोर घना

कारे भही तो न सकै निरवाह ॥ पतन अकथि तेरो अ

तं है कवि सब कहत सराह ॥ [illegible] ॥ मीन नैन तग

लीन हू लै [illegible] न जोर ॥ [illegible] वे जो वचे तो

जो रिपे करोर ॥ १०१ ॥ हरि हरि बंरबर उठत है करि

करि यकी उपाय ॥ वाको सुरबल बैर ज्यों तौ रस जा

पतु जाय ॥ १०२ ॥ अथ समा सु पुनरा तब वाकहि तहं

फरन करै फेर चाहन र हाय ॥ तहं समास पुनरा तेपे

रवि शोयन लाय ॥ १०३ ॥ [illegible] पियके मन मै बसी तो

सी औरन वाल ॥ मानन जो विरहो सु मिलगनकी

सी तुव चाल ॥ १०४ ॥ अथ तरै कवा बव ॥ चंद्र कोपर

औरः ॥ आपा के पद औरः ॥ जो पद जहां सवाहरी तो

पद तहां न होय ॥ औरः [illegible] मैं रबीपे [illegible] तरै कवाबक

जैहैं मोहन मधुपुरी पद हैं तें सुनी कनाह ॥ वा नग गें हनी
नेह संग सो मो को न सुहाय ॥ ९ ॥ अथ ऽ अनन्वत
कबि बोधन तनि करै नही जैसो पर को जोग ॥ अथं
ख अनतन तहं कहत है वडे वडे कवि लोग ॥ १० ॥ लाल
मरी जौ तुलहै तौ वी पहोर निहाल ॥ वेधि हैं जो
त ववरूप सो तेव ननिहै घर वाल ॥ १० ॥ अननिमहि
त बाक्य ॥ कहिवे योग्य अर्थ नही कहे ॥ तहं अन
मिहित वाच्य को लहै ॥ ११ ॥ दोष लेस पियको नही
तनाह वं कोप मान ॥ पोरो नही मानत अलीये
सो है अज्ञान ॥ ११ ॥ अथ अस्थान स्थपद ॥ जहं
११२ पर चहीए तहां न होय ॥ अस्थान स्थ बतावै लोय ॥
पी नरोह मे पर लसै मृदु मुख वेसी नाद ॥ लषैस
ने भ बी हो नहे कामह को उन्माद ॥ ११३ ॥ सघन कुंज
घन पास बदली तल मे दसमीर ॥ मन मे है जात अजो
वै है कैं जैमुना की तीर ॥ ११४ ॥ अथ पतकीर्ति ॥ जौ रवा
ख्य को पदजहां जौर बाक्य मै जाय ॥ तंकी व्त मंहां दोष

ایک روز میں

कोकविगननेदेतवताय ॥११॥ तजोमेह क मलमु:
षमानगहोहिगकेल ॥ विनतीतोसोकरनहेंफांदेस
मैंवहैत ॥१२॥ कपटगभित ॥ अन्यवाकांमैवाकें
अचावै ॥ गर्भितरोषकहतमैज्यांवै ॥१३॥ दुर्जन
दुसहहसभावकीसंगतदुषकोवास ॥ हितेंकरतेसो
कूतहौंकैरोनपरविसवास ॥१४॥ फलकोषित ॥
रुचिपंकजचरनवंदन कांचनरंचनरोचनहकीव
चौ ॥ कहिरांकिहिकारन कोडतलारककापरमा
मिनमौहेनचौ ॥ अनुमाननहो अष्टिपोलवला
लसनाहिनतनकेरोसरची ॥ ननतेरेवियोगल
षौतलनीनिहिमानहमोहि पर्मोगतचौ ॥ ॥
पलिद्गुनत ॥ जोघावदिरावेजहांतहांपलिद्गुन
होय ॥ तहांपलिद्गुनरोषको भावबनैहैसकार ॥१२॥
वजनतनुगोरंहुंदभोदेह दिसतमहसमाज ॥ गम
वत्योंरनकोनपतिसत्रुनकोजयताज ॥१४॥ रंग

मेरी कोउं कार सन इं धिय को रेकार ॥ मेउलागसो वेधन
पप्रधानकीयो भयकार ॥ १२४ ॥ अथ अन्तोपक्रम ॥ जो
और भहीसोन सके निरवाह ॥ भगनो पक्रम करत तहँसै
सो क्रमको चाह ॥ १२२ ॥ कवि ॥ कतलपर पतमो गरे सो
नजुरी निस सैन ॥ जिंह चंपक वरनी कीये गुलअंगार
रेग नैन ॥ १२४ ॥ लग्यो तुमन हूं है सुफल आतपरो मन
वारि ॥ वारि वारि आपनी सीच सहूर ज्ञा वारि ॥ १२५ ॥ अ
थ अक्रम ॥ अक्रम तु दोष जह क्रम न होइ ॥ पद अर्थनि
तर संकविजोय ॥ १२६ ॥ कवि ॥ बेंदी भालत मोल मुष
तीस तिलमिले वार ॥ द्रगअंजै राजै बदी साजै सहज
सिंगार ॥ १२७ ॥ अथ अपवर्त्य ॥ जिस तन रस को हो
त जहं रस स विरोधी और ॥ अमृत पदार्थ सो घत
हें ... कवि गिर मौर ॥ १२८ ॥ ... तो रनी
रेनं वरीरि पठाय ॥ लोहू चंदन तन गई जीवन मके पा
म ॥ १२९ ॥ अथ रस विरोध ॥ करुन विभाव रौद्र अनुभवी
रयो चलि रचाय ॥ रनके मिलन तन लहे सकवठोहल गार ॥

34

॥ हृत स्यो

धरिरा

भयकरुना सो न सत है हास्य करुन उनि जान ॥ हास

२ स्रृंगार सो विगरे नि कै करि मानि ॥ २० ॥ रौद्र हास्य

स्रिंगार भय दन सो न है १० रहाय ॥ सांत भयान क के मिल

त वीर तत्त्व न ऊठ जाय ॥ २२ ॥ रास्य सांत सु वं वीर कु ॥ १

त भयान क नास ॥ वीर हास्य सविरौ द्र भय दन सो सांत

रविनास ॥ २३ ॥ रस स्रृंगार के मिले वीर विभत्सु जाय ॥

लषि हो सभा मकास मैर स नि नयम्वित लाई ॥ २४ ॥

इतिहरि चरण दास कृत काविवल्लभे पर पर्सौ नवा

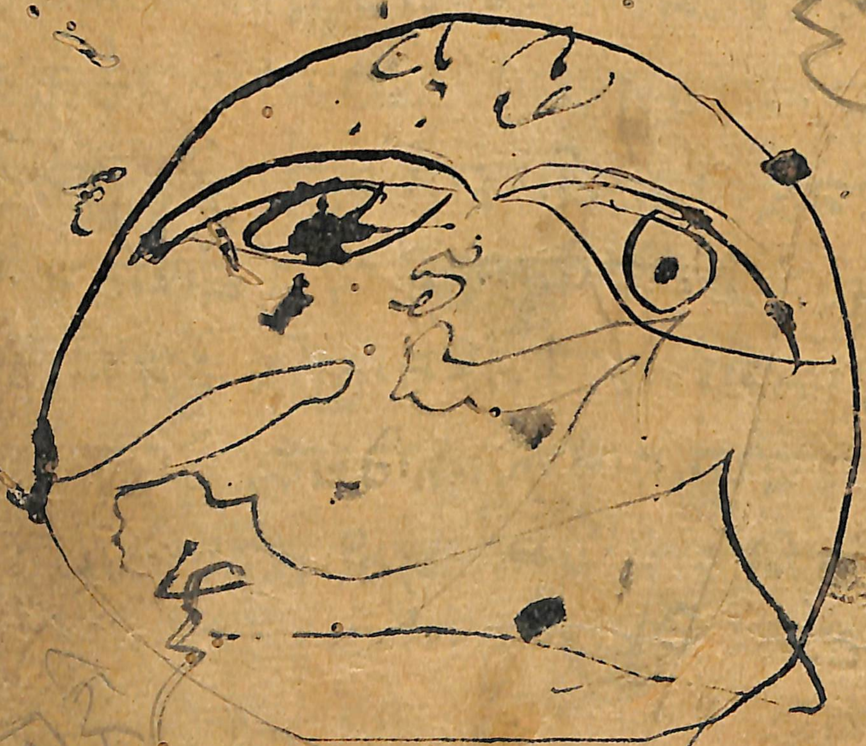
काऽे अ वनिरुपय: ॥ मंगल वी ॥ सपम १ ॥ नैर किसोर

लिषी काकेर वीचंद पटना र्थम ॥ सुभ र ज्ञान ४१९२२

5

[illegible] १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

[illegible]



३५ १

अथ अर्थ दोष० ॥ अर्थ है अपुष्ट कष्ट व्याहत औ पुनरुक्त दुक्रम भीग्राम्य औ संदिग्ध हूं न धरिए फेरनिर्हेतु प्रसिद्ध विरुद्ध विद्याविरुद्ध अनवीकृत नियम अनियम दरिए ॥ विशेष मैं अविशेष मैं विशेष हैं साकांक्ष अपदमुक्त श्लील हूं नकरिए सहचरभिन्न और प्रकाशित विरुद्ध तजो विधि नुवाद मुक्त त्यक्त पुनः स्वीकृत हेरिए ॥ १ ॥ अथ अपुष्टार्थ० ॥ प्रसंग अर्थ हू जहां न हूं रो सो अपुष्टार्थ जानु दोष ॥ लाँबे केश सी रूप अपुष्टार्थ जानु दोष ॥ लोगन जो है कुंन दसन वसन करे अभिसार ॥ तो मन जो है कुन मै कच को नंदकुमार ॥ २ ॥ अथ कष्टार्थ ॥ अर्थ कष्ट कर जान्यो जाय ॥ सो कष्टार्थ दोष कहाय ॥ हरसित भित पथ सो चलै वीच का व्यास तमा न ॥ तो मन हैं तुरत रवतो भावत सकल जहान ॥ ४ ॥ अथ व्याहत० ॥ स तिनिंदा पहलै करै ताही को फिर रूप ॥ वर्ननीय को पोषिए नाह व्याहत कवि भूप ॥ पीय तीय सो सकै कसौल लखैं दिठौना दीन ॥ चंद्रमुखी मुख चंद तै भलो चंद सम कीन ॥ ७

केशव सार के लेखा को है ॥

अथपुनरुक्ति॥ जैसन्नमृपतिकामकोजगमैपै
लौजाय॥ मधुमैघेवहोमननजोकरेनमोहल
षाय॥ ८॥ अथरुकाम॥ जहस्वाधकामभासैना
हि॥ तोदुःकमकविकौलषजाइ॥ ११ दीजैमोको
लाबधन वैधनदुहुकरोउ॥ अस्वदेहुगज
देहुकैतोहोकस्तनिहोर॥ ११ अथग्राम्य॥ लोग
गवारअर्थजोभासै॥ ग्राम्यतहावहिअर्थहरा
बै॥ ११ चि०॥ विषमवषाईतकीत्रषाजिरमतीर
नसोघ॥ अमितअपारअगाधजलमारयौमुं
डपयोध॥ १२ अथसंदिग्ध॥ संदिग्धजहसंदेह॥
भौयहअसोहीतमोजहोसुषदुषदेत॥ चेत
चांदकीचांदनीचांदनीउरतकीराअचेत॥ १३॥
अथहीहेतु॥ कविकहतजहनहेतु॥ तरी
दोषहेनिर्हेतु॥ १४ तोभावैरविपनकीजमुना
जलअभिराम॥ जैहोवजतजकेसवीवी
रा औरैग्राम॥ १५ अथप्रसिद्धविरुद्धऔविद्याविरुद्ध॥ जहांप्रसिद्धविरुद्धहैजोहैशास्त्रविरुद्ध॥

औरो जहां विरुद्ध है सो विरुद्ध अपसद्ध ॥ १६
अथम सिद्ध विरुद्ध ॥ कातिक सरसी गात पावपी
पद्मानंद को मूल ॥ आवत है तिय गहल सोक मैं ले
वर को फूल ॥ १७ ॥ विद्या विरुद्ध ॥ सखी असा
वसरैन मैं पीय सुग कीयो विहार ॥ लसैन अध
अधर मैं दरपन नै कुतिहार ॥ १८ ॥ और विरुद्ध
मरत हर मैं क्रीडा करैं कलमस हास सदगाय ॥
मग को मारत वान हो सुनि मन मो दव दाय ॥
आन वी मात ॰ एक अर्थ सो वरनि सरवैन कारथ
नवीन ॥ आन की कतनतह दोष है सो कहत है पर
वीन ॥ २० ॥ सदान फूलै तोर है सदान कारे केस
सदान सेग लहै तिन्हों सदान वारी वेस ॥ २१
अथ नियम स्थल मैं अनियम ॥ जहां नियम की
चाह ॥ करैं न नियम निवाह ॥ २२ ॥ कौन वस्तु नगन
गन सकैं ए होनैन विसाल ॥ तम हूं से [illegible] य
तन मरार हरतडर माल ॥ २३ ॥ अथ अनियम की
और नियम ॥ जहां है और अनियम की नियम करै
तहं दोष ॥ जहां अविशेष विशेष जो वरनैं है स [illegible] ॥

सखि ही तेरो वदन वै मल है जुग पान ॥ जाने तेरो
रूप है पिय मन वच्यो हम ध्यान ॥२४॥ अथ विशेष
स्थल मैं अविशेष ॥ पहिरै नीलम नि चोर तिय
र चिनी लम को हार ॥ जात रात मैं मैं न वस कर
जीय पैं अभिसार ॥२५॥ अविशेष स्थल मैं वि
शेष ॥ अवशेष स्थल मै करै कोऊ तक वा विशे
ष ॥ चाहत है जह अर्थ की सो को घर त जहु लेष ॥
कैं ल बिपीय व है होत सघिर हतन नै कुसे भार ॥
का है को तू धरत है अव तन भूषन भार ॥२६॥
अथ सो को घ ॥ को इ अर्थ चाहत है सो सौ को ह ॥
है ॥ सो भल गे हर रूप के करी सोट तुरजाय ॥
हो इन वेच वीच ही लोरन वडी वलाय ॥२७॥
अथ अपडू ति ॥ नहीं रिकानो तजन को तहां
त हो तन जे जो कोय ॥ वाक्यार्थ को हो तन त इमप
डू ति यह जोय ॥३०॥ खुली हरद की चोरनी
ताजन तै चिपट समीर ॥ विरह मिले न रलाल तु
री है चरीक की भीर ॥३१॥ अथ अश्लील ॥ अवरा
भरयो घि दूष चरन तमां रन को न सं काय ॥ जै हैं हेतु इ
न पार न है तुरत न हि ३ ० जा य ॥३२॥ अथ सहचारीन

37

मलेबुरेकोसंग॥ सहबरभित्रसोभेग॥ पानविनक्षा
ननकमानविनवानज्यौं॥ विनतानतिदिवर
विनधूपहै॥ नरविनानरजैसैं करविनाधरजैसैं
परविनापंछीजैसैं नारीविनरूपहै॥ कोसीवि
नखगोहीविनवरपारजैसैं रोजीविनरतनाल
काजीमुखचपहै॥ विनाधनदानीविनसूरतक्र
पानीजैसैंपानीविनकूपलावधानी विनभपहै
अथप्रकासितविरुद्ध॥ सप्रकासितजुविरुद्धहैभा
सेअर्थविरुद्ध॥ भासतक्रमसोनहिअरथविध
अनुप्रासनहसध॥ जोगकूरतासोन्दपतभाजेभ
पतमाज॥ करनतताहतभोगवोवलारातकोर
ज॥२५॥ अथविधिअनुप्रास॥ भासतनहिक्रम
सोअर्थविध्यनुप्रासजान॥ लोचनसोचेदु
लावसोसेरितीपहुबरान॥२६॥ चतुदिसहम
केसमनीवोलतमोरअछेद॥ जिपवैठीमकु
लातपियकरनविलारसनेह॥२७॥ अथअनु
वारअनुप्रास॥ जहांविशेषनहोतहै भासतअर्थ
विरुद्ध॥ तहँअनुवादअनुप्रासकोभावबंध विवु
विरुद्ध॥२८॥ विषसोरचवरजके तजिवाडव
सेगवास॥ मजिमारेअविलानकोजाकेपीपनहीं
वाहग॥२९॥ अथत्यक्तपुनःस्वीकृत॥०॥

मसेवता

बड़ाराज
मर्वैनाह
देद

सातहई
सिनना
क्रमनहीं

तेजगा
भनर
नतनको

हाउदियौ
फेर ...
क्यो ॥
38

वरन तजै वरनै पुनजहीं ॥ त्यौं कछु नखीकनहैनहीं ॥
वरपति हेरत नजगमैं लैहु कलंक कत नारि ॥ हयसोंधी
नोसों कहौ मदरा ताहि तुनिवारि ॥ ४० ॥ इति अर्थदोष:
अथ रसदोष ॥ नावधरैरसको व्यभिचार कोधा
ईहु कोतहां दोष कहावै ॥ जो अनुभाव विभावहु
जाहिर होत जहां भ्रमसो नहिं भावै ॥ राधे कहूं
प्रतिकूल विभावहि आदि जहां कविकोलहावै ॥
औरै दोष जु ग्रंथन के इतो ग्रंथ के देषत हीवन
आवै ॥ १ ॥ रसकाम० विछुर मिलै पीय को तिय
भयो जु रस सम भोगति ॥ कुंजन मांह संगार भो
अधिक भीत उफनाल ॥ २ ॥ संचारीना० ॥ सुष कम
न ति सुको पिया भई लीन संजोग ॥ प्रीति मई रस
रीतु सो वाढ्यौ अधिकाई नेग ॥ ३ ॥ कष्टसो अनुभाव
रुचिर हास जु तपीय निरष फूल चलावति हार ॥
गिरचौ चित नव नवत दृग कांभ वधू अनुहार ॥ ४
कष्टसो विभाव० ॥ उनती गनवै तरहे घातहु
अघात समान ॥ एसषि एति ग्रीष्म औम लौ पूरे
रहौ तनैं प्रान ॥ ५ ॥ प्रतिकूल विभाव० ॥ पिय तेरो
विनती करै आपो मेहु निहार ॥ थोरे दिनकौ जी
व नो मान करै मति नारि ॥ ६ ॥ प्रबंध को दोष औ
कोउ प्रकथन ॥ न हों अकोउ न कथन कहावै ॥
कहिवे ठौर कह्यौ नहीं जावै ॥

38

अनुचित वरनन होत यह तहं रसभंग गनि हो। रचि विचार कै कीजिए भाषत है व सरवज्ञ ॥ ८ ॥ हेर हिंडोरे नगन ते परी परी सो दूर ॥ धरी धाय विच री कसि बसी भरी रहल ॥ ९ ॥ अथ पुनरुक्ति दोष लक्षण ॥ सावन तीज सुहावनी लै वारनि सो फु को ३ ॥ लवन तीज सुहावनी लै वारनि सो फु लवारन सो धरा ॥ सारी दिपै जर तारी किनारी लवारन सो धरा ॥ नेह नहीं उन सो नारन दुकूल लै तीर सरोवर ॥ नेह न हीं उस सो चकि पो चित मै डर ही निज नारि विलोक तसो चकि पो चित मै डर धो ति हिंडोरे की ओर चली मै दिपो न किवार ३ धारत ज्यो घर ॥ १० ॥ अथ अलंकार दोष लक्षण ॥ जाति सु और प्रमानते न्यून अधिक ता दोष ॥ उपमा मै हरि कवि कहै होत न रस को पोष ॥ जाति मै उपमा दोष ॥ राजचम् चल रानी लै कर मैं करवाल ॥ सत्रुन को ते ग्राम मै मारत ज्यो ऊँड लल ॥ ११ ॥ प्रमानतै न्यूनता ॥ रविपर विजना सो लसै विद्युज्यो चूर कपूर ॥ धरा वै सिंदूर लै सो ले सै कहत नवे कवि कूर ॥ १२ ॥ अथ उपमा मै जाति अधिकता दोष ॥ यह देवक राव लवान रै ... रिगजा न होजानि ॥ वादि कज्यादि के ... के रतन वरनत ॥ १४

उपमा मै प्रमानतै अधिकता दोष

जहां कहूं ते भव है। तहै समता को सफल भाव॥ भिन्न
लिंग अरु वचन तें है दोष कहै कविराव॥ असंभ
व तें उपमा है॥ बरनत नीरज कौं धारसी तें सीख
व को भास॥ घर से लोचन लसत है विलसित
न है लहुलास॥ भिन्नलिंगते॥ कलप लता सो
पौ पता है सर नर सी नार॥ इंदीवर सौं नैन है
जा को लखो निहार॥ ७७॥ ३ ऐसा मैं वाचक तें दोष
मति मान स्मर सार जिस जिय तेग कथन विचार॥
सावन उक चावनन तुहि लागत चलि करि धा
२॥ इति दोष निर्णयः॥ अथ दोष गुन निरूपन॥
कहूं दोष है उचित कर कहूं दोष गुन होय॥ कहूं
दोष न गुन नहीं ऐसे है कैसे जोय॥ १॥ अथ
श्रुति कटु गुन॥ क्रोध युक्त वक्ता जहां सो द्रादि
क रस जहां॥ श्रुति कटु तहां गुन होत है दोष क
है न गिनाह॥ २॥ युध युद्ध की चाह धरि कार
मार लहु चार॥ काटे हम अरि के उर कौ कार टे
हु मुंड उदार॥ ३॥ श्लेष मैं निहतार्थ गुन॥ ०॥ द्र
प युक्त को गुन निनि हतार्थ गुन श्लेष आदि मैं जा
न॥ सरिता सबै जहां संतरन श्लील दोष नहि जान॥

और ॐ

अप्रयुक्त निहतार्थ॥ तजनतोंपथ हरि राधकौ तन

दुत करअनुराग॥ जिहि वृजकेलनि कुञ्जमग

पगपग होत प्रयाग॥ स्त्रीपुरुष बसै अश्लीलगुन॥

तीयतोसो नहि फुरहै के कठिन लपटी आर

कोरनकों टगाहै तमैं यह जानत है नार॥ सांत

रसमै ग्लानि गुन॥ लोचन की चरनलमदन

सोहगांठ कुच जान॥ तऊ पग न रूरव तनहैं

तज गोविंद गुन ठान॥ नित्य दोष है॥ अनु

चितार्थ अलम र्थपुन बहुर निरर्थक हेर॥

और अवाचक कहत है नित्य दोष कवि टेर॥

अथ हेतु दोष॥ संदिग्ध स्वव्याजस्तुति माहि

दोष नही हमको सब चाही॥ जहां कनक रंच

नामिले अतिविभ्रम लरलाय॥ लाबनकोम

बनलहै तव मो घर उब आय॥१०॥ अथ यम

कतीतगुन॥ हम उिले तजिह अपि को अप

वीनगुरु ख्यात॥ नाहिन जो हमसो कहीलनी

ऽलाकी बात॥११॥ अथ अप्रयुक्तगुन॥ कहैतुं वच

नगवार को अप्रयुक्त गुन निहतांस॥ सागपा

रसोही जो मेरे हिन छिहकांम॥१२॥ राम

तो पै पढ़ तो ते वहा प्रसिद्ध है २२ प्रातमें मही

अथ स्तंभ परगुन ॥ हरष आदिक संजोगहैं तहाँ
स्तंभन गुन जान ॥ गहगर तजि मोग्हि आलि जात
नि लक्षनहि प्रान ॥२२॥ ठि हारी ॥ देषो जागन
मैं इगुलो वैसीरा हैं कारलगी कपाट ॥ कितहूँ आवनजा
के सों वनो भाज जानो किहि वाट ॥ कहि अधिक पद गुन
तस्यता ने हरिता हन कठिन है राधिविरस अब दोज ॥
नह नह नहिं नहिं जानत है रसक जानत है परहरानाप२३
तेनारकरे अथ प्रलयकी गुन ॥ रहयानहोरसै गुन ॥ ६ ॥
विनतकथने रविषादमैं जहलाहानुभास ॥ १३
पि...य४ कोध५ दीनता ६ त्याग७ साहिसप
कास ॥२४॥ अथ धीर जां हि क्रापितहै वाच्य रमसाद
गुनसाह४ ॥ रस... ११ मैं लषो दोष
तनकहै नाह ॥२५॥ अथ विगिजं कहतौ हिकर
नो ॥ उदेहमैं मैंप्रस्नने अथ वत पारुन सयान
गि...पर प्रजिवाँर परवानु जैं घपर
जान ॥२७॥ विषाद मैं विहारी ॥ चलन चल
नु लैलै चले हं अस तब तेग लगाय ॥ ...
वाँसर सिसुर निस पी पहोवासर साय ॥
लाहानुप्रासमैं ॥ ... ॥ पीयनि कंजो

रैन हीं धाम चांदनी आहि ॥ पीय रहै घर जो कै धा
म चांदनी ताहि ॥ अथ विस्मय ॥ लाल अलौ ठिक
लर कर लषि लषि सखी गई सिहात ॥ आन का
ल मैं देषी रउ२३क सोही भांत ॥ अथ क्रोध है ॥
मारे फिर मारे जु सठ वकसहि अनुतान ॥ नैरि
न री संभु को हार रचो पर मान ॥ अथ दीनता ॥ र
हूर ते देषन द्वै है री न पठाई हु ती लिष हु लिषी वा मिली
ठी ॥ देष मिल्यो मन नौ हू मिल बेल वे को किली
मति मीठी ॥ ऐसे मैं औरू व लाय कै सेह का कू
कुमार दै उठी ॥ द्वै है न वार मुरार के तासे औ
र है लाल है मैं तमै दई ॥ ३४ ॥ अथ दयामै ॥
जाउ घरै नृतन व पथिक पै रकै है घर जाउ ॥ प्रिया
जीवत न पाय हौ पी धो क रहो काहु ॥ ३५ ॥ अथ
नर से अमत मैं रोष तनक मन है र ५ को किल
है को किल जवै रितु मैं ठार है टेर ॥ ३७ ॥ आरोष
आयो लगे गुन जहां न लगे रोष ही हेर ॥ तु
रो भलो रोउ नहीं रोष कहा रोष [illegible] टेर ॥ ३८ ॥ र सफा
र को भर सं सचारी थाप जहां विना नाम नवुझाय ॥

कारन कारज होत जहं सो वारी सकहाय ॥ ॥
देह धरे रस है सवी पतीय है लाज रुप ॥ मारत
वे तन हिंगार पीय तिम तिय रति रुप ॥ ॥ अथ
हे वारी को कारन कारज भाव मैं दोष नहीं ॥ ॥ तीय
कौ उत्सुकता औसरी चैच लता उपजाय ॥ ता होला
जमरी [illegible] हरहर विलोकत जीय ॥ ॥ विरस को
[illegible] मे दोष नहीं ॥ जो कर सो कुच को गहत जावक
देत दताय ॥ मो [illegible] जनं को रचे सो रनम रचौल
[illegible] ॥ ४ आकवन की वाधी वात मे विरुद्ध दोष न
[illegible] स्याम कहे पाय ॥ नमर [illegible] सूत
जसे हास कीरत [illegible] जहां जलत हां जल जो तहे
को धर्मानुराग है के रंग को करत लाल कुरवा
मे मान सके हम उ उजात है ॥ चंडि का पि वैच
को रगर जे हीना चे मोर आबे जहां वारि सो मरा
ल [illegible] हात है ॥ चंपा पैन मौर नव संत मालती
को मोर फूलत असो कनारि लहे वापधात है
सवैया ॥ मोर के आनन के मद के के पर फूलत है व
कुले यह जानु ॥ मैन के वानन सो कहै गये को
कतहु सो कवित मे पियानु ॥ फूल के काम
के वान जो चाप जो मौरन को पनच यह मानहु ॥
ल ठान हो ॥

41

अथ हमारे बनाए श्लेष कवित ०॥ कवि वरनन॥

सो हन जो बनते कै उपजै हरबा नज हा गुन खान

निहारी॥ लौयन लौने लगे अरु नेह सो हरि सं

रन रीरुच कारी॥ ना हिर छै कहि तस मन हौर

हा करत है धन के करचारी॥ जे कुल दीपक है

कवि ते कुलदीपक की यह रीत सत्धारी॥१॥

दान सुदरान [redacted] हठ करत नितहारो हरि चाह

त रसैन मठ वाला नाम रत है॥ दाकत विम

लफेर मुक्ताफल हार वहै भावत भवन [redacted]

पाल अाछाहि धरत है॥ आसन अने कन है

गहरि त्वचा सो होहै कामनी के वस मोद रत

अने भरत है॥ कैधो भोग पाये कोई भोगी है ज

गतै माहि कैधो जोग साधु कोई जोगी विचर

ही है॥ २॥ सवैया॥ छ्याल करो· मति· लाल· हो·

जाज· अली· अरी· रातिहु औ सैन वहै है॥ हौत

नरो· अति· हाल· हो· लाज· वितीघरी देषवडो

हषद्धै है॥ मोद भरो· रति· जाल· हो· राज ते

होमलो· और दिए दुषवेहै॥ प्रेमपरो नित चाल

सौ· धाजजाहाचलो केतक चोज वटै है॥ ३॥

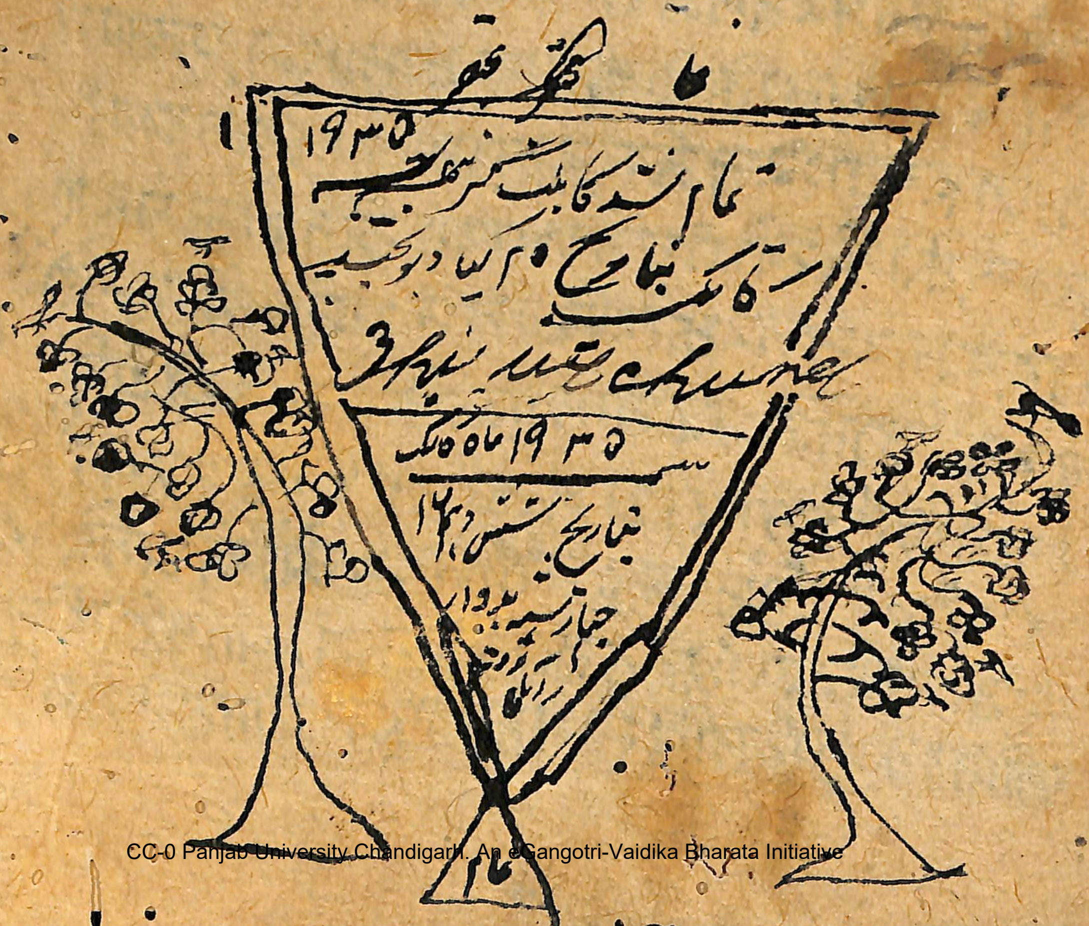
दोहा ०॥ सालाको रसको लछै ज्यालारहतस
मी॥ वालायेरसको चछै. पालाकररतरुचीर १४
कावजरांछे विलासतजियनदीमैंद्विजीय
छुटेक.वका॥ बीगतसासजिठानी घरैसव
पायतसोच गमै सवका॥ वहसरविनके
तन.बोलतचाहैगाठाहठको अवका॥का
वजरपैजिगैबीस्रवगावव गावसठीरि
तपैजवका॥ ५॥ सभाप्रकास की मरल सूची०
नायकाकी जातजानो पद्मनीस आदचार॥
स्वीयाआद तीनमध्याआदतीनगनिए॥
ज्ञातअज्ञातनवौढाविश्रब्धनवोढा
मध्याभेदमध्याजो प्रगल्भाहू कोमा.
धीराआदतीन और ज्येष्टारुकनिष्टामे
अथपरकीया सोपरो परोढाकन्या
उपारुविदग्धाइन लच्छिताररुकुलट
मुदितानुसयाना परकीयामे ठैरिए॥
कहीसामान्या अन्यसंभोगदुषिताह्.मान
वक्रउक्तिगर्विताकेमानवतीनरीहै॥अ
नभेदरहसनिहमेतआठो नारकहीउ.म
रिभेदसव लछीहे उचारीहै॥ नायकको

आरु सभा अनुराग कहै रर्सन भाव हाव हेला
रु कोध ही है ॥ वरनै विभाव अनुभाव थाई सा
त्विक है, सैचारी नैं लीसकी रीत भलै करी है ॥ ६॥
सा धा भाव तैयं औ सबल नाह, लंत भाषी र
स दे व मित्र धातु सम हउचारे है ॥ अंग अंगी
भावनि सा थान प्रेम लछन है, रस भेसे दे ह
भाव थानि निरधारे है ॥ रसाभास भावाभा
स रस दोष दो भट्टै अध्या[redacted] हार उपल
थान जाति व्यक्ति धारे है ॥ औरि है, लक्षनव
धन औरति औ समास पुनि अभिधा औ जो
ग कारि लव हि सु धारे है ॥ ३॥ रुच्या गुनत्रि
पा षाव जाति व्याप्ति लछना है रुढा अर
प्रयोजन के भेद न दिखारा है ॥ उपादान ल:
छना है सारोपा साध्यवसाना सहि को गौनी
जहत अजहत स्वा पीठारा है ॥ गूढ औ अगू
ढ व्यंग्य पाल धर्म धर्मीगत व्यंजना है लाष्टी
हनिके भेद द्वै सहारा है ॥ सब्द सो जु होत है तेजो
गजार भेद पाय लछना है मलमली
भो लसो लतारा है ॥ ४॥ राम राम:

आर्थी रची है व काव्यादिकी विशिष्टता ते वृत्ति
तात्पर्ज और आचारज पाहू को मानी है ॥ उत्तम
काव्य है लक्षना मूल ध्वनि सो तौ अविवक्षित
विवक्षान वाच्य कहि न बखानी है ॥ अत्यंत तिर
स्कृत अर्थांतर संक्रमित है अभिधा मूल जा
को कहै मै पिछानी है ॥ विवक्षितान्य पर वाच्य
ते लक्ष्य असंलक्ष्य है लक्ष्यक्रम भाव ध्वनि मैं तो
आनी है ॥ ५ ॥ संलक्ष्य भेद शब्द अर्थ उभय लेखि के
ति करि स्वतः संभावी हो प्रौढोक्ति सो दरसायौ
है ॥ दस हजार चार सौ पचावन १०४५५ ध्वनि
भेद मध्यम के इ व्यंग आदि आठ गायो है ॥ श
ब्द चित्र वाच्य चित्र अधम के भेद कहे गुनरी
त और रीति सब भेद मैं बतायो है ॥ एती बात है
ठ कै जे राधा जनक वीर है ता री को दुजराज कै
सुन मैं धरायो है ॥ ६ ॥ सवैया ॥ वासजह सवतीर
थ कौ औ भगीरथ कौ सरता है वही है ॥ सेवत जो हर
मा औ उमा जिनकी समता कौन दूजी वही है ॥ सो
सब अंग मनोहर वा हरि पावन पावन भक्त रही है ॥
है लहरै लखि जानत ता रहे ठकावंत तार न को सलसो है

गंगाजी ॥०॥ जैसैं नीर बिंदु सार बिंदु परमाजत है
हे समपद पंकज मैं जैसे गंगा धारहै ॥ यावपुंज
नासे हो विनासे है नाषि लेद समति मकासे
है मुनिर को सिंगार है ॥ जंट हर लोक है को है
क बीन लोक रचे धरै कर्म जाको किरा नामको
३ चार है ॥ जम को मुसही करै कागद को रहीन
जो लेख पर फैरे परवेष केरतार है ॥ २ ॥ कवि
स्थिति ॥ नवापार समदेस मैं राजत वरपागाम ॥
प्रीति विस्व भर वैसमै ठास्दे वनवधाम ॥ १ ॥ ताको
सन प्रीराधन कियो चैन पुरवास ॥ परग लगा
जान हा चारि वन सडुलास ॥ २ ॥ सालग्रामी
सरजु की मिली गंग सो धार ॥ अंतराल मैं देस
लहै सारन सरकार ॥ ३ ॥ ततैं राम धन सार तो
हर कवि कियम रुवास ॥ कवि वन्नम ग्रंथ धरि
रच्यो कविता रो समकास ॥ ४ ॥ उतहर न
प्राचीन है कीने कहि नवीन ॥ २ चौ ग्रंथ को
सु नाम करलाविहै लकवि मवीन ॥ ५ ॥ फ तो महित
प्रीतर को दुनि सांडि लम हान ॥ हम हैं तिन के गोतमे.

संवत नंद ९ इंगताल नर। दिग्गज ८ इंदु १ सो गन
नाजु डिचाई॥ रूहसो जे ठलही दसमी तिथ मं
तहि सावरो पछानि ठाई॥ तीर तडाग के औरु
धवार विक्रमीति को गति लाय लगाई॥ श्री
तलही उपकंठत हो रचना यह सरी भई सुखदाई
इति श्री हरचंद्र सनदास कृते कवित्त समाप्तं
लिखी नंदकिशोर १९२५ साल भादों २७ में
श्री ममपाठ सज्जनः॥ रेवीचंद पठनार्थम्



44

45

अत घन है दी [illegible] की कौन मै केन सजप

वड हैं की रसागर याकारक

हरि हेन कोकरत है

46

46

विहारी॥ भूपतितेरे दान सो जहैं मेरु बलाढ॥२६॥ रतम[illegible]

[illegible] बकती

47

होहीकठनअपार॥दुरजनकेचितदेषीअंगरातोसेलायहजौरं ॥२२॥
वतधीप्रतीप॥उपमेकोउपमानजैवसमतालायकनाहिप्र
उतमहिगमीनतेकहेकोनछियजाहि॥२३॥पंचमप्रतीप॥२२
विअधिहोयउपमानजववरननीलअसार॥हिगअनागेर
गकघरनयहपंचप्रतीपप्रकार॥२४॥रूपक॥हैरूप
होइभातकोमिलतहूअभेद॥अधिकन्यूनसमदुहनके
तीनतीनराभेद॥२५॥उपमानरउपमेयमेभेदपरेनलषा
या॥तासोरूपककहतहैसकलसुकविसमुदाय॥अधिक
तद्रूपक॥मुषससिवाससितेअधिकउदतजोअतिदिनरात॥
न्यूनतद्रूपक॥सागरतेउपजीनमहकेमलाअपयशहानें ॥२६॥
समतद्रूपक॥नैनकमलएसैनहैंऔरकमलएसैनहैं
औरकमलकहकाम॥२८॥अभयअभेद॥गयअकारनीके
लोकनकलतासेकाम॥२९॥न्यूनअभेद॥अभयाहोउ
विरमअछीनहसमुद्रउतपन॥समअभेद॥तुवमुख.

पकज विमलमन सुरसम भुका समसन ॥ केकारी ॥ सावे बरं
डारे ठाडी गाठ गहि नैन करो हीमग ॥ चलक चो धामे स्पठ
मनैन वहि मकर ॥ हा हाि फकहीडार ॥ ३० ॥ मप्रहीनोक ॥
रूविमन के मरातजनतकरतम्रांव प्रवरोर ॥ मानाहिं
भूपाल केतेजनर नराम्रोर ॥ ३१ ॥ समान ॥ करैकि
मउपमान ष्ठ नीयमन प्र ॥ लोचन के जविसा
लते देघतरसौं वाम ॥ वि ॥ मैन दहोत दिषा
दषी मर्मीरकमंमक ॥ स्रोतरीछबिछव
है वुघ को उाक ॥ ३२ ॥ मप उलय ॥ सोउलेक्ष्मा
रक कोवोर समजरवाहरीत ॥ मर्यन सरतुरती
ममं रम मरकोकाल मतीग ॥ ३४ ॥ क बुहवि धकाने
रककोबहुगुरग मउलम ॥ तूरनमरजनतेजरवं
सरगुरव चन विप्रोब ॥ ३५ ॥ ०० ॥ मयसमरश्रात
मंदेहगंमले कार ॥ समकूर आतमेदहराल छनगम

सकास॥सुधासावतसुधाजातकामुख (बदनकी देख्यास) चंदसकासुधानिकी

(प) अंश्रात॥बरनसुधानिधजानकोनुवसंग॥फिरतचकोर॥

अपसंदेह॥बदनकिधोयहसीतकरकिधाकमलमेंरंगार

(बरी) अथसमरन॥वि०॥छिनछिनमेंघटतमहीयमेंसीरसेजात

कहजुचलिमनहीचलेमोठनहीमेवानाहि॥२॥अमरसंगी

रहीदिहडीठिनाघरीभरीमधुनीकीर॥फेरतकरउलटी

रईनेईविलोमनहार॥२१॥संदेह॥मतवि०बरनपरे

नहसमरनरंगमलमधरदलसाज॥कैधोफूलीदुम

दीकैधोफूलीसाज॥४०॥अथअहूापहनत॥धुमि

हुलसारोपतसुधायहनजान॥उरपैनाहिउरोजराक

नकलताफलमान॥वि०॥केरगाढ़िगाऊपरीउप

देसोहारहियसैन॥मान्योमेरमतगमनमारगले

मैन॥४२॥अथहेतपहनत॥बसतहरावेजुगतसोदेत

पहनततामोंतोंघनचरनरेनरविवडवानलकीजोय

अथ मधुमस्ता पहिनत ॥ घरपहत जु गनमार कै मोरखि कुमरी ताप
होय सुधा घर है नहीं वर न सुधा घर मोप ॥ ४६ ॥ हाला
हल बिसहे नहीं विषहे रस बिहार ॥ विष अमिय शिव गंजा
जै मुह मसे नमा मुरार ॥ ४७ ॥ अथ अंतापहनत ॥ अंता
पहनत वचन सो भ्रम जब पद को जाइ ॥ ताप कंप है जुर
नहीं नास खी मदन सताइ ॥ ४८ ॥ कोसर कसर कुसुम के
रहे अंगन लपटाय ॥ लगे जान न चसन वली कनवा
लन भाय ॥ ४९ ॥ छेकापहनत ॥ छेकापनति जुग
नकर मसो बात दुराय ॥ कर नख घर दि पन नहीं सखी
सात रनु वाय ॥ बिहार ॥ रहि रकी कै नृ सव लज्जा प
रात सिध गरदु हरत ताप सव च्यव च्यो सको उर
लग गयार बिसार ॥ ५० ॥ कैतवापहनत ॥ कैतव
वहनत एक सो मस कार वरनन मान ॥ निछ्छन
ती मकरा तमस रनार वत मन न मरवा न ॥ ५१ ॥

उडेउली कसुगगन मैं मनोते जनन सपाय॥ याद्रुषतोअलिकेतमें
मतलोकमल्लविलसाय॥ ५१॥ तेऊषरनमें लसिवषारच्यो वेचें
विचार॥ रेषकाठमवेकअमसुदियो छेकनिरधार॥ ५२॥
अमपउतमघमसर पकार॥ उत प्रेषम संभावनवसतुसेत
फललेष॥ वसतउविधउकतास पदअनुकतासपदपेष ५३
हेतसुफलसधासपदअसिधासपदमान॥ वाचकजोंना
कहतहैगम्योत प्रघाजान॥ ५४॥ चकवनकीविरहागको
धूममनोतमदेष॥ नैनमनोअरविंदहैसरससुवासविशेष॥ ५५
घघविग॥ मकतक्रितबोपालकेकोउलतोभतिकान॥ घसास
सान्हियघरमनो उयौउीलसतंनिसान॥ रगतहेमनोअंगकोम ५६.२
घकारनिसपाय॥ वचेतमानोअंजनलपरीसमनतमाय ५७
सअम
नमनरीत॥ नहिहैतफलअमवेक्रियसो वाबकजोग॥
ताक्रिमनकतविषयकेहैवस्तुदेषोलोग॥ ५८॥
रस्योमनदेषौंकीघोअगअगसबदिसायापैठतिसी

५ ननमैलकचवेठीवतेलजाइ॥५९॥अचितनहीवतवनचेतम
छिपोटमलमाय॥फिरउजकनकेमगनैनद्रगननायाहे ६०
जहिमहैतकोहेतकरतैआवनतहिठोर॥सिंच्याप्रासिर्थ
मपटहैततमघोमोर॥६१॥मनोचलीमाजनकठनना
अरिध
तेरातेपाय॥वंदकंद्रकोवरमननुवमुथसमताचाहि॥६२
जहांमफलकीफलकरमानै॥फलउतमघोदुवपविसे॥ ६२
प्रसिध्या
केरिकुचघखोकोमनोवाधीकंचनदोम॥परतमनाको
६३
मनोजलसेवतहैंवाम॥उप्योतमयका॥वि॥कारउठाय
बयरकरनउमरनघटगुजरोट॥लखमुटेलूटी
६५
ललनलिषललनीकीलूट॥वि॥लाभिमनलगी
सीजोविच्चकरीकटछीन॥किधोमनोवाही
६६
कमरकाचनितकमतपीन॥रजनीमैनहिरवि
रहैदिवसनसाकरहीन॥याते मानोमा
६७
तापनहरघुवरप्रगटकीन॥अतिप्याजाम्रो

पदहै तु ॥ जग गहर गस्व निज स्व मंगल कपमधिधिमान ॥ या
नेमानोरेन मै देषत नहीं जहांन ॥ ६८ ॥ बिलसन चलन छन
चुपरली बोली मापन रैठ ॥ रौष्या गहगाढा गरोमनी लैन
६९ लिडी ठ ॥ मुदत होत कुमदनी जल जननांत मुसकाचाह ॥
यांते यानो चंद मुषरा षत बदन तुरा हू ॥ ७० ॥ त्रिधाम फल ॥
चाहत लसै न जजन न क कोंन्हा उ दूरसपार ॥ बिरहन तीयके
द्रिगन सो का हत रूपसु प्यार ॥ ७१ ॥ मान हु बिधतन मध्य
बस हरा षवेकाज ॥ द्रिग पग पोषन को कीस भूषन यांडैदां ७२
नीचे भीचे नित बंनित उपजैच कुवलैन ॥ हसमु षतुककर कोम
७३ नो छीन करन कै हैं तु ॥ त्रिधाम पद फल ॥ आवत उतरके
पीयरू का जल सजाय ॥ बिध पायेहैं स मुमन फेरन म
न ठहराय ॥ ७४ ॥ फूलन की माला स्वेधिन धिन कलंक
गारैनारी कि बोवस करन को चाहत तन दक मारा ॥ ७५
अचहराइ कुच बस कीरा मर नौ सर पाल ॥ लरकै है मानो के

जीतनकोपानाल ॥७८॥ अथ परस्परकांत सयोकती ॥ अतिर
कतरूपकजहां होय वरनकोग्यान ॥ कनकलतापरचंद्रमा
धरैधनुसर हैंवान ॥७८॥ वि-उतनतेंरतनतेउतहित नकेरूरगन
नकेनपरत चकरीपरै फरकाव फिरजात ॥७९॥ सापद्र
होरछपायोकपरवहैंसापनवठहराय ॥ हुध्या अरयो
परवदनतुकचंदकीहैंकौराय ॥८०॥ ऋतुर कुमरधिरकोकर
नसुधामधवाम ॥ सोमुपमजलामधपरपैनतनकोअग्र
मकाम ॥८१॥ भेदकांतसयोकति ॥ अतिसयोकतभेदकवे
हैमोरैवरनतजात ॥ मोरैहराकौदेषके मोरजाकीवांर
मतराग ॥ मोरैकेघुवितवनचलत मोरस्यद्रमुलकामैं
मोरैकछूसुषदेनहैं सकैनवैनवषान ॥८२॥ संवंधातस
संवधातसयोकतिसोदेतजंपागजोहुयोग ॥ पा
परकेमदरकांदेउ चेम्रि मलोलोग ॥८४॥ रूपनिने
नसजेहमेंसविलाय ॥ हीहैं दन्न मनमेरसो चकोरकै

बिहारी ॥ पियप्रानन की पाहरू करत जतन अति आप ॥ याकी
दुसह दसा पर्‍यो सौतिनहूं संतापु ॥ ८६ ॥ मनसंवघात सयोकति ॥
अतिसयोकति दूजी वहै जो पाम जोग वखान ॥ तो कर सौं
कलपतरु कवपूया वै सनमान ॥ ८७ ॥ नसींपन जीनाच वहै नैन
तो लिनेहार ॥ नहीं सधा धरमाद रो नेनो व वसंत मै पार ॥ ८८
॥ अपन अत्माना तसयोकत ॥ अतिसयोकति ॥ मा क्रमन हो कारन
का रज संग ॥ तो हरलागत सायह धन सोमर सोमरिसंग ॥ ८९
रामवरन मुखमै रह्यो पर ह्यौगन हरि पान ॥ ९० ॥ चपला
तसयोकति ॥ चपलातुक नजु है न करह ज्यान होत नहीं कौ ॥
गई सकंक सम मुह का पीय गमन सुनजाज ॥ ९१ ॥ कंठ उडुगावत
धन नष्वरी पीय मारई भइ क ॥ अधी काह क गागल मघौग
तउक ॥ ९२ ॥ अत्यनात सयोक्त नाम ता. तात सयोकत कैसे पूर
व परक्रम नापह ॥ तान मठाह वे मंग लेम पर त्तिल पह ते गिर ज्वाह ॥ ९२
मानदा दिखिपदि लेपिदमा नमनहारे स्याम ॥ ९३ ॥

मपनुलकौंना॥ उल्लेयोग तातीनविपनलख नकहतवि

धान॥ कोहोयवरनमवर नकोरुकेप मिसुमान॥ १४॥ कोक

कुसुमनहिलहतसषीसोमउअउतंग॥ वैन नैन वाकैं मराम

रतजोवनसंग॥ १५॥ वनीकमलकीसौरनहिवरनसेकोचाहौं

नुकंमगकीसुकमार॥ तालषभामतमतमोर॥ वंपककुंदल

मालतीलगतगुलाबकठोर॥ १६॥ दूसरी॥ गुनसो

मिलिकैकटसौंसमकरकहतअनूप॥ दूसरनरसमतो

१७

कपनिवरनदेषतानूप॥ तीसरी॥ सनमित्रपैवरनय

महैयसपोर प्रकास॥ गुनविपनीकेदेततूतीमके

असकोहार॥ १८॥ दीपक॥ दीपकवरनाप्रवरनकोदे

मंसकोधृतिसमान॥ गिरतनहिगउगुनवतकेहोनउच

१९

तौंमान॥ गजमदसोनृपतेजसोमलहतवानार॥ उपमा

नरपमेयसोर कपदहुगतमहारा॥ रिपकोसोकहनकुकाथ

सरताह॥ घनकारदपनलसतनीताबकिवाल

52

मतमपहै मापमरवावकमतछादि॥

मथआव तदीपक॥आवततदीपकतीनवि धआवतपरकीहै चौपिर

मतरूपदुहूनकीआवततीजेलेख॥ दिनहैमावतआख्याकीदूजीकेवर्ग

घनवरसतरीतझीनसवरसतदेख॥फूलेवरपकरवकेकेतनकवि

सीमाहिं॥१०५॥ प्रतिवसतउपमा॥प्रतिवसतउपमावाकेहैउपमेयर

उपमान॥भिनकेधरमजोएककहिजुरेजुदेपदमान॥१०६॥सोमति

भानप्रतापकरलसैवापकरहूर॥धिमधरसांपनासईतिजेवेननकू

र॥दृष्टांतअलंकार॥जाहेविनप्रतिबिंवसोदुहूवाकनिदरसात॥

कातमानांसिसहीवन्येकुहीकीरतवंत॥१०७॥दुसेदुराज

प्रयानकोकिउनवेहुसहर॥अधिकआंमधेराजनगकरतमिलमा

वहरविवर॥१०८॥अथनदरसनअलंकार॥जाहेउपमेयवाक

मैउपमावाकजोग॥जाहाकरसुनिदरसनाकहतसबैलोग॥

१०९॥दातासोमधजोंगंमकविनपूरनचंदमकाम॥जोराएसेदेव

वनधवरनमहामहेअकास॥११०॥रसैनहैउपमेयमैउपमाक

अंगजोधर्मसमान॥उपमामैउपमेयकोधर्मधरैकविसि॥११

५ खंजन की सखी चपलता गहि तन नि हारें नैन ॥ जलदी ते स्यामता की
पोमली रोहै मैन ॥१२॥ रैन बन्स घरन की मतन ताल ईस विद्रुम से
सु मत राग ॥ जव कर गहत कमान सा सर देत मन को भीन ॥
भावसहैं मैपार रो सव अमर जुन की रीत ॥१३॥ नहँ सुमति नति
कोक रैं कियहीसो उपदेस ॥ ती जी करहत न ररसना जो कवि मा
हर सदेस ॥ रवि सो न सत मचो दीरघ जगत विरोचना स ॥ ज
हत कमल निज विच्छत सि करहि न कुमद प्रकास ॥१५॥ मध
कर हरम सतन जी कर के मपमो प्रीति ॥ प्रगट करत है जग
तमें जंह कुरल की रीत ॥१६॥ हरम सोइ चन सषी मुष सो क
रत विनोद ॥ प्रगट करत कुवलयन चंद्रादम ते मोद ॥१७
व्यतिरेकालंकार ॥ व्यतिरेक जु उपमान ते उपमेय अधिको रेष ॥ म
ये दैम वंज सो सषी मीठी वात विशेष ॥१८॥ पिय ती ये सो रस
के कयौ लषै हि ठोना ॥ ंदर मषी मुष चंद लौ भलो चद सम को न
ंकपयूषसा ग्रनमै दूर वंडाव न काम ॥ लोचन को मछरे न है मान

सोहोकतिकंलाः ॥ सोसहोकतहिंडसंगहीवानैंमसरमाय ॥ कीरत
मनकुलसगरीकस्न नतनिधपोंचीजाय ॥ १९ ॥ वि ॥ घूरतम
ठींसगघूमटीलोकलाजकुलचाल ॥ लोगुहनराकेवरीही
चलचितनैनगुलाल ॥ १२० ॥ अथविनोकतीअंलकार ॥ हविना
कानहूंभागतकोंमसतनकछुविनहीन ॥ सोसोभाम्रैकछिकी
लथैमसतनकछुरकहीन ॥ पियमनरंजनदृगअलीअंजनवि
नसोभेन ॥ वलसमगुनसरसानतूखंरवाईहैन ॥ मतरामः ॥ वि
समैनतेनिरवेरवरचपानवोऽ[illegible]कतनैम ॥ सुतेलवर नफलमा
कोजानीएयेकविनसभुपरपंकजप्रेम ॥ २२ ॥ देषतदीपतरी
पतेरतमानअरदेह ॥ राजतराकपंतगकोंविनाकपिरकानेह ॥
समसोकजि ॥ समासोकतअमसततैफुरैजुमसतनतमाज ॥ कुरन
हूफूलतभईदिषकलानिधसाज ॥ २४ ॥ वि: ॥ नपरागनहू
मधुपमधुनहविकासइहकाल ॥ अलीकलीहीसोवध्योआगेकौ
नहकाल ॥ २५ ॥ अथप्रकराकुरअलंकार ॥ हपाकुष्मासेलीएजं
होंविसेषनहोय ॥ हिमकरवदनीमीपकातापहरजोइ ॥ २९ ॥ वात

बालबेल स्रुषी सुषद यह लषी रूप घाम ॥ फिर उह उही की जीरा

हर सीच घन स्याम ॥ ११८ ॥ परकेरांकुर अलंकार ॥ लषि नाय वि

षैष्पनहय रकस्यांकुर नाम ॥ यथा दूपीप के कहै नैं कन मान तवा

म ॥ वि॰ ॥ जस मस पनस रेखन हीं देखत जे को में सावल गा तन ॥ कहा

करे असल के बेरी घगा उस का मलजां ह ॥ १२० ॥ मथमतेल

मेसल मल [illegible] पि [illegible] हू मैं होत ॥ यथा होय पन पूरन ने

है विजनकछ अनुतरी पउरो ॥ पीन पयोधर अंग [illegible] विन गया

रे अभिराम ॥ हरै लके सी मान को बरा कनहि तस्याम ॥ १२२

मथम सनुतको सलेष ॥ मतिमकुल हिती मघन वनपेर रहस

तों ॥ तन कमलन की हरत कि वत रे नैन सु भाय ॥ १२३ ॥

मथमस्तुत नप्रसं सालकार ॥ अलंकार है आनको प्रस्तुत

प्रसंसा ॥ इकबरनन प्रस्तुत कहै विन दूजे प्रस्तुत अंस ॥ १२४

धन [illegible] हू वरषा ग्यान की सकल समै सुष देत ॥ विषरा षतरै ॥

[illegible] सब आप धारि या प्रदेन ॥ पठ अषेभिष का करो सफल

[illegible] ॥ १२५

कोंध्यकेसरकांध्यकेजो कीनोमहाराज॥कूकरक्यौंकरहैंकहोकरिकै
लकपनगाज॥१२७॥प्रकृतताकुरा॥प्रसतनु तअंकुरहैंकीयप्रसुत
मैप्रसताय॥कहाकरैंअलिकेवरेष्पा३सकोमलज्ञाय॥१२८॥अ
सेवरनवरनसवासजुतसरससदलन सुकुमार॥असेवपककौ
तजततमरैं भ्रमरगवार॥१२९॥ प्रतीको कतिपपादै॰
प्ररपाया जि प्रकारदेक पूरचनासोकात॥प्रसकरकारजसा
घिरजोकपूवतेमहात॥१३०॥चतरवहैजुतु वगरैंविनगुनगोरी
माल॥तुमसेउवठौरहैंजातम्रानवलताल॥१३१॥मतराम॥
जाकेलोचनकरतहैं कुवलयकमलसकाम॥सुभटुभूमाल
केहियकरैंनितवास॥१३२॥लक्षलोयननकोयनहो कमा
ज॥कानगिविनवाजकेकितनुठरितुरज॥१३३॥फलको
करनसाधन॥लरकालेवनकेमसिलगरमोठिअप्राय॥ज
हेयोंप्रम्वानकम्पागुरीयप्रतीचेलछूनाय॥१३४॥निदा
ठतुनसेभ्रहसततनिदाकोगपान॥ध्यानमुनतासोकरहकविमा
प्रनीजनसोकरकेहै...नकरनैजाय॥...वकियपनितेजो

55

११ कहाकहेतोर॥१३६॥कहालउतहगकरैपरैलालवेहाल॥

कहमुरलीकहूधीतपटकँहूलटकवनमाल॥१३७॥तीय

ताहुनपीयकाजकोकरैहैतनमनलाय॥भजीहुपहरि

रीभेखीप्राईखेदसमाय॥१३८॥हरिहरमैरतरहतहैकर

ननिरंतरध्यान॥मैसैसतमसेविहीतोसदाहमकान॥१३९॥

धनरसनाम्मापनेगुननलहतसदाम्मतिचेन॥काकेकटम्मे

तहैकसकियेतनरेन॥व्याजनिंदा॥व्याजनिंदानिंदा

हिंसोनिंदानिकरसाय॥हराछिनकीनोनतुहिचंदमदहै

जोय॥१४०॥प्रगटकुटलताजोकरैहमपरस्यानसरोस॥प्र

घजोगविसलकोकहातिहारेदोस॥१४१॥कोकलकल

रवसोरवैविरहनकेउरसाल॥रामनहेतउसीसपानिरदेम

हारसांस॥१४२॥कोकलाप॥तीनभाँतम्माघेपहैराकनिछे

॥म्मास॥पदलेकहियेम्माककघुवहरफेरयेतास॥१४४॥दुरे

म्मोविंध्यवनलघंसतीनोलेख॥हेनहितुतीम्मगन

तनपतिकेयोम्मनहूसहीं॥तीनवरनवैरामह

स्वा
अपवातियम बहाे। जाहि देई मोजनमे सबलेदेसतुमजाहि॥४६॥
मधाम न राम॥होनकहहुमजानहि लालबालकीकत॥अ
सुउडुगनगिरतहैं होनचहतउतपात॥४७॥सोरठा॥मोहूरी
जैसोपत्यौ मनकपततनदीयो॥जोवाधैं नही होत तोवा
धेउप्रपैनगुनन॥४८॥मदनमदनकेपिरनसरनघरे
हरिराय॥रचैतितैविरहतफिरौकतिविरतउरगसारु॥४९
मोहसोवाततनलगेलगीजीअजिहजाय॥लाहिलिउरला
इयेलागिलागयतिपार॥१५०॥विरोधाभास॥भासै
जाहिविरोधसोउहैविरोधावास॥सधिजाकामस
सधिजानहैवासबवंदसकास॥५१॥त्यौत्यौप्यासेही
ज्यौज्यौपीयतअघाय॥सगुनसलोनरपकीजेनचषतृषाबुझ
जाय॥५२॥पावकुरागविनकीगनतसमझेनकोइ॥[illegible]
बूडेस्यामरग त्योत्यौउजलहोइ॥५३॥विभावना
होतकाजआवननभावनाविनहीकारनकाज॥विनजावक
दीनेचरकमलनलसेहैंआज॥५४॥विनतीरनवेंधतीकी

करीपरसिपिय पाई॥ हसाप्रेमवोन्हीं रपिोऊतरदि येख नायै ५४

॥२॥ हेतुप्रपूरनतैजहां कारजपूरनहोय॥ कुसमकाधकर

मरंनसुवजगमीत्योजोइ॥५५॥ तीजपरव सौ तिनसजे भूषन

वसननरीर॥ सगुवैमरग जेढके रीगहीमरगमदनवीर॥५६

॥३॥ प्रगेवे धनकहै तहीकोरज पूरनमान॥ त्रिसिदिनप्र

तसगेमितऊह नरागकी श्रावनां॥ व सविलसेगहू नदेहीसावि

रहहुरावेगान॥ नैनकमीरसीचितनऊहिय नायजधकतै॥

४॥ जकैप्रकारनव सतत कारज प्रगटतहोत॥ नेनमैन

कोकलकी वातिप्रवैवोलतसन्यौकपोत॥१५९॥ रस

नवालवेवरनतेयो फववउैप्रनूल॥ फूलीचंपकवे

लतेमरतचंवेलीफूल॥१६०॥ रहिकोवेमोपाहगज

लीनीमरसमी काइ॥ पीतजनावतपीतसोमीतनजकाउह

पाय॥१६१॥ ५॥ कानूकारजतेजवैहोयकौन वेरय॥

करतमोर सताएचहसूधी रीतकार कह्यि॥१६२॥ कपेजु

चढ़िकाउठायेकैअपतिकर मरतार॥ उजीयेठठीफिरत

६५

।६।। पुनक घुकार जनतेज वेउपजै कारन विरूप ।। नैनन मैनन मे
न सै देखपात ह लता विन नभनूप ।। ६५ ।। अयोगिघतैं विघ
सो कवि वरनन तविनाविचार ।। उपज्यौ तो मुभवंद तैरूप
मपो अध्यपाता ।५६।। विषेषो काति ।। वेषाषकति
जेनहे तसे कारज उपजे नाहि ।। नेह घटत नहि हे तहू
का मरे पवित म्मारू ।।६६। नैह ने नन कौ कघु उपजी
वड़ी वल्लार ।। नीर भरे नि तम्मि तर हैं तहू उन प्यावु झा ।।६७
ष्प फम सम्भव म्सले कारा कहे समस मेव ह्रोत जहंकांनन मा
६८
नकाज ।। ओर वर घर हे गोय सुत को पान पब्भाज ।।
अन्न कवित्तिन ठारते नह्री लषो मनझान ।। कुवना वसक
रहै कहू म्से सेंदर कान ।।६९।। मघ्यमसगतीं ।। तीनम
से गाति का न अरकारै न्या रे ठाम ।। और ठार को कीं
जै और ठार को काम ।।७०।। और कारज अगर भेय
और कौ नैद्दार ।। को कलु म्मधि मांती भर हुमन दूष
मोरा।। राधके हगकेल मै मूष्यौ नंर कुमार ।। कारने

लगी दृग कोर सो मर्म छिदै उरपार ॥ ७३ ॥ नरहरि नकी
सेवक न तें लंक लंक पायो पाय ॥ मोहि सटा पायो काहि सगु
पोहि लता पीजानु ॥ पद्धन तन पै काम जन जस धर धरै
वर माला ॥ मा जमि लेस भली करी कमले वन है लै ७४
उर भयो है जलटर तू जग को जीवन देत ॥ मेरे जी वन लेत
कहा सु बैर कहै ना ॥ ७५ ॥ विषम ॥ विषम अलंकृत तीन
विधि मन ल्यावक को संग ॥ कारन को रंग औरइ कछु
का रज औरे रंग ॥ ज्यार भले उदम को पै होत वरो फल
आइ ॥ कारन को मत तिन ती यको कहा काम को लार ७७
रीत हेत ॥
यउ गल तो अति स्याम ते उपजी वंडी विलाट्ट ॥ सषी
लगोचन सार ते अधिक ताप तन देत ॥ ७८ ॥ कहा
रा घोको धंदन कहा चंद्रम को लेक ॥ कहा सही गोप को करो कु
सन जो वंक ॥ यी अनु वनरी स्याम सरन है यह रेख ॥ स्रटन उजल
फिर तम सरकाम लुम करे ॥ ७९ ॥ तौं नै मुखड़ी छन लौंपी
रवी धाइ नीहूताति न लगी रियो दिठो ना दीठ ॥ ८० ॥

57

अथ समसंलंकार ॥ संलंकार सम तीन विध जथा जोग्य कौ संग ॥ का
रज मै जहं पाईए कारन हिय को रंग ॥ ८१ ॥ जथा विन काज सिंघ जर
उरम करते होय ॥ हार कास तिय उर कियो अपने लायक जोई ॥ ८२ ॥
करत लाल मनुहार है तू न लमत उहि सो ॥ मसै उरज को ठोर तें उ वने उ
रज के ठोर ॥ ८३ ॥ नीच संग अब वार जहै नहीं लगमी जल जा सा रा ॥ न
सही को उरम की पानी के पाये नाहिं ॥ ८४ ॥ मी होते री कान में हला
वीचित्र
गत है मति वाल ॥ ८५ ॥ विचित्र सं ॥ २ ॥ जथा फल व परीत की जेतन तें
नमति उच ता लहनें जैसे पुरष व पवित्र ॥ ८६ ॥ त्याग करत हैं धनन को धन
पावन के काज ॥ मानन लहन को तजत है मानें नहीं गुर लाज ॥ ८७ ॥
अधिक ॥ अधिकाई आधार तें जक अधेय की होय ॥ जो आधार
अधेय सो अधिक कहै सोइ ॥ सात दीप नव षंड मे कीरत नाहिं समात ॥
सवद सिंधु के तौन हौं तु व गुन वरने जात ॥ ९० ॥ जा मन मै सम
ही वसै नहीं पीय न ह समाय ॥ वसैवि ग्र जा मै सहत व्रिज की कुंज
महा हूं ॥ ९१ ॥ अव नल मधिय दुर नेच उ के महल उ जनौ सं मै म
समात हैं सा नंद उ भि तरगं ॥ ९२ ॥ ... ॥ ... मलप मा

पतैम छम है यजा प्यार ॥ अंगुरी की मुँदरी तुंती मुख मे कारन विरह ॥
९३ ॥ करि हूते अति छीन है सषी सु लाल की तार ॥ तरैकुवके
वीच मे पावत नहीं सुचार ॥ ९५ ॥ आसपास बन गाव के अति ही
मगन सरेस ॥ ससि साव कं हू ना वाल है तं मै ननक प्रवैस ॥ ९६ ॥ अ
धम त्वे नौ लकार ॥ जहाँ परत पर उपकारे प्रत्यो त्यो लकार ॥ ससि सो गि
सनी केत गोनि सही मे ससि सार ॥ ९७ ॥ तूरा थी सखि लाल के र
नंज उर मै बन माल ॥ तेरा घ्यो निज लाल कार कंठ माल को
लाल ॥ ९८ ॥ अथ विशेष ॥ तीन प्रकार वसेष है अन्न का धा
ये अध्याय ॥ वडी वस्तु सुप्रति को कघु आधार जो देय ॥ ९९ ॥
वैतराक को कीज पवरन ठौर जाने क ॥ नभ उपा कं मैं लल
कुसम स घरे क ॥ २०० ॥ व लौ लालवा की दमाल बो
क हीन जान ॥ हियरे हम प्यारा वरिहि यरो गपा हराय ॥ २०१
कलपवृक्ष पा देषत सही रेवत तो सो नैन ॥ अंतर बाहर
दृग निदरस उर है ती यम छहे न ॥ २०२ ॥ जो त्रिविलोक है सषी
सबको उर नवीन ॥ सोंपन मन नव नल को सदा नन पानें प्रमा ॥

अथ व्याघात ॥ व्याघात जुक घुओरते कीजै कारन ओरम्ब
रविरोधीने जवै काजल्यार ठौर ॥१॥ सुख पावत जासो जगत
तासो मारत मार ॥२॥ देयाकरत जो वाल यहि सगले चलो आ
वार ॥३॥ अथ पियबु घारत विष्व वैर उलै टपरह सब हेतु जैने
रषत हैं सुदेन हैते निछत दुखरे त ॥४॥ जो पै हरषी विजगाव
मै घर हरजस बवाव ॥ मैहरम छलघरे त किन नै नचको नचाव ॥५॥
नहि लोभी घन देत हैं दारदसं काजान ॥ दाता धन को रत है
कारनमाला
धारस्स को मान ॥६॥ अथ ॥ कारन कारज भर परा कारनमाला
होत ॥ नीति दिघन त्याग पुन तासो जस उदोत ॥७॥ नरह वेऊ निते
मिलन हरषी मलेपर मस बढोय ॥ वाढत है पुन विरहते नयी
तूरूको नीके जाय ॥८॥ पुन ॥ पूरव पूरव कारनन ते
नसे आगे होत ॥ कारनमाला कहत हैं जा को हाके उदोत ॥९॥
नरक होत हैं पापते पाप होत घार अज्ञान ॥ दारद हो
त अदान ते दान कर न तू ठान ॥१०॥ अथ ग्रहत मुकत कीजि
राकावलीन समान ॥ दृग पयुते लोभ भुत वार लोनारि

59

कहा सजलजहकंजनहिकंजभोर सुबास॥ नहीं भौर जहं
गुंजनदृगुमनकैहैहुलास॥ १२॥ अथ मालादीपक
॥ एकावलिमिलेमाला दीपकनाम॥ कामधनुयतीयहिय
कियतुहिकाम॥ १३॥ रसकवि॥ वे तो हैं बकानी हाथ मेरो
होतनहारे हाथ तुम्हें विजैना यह हाथका के विकानहौ॥ १४
कनकवेलमैकोकनद तामैस्यामसरोज॥ तामेमदुमुस
कानहै तामैलसैमनोज॥ १५॥ अथ सार॥ एकएकतेअ
धिकजहां अलंकार है सार॥ मधुसोमधुरी है सुधाक
वितामधुरउपार॥ १६॥ तिनतैतूलरतूलतैहलकोजाचक
वे नपवनतनादगउनहै मागनउरहियमांना॥ १६॥
अथ यथासंख्य॥ जथासंख्य वरननवस्तुवस्तुउक्रम
सों॥ किरअरिमनिवपतानकोउनजतनतरजन्मा
सरनपरोविषतूलयहि नरके मारनहार॥ नहिंछ
उनहमोगवाचनको कृपनगवार॥ १७॥ अथ
दीपक॥ देपरजाउनेककेनमसोजमसरोका॥ किर

फिरकै तेज वरा करै नेमा सुख देत सनेका ॥२०॥ दुतीन रैता ॥
वरनमै भई मदत अकाजु ॥ अब जन तिन्ति य वरन मै तुतनंद दहरहीव
नाजु ॥ २१ ॥ कवै सेज न जअब न मैल टत विरह दुष जाजु ॥ कवै
जुवं दन पंक मै सोवत कुस मावि यांघां ॥ २२ ॥ मिलन वा हपिय
वैदे केव सीहीय मै नाय ॥ अब न मिलै विरहा वस्था वसी
काम कीला यो ॥ अथ परवृत ॥ परवृत लीजे सर्धि कजु
रुष्यारो हीकु घरे देहु ॥ लेत भगत मै मुकत को पदतु
लस का लेय ॥ २३ ॥ परिवृत लीजै सधि कजै रुष्यारो ही
कु घरेय ॥ अब कै चतजो करचढै वहुर कवु न देर ॥
यह सषी को न स्यान है चत देवन तालेय ॥ २४ ॥
महत मनेरहसं कोक सुष स्वत कंप सकु कान ॥ मान
पान करमा पतैपान घरे सो पान ॥ २६ ॥ परसंष्या
परसंष्या इक थर विना दूजो थर ठहराइ ॥ स्याने
हवा हृदय मै न ही रही दपमै साइ ॥ २७ ॥ रेमूषन
जमन हरतन कानै सुकितन रोष ॥ चढ वषिनेह
न कहे मली घमानहरो ष ॥ २८ ॥ कोमन धाम मदान

भगवानहूँ करनै करहंग ॥ वासजोग कोढ्ग ॥ सबनकेछि

रहरहिं सग ॥२९॥ अथ विकल्प ॥ समयलकें जु विरध

नहविकल्पसोथाप ॥ उत्पत्तिकाल नवा यहै सरिको

सिरकोथाप ॥३०॥ मानकीयो सषी पिय सों अति हीरा

सवठायं ॥ रषिहै केहिंत सो रसों केवसद्व रेचाय पूरी ॥

अथ समुचे ॥ रोय सम चैं भावव रहकदूइ पजति सग ॥ रा

ककाजचाहे करयो द्वैंमें तेक रक रग ॥३२॥ तक्रमा

भाजत गिरत फिरत भाजंत हे सत रांहू ॥ जोवन विध्या

धनमद नमद उपजावत आहू ॥३४॥ अथ धन अधन

छिगासायकेवो लपाक धाकेवेन ॥ चकीउरीछूँसी हसी

वे रसीधापाएनैन ॥ निगटी मटकत पीत पट लटकच

टकती यचाल ॥ चल चष वित वन चारवित लीयो वि

हारीलाल ॥ कारकदीपक ॥ कारकदीपक रौकमेक

तें सेतछि याअनेक ॥ जात विते भावज रहसन दूसत

वातविवेक ॥३५॥ भोर न त्रास तम षनह नटतहे नकरत

नटजाहु ॥ वात रस लालच लाल की मुरली लई लुकाय २२

कहतनटतरीजतषिजतमिलतमिलतलजात।।औरभौनमेंकरत

हैंनैननहीसोबात।।३९।।समाध्य।।सोसमाधकारजसुगमजो

सहोतमिलहोतहै।।तकंठमितियकोअर्थसमयपोमिलेउदोत।।४०।।

सधीमनावतमानतीनहमानतमनभाय।।बोलउठेपिकनिक

रसुनप्योमाकमकलाय।।४१।।अथप्रतिनीक।।दुषदै

अरिकेपक्षकुप्रत्यनीकउरमानु।।द्विजनदिवाराकंजतेवेद

कातपैजाय।।४२।।तोमुखछविसोंविफ्लभयोकलंकसमेत।।स

रदउजअरिविदुमसमरवुउनदुषदेत।।४३।।काव्यार्थापत्ति।।

काव्यार्थापत्तियहकियोतिनकोमकरजात।।मुषजीयो

वाचंदसोकाहाकामकीबात।।४४।।औरम्रापनेहृदयको

निकेरहेकुचवाल।।औरकमेरतकियेअधरजककहाकमा

ल।।४५।।काव्यलिंग।।काव्यलिंगजवजकतकरसमर्थि

नहोय।।जाकोमैजीतीमदनसोहियमैंशिवहोय।।४६।।कहा

कामश्वालाललनहमतरुठेकैजाय।।वाकोवदनपयूषमें

वरहरिरेवतनताय।।४७।।अथअर्थान्तरन्यास।।सोविशेषसामा

न्यद्रिढकीजेकरिषामान्यास।।रदाकरे...सोविसरावेकरका

राम

नीवोसंगगुनीनिकचढतउचपदजाइ॥ फूलमालकेसंगतज्यूं
सीसचढाइ॥५४॥ पियमनरचवेंहैवोकठनतनस्वेहोत नगार॥
लाषकरेक्योंषनचटवढेवडाराबांर॥५०॥ कहुनहूंगुन
वडेविरदवडाईपाय॥ कहतधतूरेसोंकनिकगहनोघडुयो
नजाय॥५१॥ विकस्वर॥ विकस्वरहेसविसेछजवंफिरसामा
न्यविशेष॥ हरीगिरघारयोसतपुरषभारसहेंजोसेष॥५२॥ सं
दरताकीसीमतीयवोलतवचनसोवंक॥ गुनमेंदोगनव
दतहेंस्यासीसमाहकलंक॥५३॥ अथयथासंख्य मोहन
तज्योपहस्याम्यकीरीति॥ करेमापनेकाजलगातुमैजात
सोप्रीत॥ द्वोहाकरि॥ दोहौकहिउतकरबकोकहेंसहेत
हितेत॥ जमनीतीरतमासेतरेंवारअसेत॥ ५४ ॥ मलकवंद
नकुरकफूरहू रहतनताकीहेरे॥ कहासम्यकेलापाके
कहासुजुवकुवजोर॥ ५६ ॥ गंगानीरविधुरचरमलकगिर
मसकानउरोतं॥ कनकभवनकेदीपलोजसमपरातन
मोति॥५७॥ अथसंभावना॥ हैं योंजोयोंहोइतोसंभावन
तियाव [illegible] वोतोलहतोगवपार॥२५८०

जोकाकेतनकीरसा है सो चाहतजाय ॥ जौ वलि लैंजैकविसो
येषलक्ष्मवकौं पश्चाप ॥ ५९ ॥ अथ अभिप्रायाध्यवसति ॥
अभिप्रायाध्यवसति जु ठैहैतकै है जुरजोयहरीत ॥ करमेष
रह जो है रकरै नवोढा प्रीति ॥ ६० ॥ बलवचनन की मधुरता
चषमापन निजमान ॥ रोमरोमपुलकतकहतवोध्यमान ॥
ललित ॥ लसित कहैजो कछु चाहिये ताहि कैं प्रतिवंब
सेतवाध करिहै कहत सवनतेउतरैतसव ॥ ६१ ॥ जरीसिषि
सषी नसिषमोसा उहरै साउ ॥ सोयो चाहत नीडेजर
सेजकमगार विछाउ ॥ ६२ ॥ अथ प्रहरषन ॥ तीन प्रहरषन
जतनविनवाछितफलजोहोइ ॥ वांछितहूतेअधिककौ
लक्ष्मविनलियतसोउ ॥ ६४ ॥ सोधन जाके जतन कौ
तुचढकरसोइ ॥ जाकौ चितचाहतहूतो आइदूतितहां
कारमुदरी कौ आरसी प्रतिविंवतपीयपाइ ॥ दीठिदियेनि
धारकलषतरकरकेडीठलगाय ॥ ६६ ॥ अरीअरीप
टपटपरीविधआधेमगाहेर ॥ लगलगीमधुपनलरि
भाजनगोली मेघर ॥ [illegible] पावनमहमधजलपावत

62

भावसिंहसोहानहेजगतमराहतनाहि ॥६८॥ हरिकीसंध
राधकाचलीउकेलीभौन ॥ हसितवीवहीमिलगएवर
नसकेसुखकोन ॥६९॥ विषाद ॥ सोविषादविनका
हेतेउलकटोकपरजोहोइ ॥ नीचौपरसातिसूतपरीकर
पुधपुनहोइ ॥७०॥ रातध्योसहोसेरहितमानवटकेठ
राय ॥ जेतेऔगुनदूदयेगुननायपरजाइ ॥७१॥ उलास
गुनऔगननजवराकतेधरेऔरउलास ॥ ताहसंतपावन
कैरंगगधेरपहिसमान ॥७२॥ अथदोसगुन ॥ लाभवडो
जोकुलतसेववतिजधनजाहि ॥ गुनकरदोष ॥
हैसभाजः धनकोवडोसेवतसेतननाहि ॥७३॥ दोष
तेदोष ॥ कैरकंठनकुचकोनहितसमरतुताहरनधार
नंदतरैभाजनसनेविधकोतुवअरिनार ॥७४॥ अथगु
नतेगुन ॥ सषासंगजसवतहसतमगानभरोनटमाल ॥
दवतीफलतमधोचितरमारोकाल ॥ दोषतेगुन
दहीछीनयेहरलियासरीसधनवनधर ॥ वडेअ

तनयेगिनाजानकजोकधरअर ॥६७५

करफुलेललकोअरु चमनमीठोकहतसराहि ॥ रंगधाम्पसि
अंगपवनतुमतनरंगि षावतनताहि ॥ ७७ ॥ मोरसमेहरषीहस
गावतभरीउछाह ॥ नहींबुहघिलछीपकरीक्योरेवारके
क्याह ॥ ७८ ॥ अपदोषतेदोष ॥ रेवंदनवनकौतजोहुतुहे
वगीहिनास ॥ आपसमैमिलकेरहौ आगउठैहैवास ॥
७ प्रष्यअवज्या ॥ होतअवज्ञाओरकेलगेनगुनअर
रोपस ॥ परसतज्योंकरिकरनतेषुलैनपंककोस ॥ ८० ॥
जोदिनमैदेषतनहीं आपनैनैनउलूक ॥ जगतप्रका
सकभानकौकहाकहावैचूक ॥ ८१ ॥ मेरेदृगवारद
वृथावरषतवाररुवारि ॥ उठतकमकुरनेहकोजो
उरउषरमाहि ॥ सीतलतनरसुगंधकीमहमाघटी
नमूर ॥ पीसतवारेजोतज्योंसोराजानकपूर ॥ ८२ ॥
अथअनुग्या ॥ होतअनुग्याजोवरेदोषरहकोगुन
मान ॥ हरहविषतजोमैसराहिपबहुतरसमान ॥ ८३
जोनतुगतपीयमिलनकीधूरमुकतिमुषदीन
जोलहियेसंगसजनतोधरकनरककरकीन ॥ ८४ ॥
अथलेस ॥ गुनकोदोष…

सुकपद्दिम घरीवानतैव घ...कयोविसेस॥८६॥
रुपरूपकेफलनकोलेत स्वारमद घ्यो॥ग्विनह्नक
मघरीवातकेनिघ्रकडोलतकाक॥८७॥कनसज
नैह्नमनमतीम्रसवाअरतस्नसक॥कडेभाराबंर
लालसोमडोलगतकलक॥८८॥प्रितछिवतनो
विंठमैमूतलभयोकलक॥निजविरमलताराष
परमतेमैमोनमयक॥८९॥अथमग्रा॥सुद्रा
प्रसनुतयोपरविमैमौतैनिकसेनाम॥तेहमनावत
कोकरैमांननिराहस्याम॥९०॥वि॥...लपटप
नमोगरसोनभुहीनिसरुन॥जहरूपकवरनीकीय
गुलफ्रानारसेनेन॥९१॥नररतनाविप (नररतनप) कीमु
द्रीयकीमैमुनीगोमासुहनमुहराय॥नैनसरसाहु
ररांकनवसारेजाहि॥९२॥अथरतनावली॥
सापजुधिएरकोरस्योमीनसेनकोजोर॥वि
जैविजैकोतोहिसैथ्परयोविधानाचोर॥९४॥
रविनैरतजरिकरतसामफिलकोदत॥मंगलमगंल

...कोरेता॥९५॥अथपतरपान॥

तद्गुन तज गुन आपने और न के गुन लेइ ॥ जैसे मोती स
थर मल पद्मराग छबि देइ ॥ देपत वैठ कुंच मैं परसु मगे
उदोत ॥ राधा भौं विसावरी मोहन रंग रंगे होत ॥ ९७ ॥ पिय के
ध्यान गही गही रही वही है नार ॥ आप आप ही आरसी लखि रीझ
न रिझवार ॥ ९८ ॥ अथ पूरवरूप ॥ पूरवरूप लुप्त गुनन
जि फिरि निज गुन लेत ॥ दूजे जो गुन ना मिटै कीयौ मिटन को
हेत ॥ ९९ ॥ सेस स्याम भो सिंभ गरे जस सो उज्जल होत ॥
दीप मटायो हू कियो रसना मन उदोत ॥ १०० ॥ मुकुत
हार केहरि के हिये मकि न मनम यह होत ॥ पुनि पावत मु
धरा धका मुख मुसकान उदोत ॥ १०१ ॥ वदन चंद की
देह दीप की जोत ॥ रान चिते हू लाल वहि भान रात ही है
ता र ॥ अतद्गुन ॥ अतद्गुन ना गहै संग को यह ठौ
र ॥ पिय अनुरागी न भयो बसि रागी मन मांहि ॥ विहारी
अहते रिदइक हमक तन जाइ ॥ नेह भरे ही राखी रातूर
सी येल बाहि ॥ १०२ ॥ अनुगुन ॥ अनुगुन संग तें जबै
पुरस्कि गुन सरसाइ ॥ मुकुत माल हिय हास तें अधिक सेत दुति आ

64

२९ मत्ता वरीझ घ्रमकान न चपन मह री पग मर पग्ती ॥ तन
कवके भमभरन लं मत मरस कवि वि धान ॥६॥ बानर मरत
मैंत पुन बीघ की लनिमार ॥ भूतल गयौ केच वच ग्यो तांको
कहा विचार ॥७॥ भीलत ॥ भीलत सो सादरस्यौ ते मे दजवै
न लुषाये ॥ मरत वरन ती पचरन मैं आवक लख्यो न जा ३ ॥८
वि ॥ मारीतंर तारी लसे कुमम मालती संग ॥ लषी परत
नहि भान मैं जात सषी के संग ॥९॥ वि ॥ वरन घास छ कुमारसा
मैं कधिर सीसमा दू ॥ वारफुर न मत कमल भरं नती म हो
चकम मसे ष ॥११ पकरी लजी गुलाव की उग न न जाती जा
३ ॥१०॥ सामान्य ॥ सामांन्या जु सादृश तें आन न परे न विपु
दे ॥ ११ ॥ काच मरकल मैं कामनी मनि वंचके मार ही जान
परै नहीं ताको न तीय की चाह ही ॥१२॥ उनमीलत ॥ उनमी
लत सादृश्य तें भेद फुरै जब मान ॥ कीरत मा जे नुहन
गिर च्या पो पर न है जान ॥१३॥ वि ॥ मिल वे चंद न वें हीर
ही गा [illegible] न लषा रु ॥ ज्यो जौ मर लाली चढ न्यौ [illegible]
उघरन जाय ॥ वि प्राषको ॥ [illegible] फुरे न मम

निपदुषमहृपंकजलसेसंसिदरसनतमाज॥१७॥काकस्य
पिकस्यामेपोभेदनजाजाहि॥साबनत्रवैबसंतरतकोकल
काकलषाऊ॥गुढउतर॥गूढउतरकछुभावतेउतरदीनो
होत॥उनवेतसतमैंपथकउतरलायकसोन॥१६॥मतौव
लनेदेहदेउवतायहो मेंहिकछुतुमेदेह॥वंसीवटकीछी
मैलालजाहलषलह॥१८॥पापहारकेगभमैदिलेकछु
नम्रमान॥उनतदेषपयोधरनवसीदहोमजान॥१९॥वि
षिालंकार॥चत्रमसनडतरदऊएकवचनमैहोय॥माध्य
नीयकीकलरचगैकौनमैहोय॥२०॥मत॥संदवांरकी
चारनीकोंकहिएमतकूल॥मदवांरचारनीको
कहिएमतकूल॥२१॥गाथतरल॥जिनमसनकोमनककौ
उ,उतरएकसबविचत्र॥कानप्रकाशितजगतकोकोतरेतसु
षमत्र॥२२॥मत॥कोहरकाहनगलदसतनकोंहैंगयाननद
त्र॥नहैंचत्रउतमीपरविचनदइरज॥२३॥सूषमा॥
सषमपयसमेलयकरैंक्रिपाकछुभाय॥मैंदेष्योउन
सीसमलकमनकमनलेहुधापाप॥२४॥रही [illegible] ल

हरिलला चोहैं वखन सो देषति मसुषमूल॥ मान वतुरज
लमैं दियो वंधु जी वको फूल॥ सपरिहत॥ दहन खसी
पाश्रीन कोजान वतावे भाव॥ सा नहि मारे सेज पिय
हरदेव वतन्ति यया क॥२६॥ रमती यविपरीत कीग
ईति सषलष गई स्यान॥ कुमसाकर के उमै हसके लख्यो
किपान॥२७॥ यव्यायोक्ति व्यायोक्ति कछु मारखिय
के हेतु रूमकार॥ सबी हक कीन करम एल दार खो मन रै॥२८॥२॥
खि कोर करन उरा ने कत स्याव तमाग हि॥ कहं वगर लख्यो
सखि गतिगत यर हरी दिह॥२९॥ कोरक हेन तनाहे हैं णु
लख के फूल॥ काटे लसै सरीर मै पा यौन पाउ कूल॥३०
गुंडा क्रि॥ गुटा कित मसमार के काजे परदेस॥ काल
सखि में जाउ गी पूजे देव महेस॥३१॥ उन हेरहरि रकि हतइन
सखी जमना के तीर॥ हैन जानत हो हार को भूले मान निती
राउर॥ सपवदि नोक्ति॥ हल कदा पा मजर की पडव
नो कन है सैन॥ विषमाजथा पार नकार नवनाय मैने॥३२॥
तदे पाउ जनत जधेता हस कुमार गोर रहीनन दा साक

65

मति जठानीं ॥ लीनि वहे धलरानमे भौनरहैनो भलाई ॥

ऐजी करैं ग्रुरलोगनको मसछीरनकरै घनराई ॥ ने

नैन घावन छाउ कहै दरसा सनमानीयने जनाई ॥

२४ ॥ दरसन हीसो विपनमैन हिराजी कनमित ॥ मिलनचार

सो कतहैकरललवो हैवित ॥ २५ ॥ जैनतान्हो ॥ जमुनकि

पाकर ठगे मनमरमछ पेनरहै जान ॥ लिषतविप्रपिय

को लषे कुलाधनुछ दीधपान ॥ २६ ॥ वि ॥ ललनच

लनमु न मुलनमै मुकझलके [illegible] ॥ भईलछ

नसघनहुझतुझेमावार ॥ २७ ॥ लोकोक्ती ॥ लोक

कनिकपुवचन सोलीनो लोवपिवार ॥ नैनमूरत

मानलौसहे यविरहविछार ॥ २८ ॥ वी ॥ तुरनमूरत

कसेतुरतमूरतनैनजुरनीठ ॥ ऊंडीरैगुनरावरेक

नकनोडीठ ॥ २९ ॥ छेकोक्ति ॥ लोकेकनकछुन

छि सोको कनि ढजान ॥ सषी मुजगकेचरणको

लषभुजगहीमान ॥ तजेनेहनिजनारको पारनीर

नघौंन ॥ चोरीकोमूरे सषी [illegible] सोके जान ॥

[illegible]

रसकसपुरवहोंपीमानुरोकहतनकों॥४१॥सले
छकाकुपकदुहनकरेसधिकलपनमनि॥वक्रोक्ति
तरुकहतहैरोलनीनारिसिमकहुकहु॥ ॥इतन
मुवसीवकेरनमैसमेअरीनिमाघतनोह॥कहाक
हतहरीहखीनारिहगीकहहाउ॥
लकार॥हमैसाचकरमानीयेसाहेहगीकहसो
कितसोहसोहैकरतसोवीहीहोलाल॥४४॥यथ
सलेषसा॥मिन॥मेरेमनतूवसतहैमैनकेयेमपराध
तुमेदोसकोदेतहैहैमहकामप्रसादि॥४५॥ग्राहेत
हरीवुधपहरा सीजलछात॥लकरीसोनहिवु
झिहैयहजगमैविख्यात॥४६॥स्वभावोक्ति॥सुभावप
तितहिजातीराबरनेजातसुभाव॥हिसहसिदेखतफिर
तसहसोरतसतराइ॥अरीलासुननकीकहेगा
सुकाह॥धोरीधोरीसकुचतेभोरीभारीवात॥४८
भावक॥भावकहसिविद्यकोपरसैचकहतव
नाइ[illegible]वनमैराजवहलालाइछाजाइ॥४९
[illegible]

करवौंदै घोघरघरा उरकोमनून जात॥५०॥ जिनच
लघुलघ लनकीचवचा स्याम सुजान॥ मैदेषनहोवाउय
रवा तमन तविनमान॥५१॥ अथ उदात॥ हैउदानसंयत
विरत मलाप्यचरि तरूपन तंअग॥ कोरसिवमर्जुनकीष
पोकस पमंअग॥५२॥ रतननिकेषमानमैप्रितवंवतर
ससीस॥ निघघैरावनरहीपनीठलषोसाकचीसा॥मई
मुकता तुवजाचकापजरपरेलगततिप्पारू॥ लालेरम
दारमविरचमैचिनिहैलकमारू॥५४॥ जमुना तुरसोमाप
लनदेषतहातहुलास॥ जैहासुमोहनराधकाकियसरर
मैरास॥५५॥ मोहनकूदकदवतेपकरयोकालरूनारू॥ मे
पतविरविपुनटिगकालीहिदसरसाय॥५६॥ अथ त्यक्ति
अरमृतजूठीवातजरहवरनैजतिसपरप॥ कौनवके
रोदानतेभयपकल्यनरभूप॥ अथ यातेरलछन
अदमूनजूठीवांतयहवरेनैअमधकवंनारू॥ रानह
नासाहेहूमतुकनिसकवरा॥५७॥ चाहननाहिरसौं
नैपारररनैमा ... कनतकानिपतनलदे ... काए

नरेभूप सनापते सूझे धीर अवाढ़ ॥ भर फरी अरिवधू
नके लोचन की जलधार ॥६०॥ म॥ वाल त्रिवेलि चित
वारके वारधि वढे अपार ॥ जारे जानि वियान की वड
वानल की झार ॥६१॥ वि॥ सो धाई सी सी सलव विरह वि
लत विललात ॥ वी चिहसत अगुलाव गो छोटी छुई
नगात है ॥६२॥ अथ निरुक्ति ॥ सो निरुक्ति जे जोग सो अर्थ
कलपना आनि ॥ ऊधो कुवजा वस भए निरगुन वहे नि
दान ॥६३॥ प्रिय विधुरे अवलान कौं जारति है जुति का
म ॥ याते नाको कहत है दे कै कर यह नाम ॥६४॥ प्रति
षेध ॥ सो प्रतिषेध प्रसिद्ध जो अर्थ निषेध्यो जाय ॥ नी छ
नवा नवि नो छहे नहीं पवा यह चाह ॥६५॥ नहः अहीर
कों वास है अह वीरन को धाम ॥ यह नहि पुर व्रिय भान
नेरनपुर है स्याम ॥६६॥ अथ विधि ॥ अलंकार विधि सिद्ध
सो अर्थ सा धीरा फेर ॥ कोकल है कोकल जवे रति मे
कारे टेर ॥६७॥ तुलसी ज्ञन हरिबर नूभे कैरे निरनर वास
तो मन मनउ है जान हो जे [illegible] ॥६८॥

फूरफूटेकेऽवेगानहिहीपछिगहेमुअंग॥मोहनमथ
नकोगाइमैवैठीलहसंग॥६९॥हेतुअलंकार॥हेत
अलंकृतहोइहै कारनकाजसंग॥ कारनकाजइ
लहितराकना संग॥७०॥उदनभयोसिसीमाननीमा
नमिटावनजान॥मेरेधिसप्रियप्यारानेरीकृपावखा
न॥७१॥अ॥दरपनमैनिजछावलखमैनैननमोदमना
नीपमुषमिपवसकरननेचठपोगरवकोरग॥दि॥को
उकरिकेसगहेकाउलाभहजार॥दि॥कहतिसबैवेदी
दीपफाकेरसगुनाहोत॥तीपललागिवेदीदीएमगनति
२०५
वठतिकम्रहात॥७३॥कोनपमीनउपतनदाविपनविदार
नहार॥७४॥मोरतीयनिकेसंगरसोकरोअोरसाथिम्राल॥मए
होमेरेदुषसनीएमीनंदलाल॥७५॥तुलसीकासेवन
सदाहरिराधाकाध्यान॥इहैसरजाअपवरगहेमसेकैनिधा
न॥७६॥सेवतजमनातीरकोवृंदावनकोवास॥एहीहरि
मिलतहैएहीपरमहलास॥७७॥इतिअपाअलंकार॥भाषा
भषनमैनहीअलंकार [illegible] ॥नाकोइरिरमकनदेषा

प्रत घ्या लेकार॥ मत छा सो मन उड़ी पन कि लें आउ पैं लान॥
पीठ दीरा नीय मार मी मोह नि हरत कान॥ ७९॥ वि॥ कु
नयन मंजन को पवै ठौ दि ठौ वि पोर तवा रा॥ क कांगसो
च ढ़ी ठहै निरषत नंद कुमार॥ ८०॥ गरी अं घरी माकु
री भो भट मरो मान॥ परे पिघ्या ने परस पर दोउ परस पि
घ्यान॥ ८१॥ वि॥ जु वति जो न मैं पीग इ नैं कन परैत लिखाई
सो घो के डोरे लगी मतली वली सगजा आप॥ सरन नता
ला लकी उठ पोन सुर ठहराह॥ रारी राग विराग वो बरी
बोल मनाय॥ ८२॥ प्यार मा घरी को मठो को कासेक
विषान॥ घोल घा वी ले पीय की रसना का हे लिग्यानं ८४
वि॥ जोर सरा वये मान वस कुतल मत कर॥ जीमन मोरी
कउ लग वोरी चाप गुरा॥ ८५॥ अथ अनुमान॥ कै सउ मान
जो हेतु ते हो यसा को ज्ञान॥ संस वदनी हिपमै वसो जानो सुराग
प्रमान॥ वि॥ ना च अ वा नवक कही उठे विन पावस वन मोर॥ जान
तहां नि दत करी यह दस नै रवि किसे र॥ ८७॥ जरद पोम वो तवाउ
विपमारा पठ वठ उठे पराहु नन की कसम चया ही ही ८८

जहँ हरस को हेत सो जानले तन अनुमान ॥२॥ उनमान लं॥
उनमान जु मा ह रघंन पिन देख्यो लघ जाय ॥ नष्व रपाषि बो
नतार कैं कोन्यो लग नलषाय ॥९॥ जाकी बानी मे मे
सै को कल लरम नुहार ॥ मबनै साकत दर की तो व पमा
नकुमार ॥१०॥ यह को कल जान्यो सषी यह मै जान्यरसौं
का कर ब कके रूपको गामत कछु अंत ॥११॥ पाक्य लं॥
सब सुनके बचन जहि बचन देन परमान ॥ विनकंठी
हरि मन गति नह लहैं नगर विन गेज्ञान ॥१२॥ अथ परपा
कउ कर तहो लगे न तुमै विरुध्य ॥ चतुर नहि सकं कलैया
रन मै तिय सुष सुध्य ॥१३॥ नहीं अंगार चना करै मि हसा
जति सिंगार ॥ अर्ज अंसा भाव सज्जानीए नहीं करत अस
मसार ॥१४॥ अपथी पद्धि ॥ जहँ अपथि विअर थपै द मै
स थि ठह राय ॥ देव दे त मोर है दिन मै कछुन छाहि ॥ १५
जा मै नहो तैरे सुक पहि मनो वि चार ॥ यो नहो यनै
कउ रहै कामनी कुमार ॥१६॥ तुमत मोहि विन वडी
ज्ञान तसमे प्रकास ॥ औरकामनी सोर है कछु न सदिन उम

बि॥भ्रमे कहु कवि कमल मो मत तेने नवि[illegible]त॥[illegible]तर कौर

तिपल गन उअव विरह कृसान॥ ९८॥[illegible]ना॥नुहिसां

नकनकी कहो चलआव तजे वात॥ वकन। प्रथम

नजानीए तहे ग्रहित विख्यात॥ ९९॥ रतनाकर॥

ग्रहैं कत वेदस नेजिन जीय घरे बिघाते॥ जीवन नरसो

४००

सुधलैरे मेसौं (लो) कामिनमुसाघ (मदार)॥ १००॥ बिन करतडुरसम

जगमें कहत कतवे काजल जात॥ सोहै कीजे नैन जोग्र

वीसो है याना१। अनुपलब्धी॥ जिग्र भाग कत्तान मै

(न ग,भाव)

होविशजुत्तिन॥ अनुपलब्धी नहजानी रावरननस

प-२२

मे सपान॥२॥ मोहके वस कार को तोमे नाह सयान॥

सा यासह ली संगकी नाह परतमें हजान॥ ३॥ नहिं तरे

कोट समकाहुन कुचबिन विन अधार॥ इंद्रजाल यह

कामको लोक कहत निरधार॥ असंभव॥ संभव

(मू)

जहां वसकाभासै॥ संभव यन मूकवमकासे॥ ४॥

।राजाउ नो ग्रमदेषी षत नउ लुजर्मेतं होय॥ यह

मंडलबहरतनजुत कहत नसिग्र नलो ३५॥ रसवर्तलिकार॥

सुखैं वतजिह ?? भावको होय अगारसमाय। ब्रलसतनहि जो
मैं जनें स्मही नलषांह ॥६॥ भूप भकार सतराम के वंदत
गल्हियो कालकों दुजननें दि नौतुर तजवांय॥७॥ तीयउरपे
नंदलाल की परी स्याम घवस्मान॥ धीमतके वंध्न लोलषी
नीकु वकी जान॥८॥ समखैं ततं॥ प्रयस्वतरम्भावको
होयं अंग रसराम रटतकविस्रो धर्मैं फखो संतके स्तंगा॥९
धरतं वस्वजो उदरमैं करजमसूरको नास॥ जैसे फनी
भगावान मैं वसो वितसकुलास॥१०॥ नसो धरन गधरस्यूं
धरनसातेउ धातेसमेत॥ ताह धरत भूपालधनकहत हैं
करहेत॥११॥ उजैसवति॥ उरज स्वतरस भावमैं संगदुद
भ्रा भास॥ नृपतव वैर ज्ञीयानसो भीलरमतसहलासंर
नुवस भटनगरकी तीयनलरक तई छितायः॥ सत्र
करतनारीफ नृपतिवगया गंगासो पाउ॥१३॥ रस
भाखैं लघा॥ सभाप्रकासे॥ रसाभास अनुवितकौरेपुत्र
पितासोरार॥ हसीकरीं गुरदेवकी रंग सजग्या नां॥१४

सत्र के रूप सत तन सत्र की वेस्यादिक मै लाज ।। भाव काम
की पाव सखोन सगन दु जराज ।।१५।। स्याइहै ना ।। भाव सा
न रस भाको ।। मेंग नसार्ह त जान ।। ग्ररवन जयो म दुगा नू
पत भयो कर देष को पारण ।।१६।। पाय पाव देष नो छर
पो मान भग न गा लोल ।। दोउ, दिल मल कुजमे लागा करते
कलोल ।।१७।। भावोदय ।। जहां भाव को उदे मूल है ।। भा
वोदय तो कहे ।।१८ वि ।। फिर फिर विलषी दै लषत फिर फिर
लेत उसास ।। सा दृग्नि कस्ये तलो की त्यो भव नुत कपास ।।१९
भाव संध ।। जहां भाव की संधल है ।। भाव संध कवित
को कहै ।।२०।। पीयष घुरत ।। भाव सा कल्प ।। दावत भो
जहां उपज परत वहां प्रेम ।। कहत भाव साव ल्प तर
जक विस्मृत उतन ।।२१।। वाल मवारे मोन के मुन परनार
विकार ।। मोरस अनरस रस लीरहि जषी सहक वार ।।२२
भरयोल अरथा पशाद्यालेकार नि रूपन ।। काव्य रीत ल
सो ही वद रभी कहै पंचाली मुन जान ।। ... ता राउन ताध

गोरील छंद ॥ तोटक योगी वरराज जेते तो दृसुंवडो समासा
छंद वारच नाके तिन गोरी वास ॥२४॥ तमालतन ॥ जो
तोको करि लीएत कों मैं तिन हो या ॥ यहि हैं याके अर्थ मैं स
हत समासहि सोइ ॥२५॥ जोरी प्रेउजगन को उदाहरन ॥
उगटे गटे गट पतन कादो ढार भुजान ॥ करि के सतर कैं
तीरते बगासगादीय भान ॥२७॥ अमृत धुनी छंद ॥
गापकन वालसके दुवन लषत हसंगार क्रुध ॥ कई वर
बलके कीरां वधधार गमरुध ॥ वध धरि मैं रुधधन वं
लजुध धनरात ॥ अगगा दिरल बगगामर्यतुप गगाम
गति ॥ बगगा नर बगगा न पति समगा छंत ॥ जगा गोरेव
रंगा गालियम त गगा कति ॥३०॥ वरर्मीलं ॥ कम
समास त कंप धार सा उ स्वर ॥ नह स्वरगा रषल गुमधर
वैदरस उधार ॥३१॥ सोहत चदन बेद सोंवंध्यु रुमानवर
द ॥ गहि गदर्द की सद गति लीनी पाप्सर वंदु ॥३२॥००

सयो गाखन कपान वा गीय रागकार ॥ याकी ओर सुझापने
मन हित लखि सकार ॥ २३ ॥ पंचाली रीत ॥ जो रीतें दरभा के
ले पंचाली हूं रीत ॥ उपजन मति प्रसाद गुन सकवल सउ
प्रीत ॥ २४ ॥ मनोसरूप के रूप वि ज्वाल रही मंथा या ॥ कं
जन की सजान ते चंदन सेत सुपाय ॥ गहे उस्या मस्या मा
सुकर लहि यो महा सुषपुंज ॥ पंकज पत्र सु सेज जिह कुंजन
मैं प्रसिआं ॥ लाटी रीत ॥ कोमल पद जिहि रहत नेह उपजन
गुन प्रसाद ॥ लाटी रीत नहीं कहै लागत पउत स्वाद ॥ २७
अधर सुधा धरते लला बोलत काल सुबोल ॥ लाल
लाल लोचन लसित सुनील नवोम्स ॥ २८ ॥ सुधर सुधा
री मधु मधुकर मधुमेत ॥ अधर अधर सुधा धर पा
न सो धपै नपी पर सुरति ॥ २९ ॥ अनुप्रास ॥ जहां सुवरन
अनकी टेक ॥ जहां सुवरन क्र ॥ स्वर विन समता वरन की क
न प्रासतें कार ॥ कोमल काम न कोल गंग सुकास सुक वधिचार ॥

छेकानुप्रास ॥ अनेक वरन मैं नकी इक वर समता होय ॥ छेका
नुप्रास प्रकार सम चतुर सो य ॥ ४१ ॥ आप मनु अनंग भौ नैन चैन र
सवास ॥ कंज भवन भावन लगे चाहत वास विलास ॥ ४२ ॥
वृत्यनुप्रास ॥ वृत्तीय के एक बहु वरन की बहु विर समता
मान वानन सो है नैन तुव आनन नीरज जान ॥ ४३ ॥ ललवा कव
च सो ललन चाहत चपला नार ॥ मदन सदन दर सत सुमन र
चत लखै निहार ॥ ४४ ॥ श्रुत्यनुप्रास ॥ अनुप्रास श्रुत वरन
जहैं एक वर्ग के होय ॥ पत मन भावत है व धूल च घी न
कहि जोय ॥ ४४/४५ ॥ अन्त्यानुप्रास ॥ केहु अंत अनुप्रास है जो
तुकांत अनुप्रास ॥ वारज नैनी कामनी विलसत पिय के पास ॥ ४६
लाटानुप्रास ॥ अर्थ सहित जे उपर फेर भाव भेद जहैं होय ॥
सो लाटानुप्रास है भाषत कवि वर कोय ॥ ४७ ॥ हो वत तो
रूपक कहा तन सो की मात ॥ हे वत तो रूपक को कहा तन हो ल
की माल ॥ ४८ ॥ सज्जन वचन बेजन रतन मैं जो तिमान सपूत ॥

सजस वढावे जगत मे जो कुल मांहि सपूत॥४९॥ पद को
लसत सुभास॥ कंचन वरनी तीय को मुष है सुधा निवास॥
५०
सुधा नीवास सु है कहा जहां कलंक प्रकास॥ जमक॥
जमक पर उहीं रहै अरथ जुदो हु जाइ॥ जलद जलद पसार
उ सषी है सहंसनि लषाइ॥५१॥ अजन कहैउ तासो अजउ
अजउ एक हि वार॥ उदुर अजन जासो कहाउ सो तन अजउ
वार॥५२॥ पुनरुक्तीपदाभास॥ भाषे जहां पुनरुरुक्त सो
पुनरुक्त पद भास॥ भूपत वा धन को रहै नैन तीय को दयन त्रा
स॥५३॥ नारन को छाउत नृपति का मनि को सुष देत॥
महा छोभ धारे रहै करे खु धन सो हेत॥५४॥ म हले का॥
तीन चरन में चलति नहि फोतनेन घातीसां चार भुजा
नृप मान को नेपुष वे दजन्म सीस॥५५॥ चार वरन भुज
नेअंत द्वै करि पलव न सीस॥ द्वै मुष जाके दषी यतना का वहु
नरहा सपक्षी सदी॥ सपक्षी सटी सु मुष ... न जहां है निरपष

समसमुषनेरहै ॥ कमल पलवहै मनपान ॥ ५७ ॥ तुरतहि सुरत
कसे डुरतमुरतेनैन जुरनीठ ॥ टडीद गुनरावरे कहत तकनेती
डीठ ॥ विलसि उसुमन द्वैहै सुफालमातप रोसन वार ॥ वारी
आपनी हि चर्मसरितदावार ॥ ५८ ॥ तीनतरह को संकार ॥
उपकारक द्वै औके को यहसंदेसलषाइ ॥ इक पदमें भूषन
त्रैसेकर कहिजाइ ॥ ६० ॥ अथ एकैलंकार ॥ एकैलंकारको
उपकारक वरजनें ॥ भीलन तुव अरिवधुन कलीने भूषन
मान ॥ हेरिलाल रुचि अधिर दुतनजे मुगराजाजान ॥ ६१ ॥ छ
लवढई वलकरषनेकटते कुवत कुठार ॥ सालवाल
उरझालरी वरीभमतरु डार ॥ ६२ ॥ सैदस सोंकर ॥ पी
यके नैन चकोरको उपजावत अनंद ॥ मुषी नवल अवर
महिराजत तोमुषचंद ॥ ६३ ॥ कहीहमारी हेयधरो
जो तलला सम भवात ॥ नैनको मुषदेत जहहैं दरसेव मरसन ६४
टेक
परमै अनकाल ॥ छ ॥ उरसीनेअत चरपटपिसनमुरहीसुन

छाड़ तुलसी निकसी सुतो गयौ तुलसी लाइ ॥६८॥ जेतवरो तरी
स्या ॥ मलकार लछन ॥ सपि पाइ कर कारत है सो रस को उपा
कार ॥ भूषन नाम से जीव को तेक ही लंकार ॥६९॥ अथा लंकारले
कार ॥ सब्द अरथ की चतुरता चमतकार उपजे ता सं
कार ताको कहे जे कवि सुर मनि केत ॥७०॥ सालग्रम सी सरजु
की भक्ति गंगा ह्वै पधार ॥ अंजन रालमै दै सहे सो सायर न सर का
र ॥७१॥ प्रथम नाग्गो मानत हालसों चैन पुरन नाम ॥ तहाँ
जिपारी राम घन वाम करि ऊ सभि राम ॥७२॥ ते कोउ
नरहरि कवि कौ उभा वार में वास ॥ भाषा भूषन ग्रंथ को टी
का करी प्रकास ॥७३॥ उदाहरन दीने वहत वुध वदा
न कास ॥ भुले वालक है सु पढ लखौ सु कवि समाज ॥७४॥
आका काटे भाई भूषका छंद लगाई राम वनवासी चमू
नेम दादुरी पुकारि है ॥ रोसे ही कसाला मैं परी है लंकाप
ते लड वामन के तालादे त का रु लंतनारि है ॥ तीन लोका

ऐसे भगत देषे लछन भाता तातें सोकार सरोन दाता रघुराई हैं ७५
भ्रमी भागवत प्रकास कों ।। कवित्त ।। कौन है उदार जग सा वरेकुमार
प्रभ दारिद्र छोडन लाषन करा कौं ।। रघा उर भावे न उषहे वहा वहरी
ऐसा ही प्रभु भाव ले परेषा पाहउर को ।। चषसहू सदन सदामा का सुरेस
केसे है धरहे वटा येपकान कीनो निज जोर कौ ।। दीन घा के हाथ्यरू
कोफेर नाह आवे कोई चाहरचवा वैताका चीर्याल के छोरको ।। ७९
सवैया ।। दारर के दुनवार घसघाह वहा तग ही हरिवाह सबीने
चावत चारक चायत के मघवा के समान महीपरि कीने ।।
मोहन ताल सो दीनदियाल को सोच विना जिन के सम चैने
होते न जाव कहूं टू कहूं टार को हार कके तिहमरला दिन ।। ८०
मूतम हादास रके वार घसै गेह नी पुकारी प्रीत हरि की जता
ई है ।। तवही सदामा सघ कीनी नेमीनरन की गया द्वज हू
का को वषनेक्ताई है ।। वैरो विलोकक कर छोन लीनी रूपल
मसंपत सरोस कौ नेषा उही पठाई है ।। फुली फिर वावन की

वनतावलोकनकेहैध्यानीदीयेऐसीराजधानीमेंआइ॥४
पुरोहित पत्नीनदसुनसाउलमहान॥ मैंहोतिनकोगेनमेंमो
ननसोउत्तमसमान॥८३॥भाषामेंसाईजहाँवरनेप्रभुगुनसार॥
ऊंचोनीचोहोनतेंजलोंनहीतिरध्यार॥८४॥रामायणकाकि
धरध्यारजीनेकरतारलखेतिरप्रिवजाइउपासनमें।
लीनरएकसानकरकेवहीनिरासपरैजहंरामनमें॥क्षित
चारपुरोहियकोतमचोहरैनप्रबदतजामनमें॥८६॥
संवतअठारासोवितेनचातीसमान॥टीकाकीयोदिन
गुरदसमीसवदान॥इति श्रीहरिचरनदासकृतभाषाभूनं
समापतम॥संमत १९१६ जेष्टमविदि २६ मैंलिषीकृत
ननदकिसोरगोतिपठनअर्थिमदन पञ्चमसप्रयाग
पत्नीराम॥नंदउपमेयउत्तमतीपहैनामेंउपमेयकोसिंद।
रैतहैन॥नुछवनमाताकेसमभेइमुषकोकरयौ॥
यातेमुषकी[illegible]रामई॥उदा॥अधिकतहपरपकजेहे।

21

सोयधर्म्मचांवाकलप्पापमांहीक्यौंनहोय॥उत्तर॥श्लोक

विषैउपमेयआगेहोतहैं॥उपमाविषैउपमानआगेहोतहै॥

मुख
मुषससिरूपक॥ससिउपमान॥प्रश्न॥परनामलंकार

लंकारलोचनकंजहोरूपकहीक्यौंनहोय॥उत्तर॥

क्रिया
रूपकमैंनहीरहैहैदेषवोक्रियाहै॥२॥उश्लेषअरथंयैंको

सुरतरूकीभ्रमपदैपा त्त आतहीक्यौनहोयौ॥

उत्तर॥औंनालंकारमैंउपमानउपमेय॥

कोमान्यरूपहोतहै॥उश्लेषलंकारमैं॥

क्रमनहीकहीहोतहै॥कहीनही

होतहै — शुभम॥०

इतिभाषाभूषनसंपुरनं।

लिषंतदेवीदासका

सा१८२१भासर

शुभम

75

76

ॐ स्वस्ती श्री गणेशाय नमः अथ गणेशजी के नाम
ॐ सुमखश्चैक दंतश्च कपिलो गजकर्णिका लंबो
दरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः धुम्रकेतु गणा
ध्यक्षो भालचंद्र गजाननाः द्वादशौ तानि नामानि यः
पठेच्छ्रुणुयादपि विद्यारंभे विवाहे च प्रविशे निर्गमे तथा
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः श्रीरामाय नमः श्रीहनुमते
यनमः ॥ अथ चाणिकलिख्यते ॥ राजनीतग्रंथ ॥
श्लोक ॥ नानाशास्त्रोद्धृतं वक्ष्ये राजनीतसमु
च्चयम् ॥ सर्वबीजमिदं शास्त्रं चाणिक्यसारसंग्र
हम् ॥१॥ मूलसूत्रं प्रवक्ष्यामि चाणिक्येन यथो
दितं ॥ यस्य विज्ञानमात्रेण मूर्खो भवति पडतर
भातवव र्ततेनैव चौरैर्नैव न नीयते ॥ राज
द्वेषं भयं नास्ति विद्यारत्नं महाधनं ॥३॥
दुष्टभार्या शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायकः
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः ४
परदारा परद्रव्य परवादं परस्य ॥ परहा
स्य गुरोः स्थाने चापल्यं च विवर्जते ॥५॥
पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनम्
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शांतये
लक्ष्य मृगिगृही यात स्त लक्ष्य मेजलीकषि
णा ॥ सर्वषां रानुवत्येन यथा तथेपडतो
नदीनां च नखीनां च शृंगिणां शस्त्रपाणीणां ॥
विश्वासो नैव कर्तव्यं स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥८॥

२

नैवविद्यागमः कश्चित्तेदूरात्परिवर्जयेत॥ यस्मिन्देशे
नसन्मानं नवृत्तिर्नचबांधवाः॥९॥ आहारोद्विगुणस्त्री
णांबुद्धिस्तासांचचतुर्गुणा॥ अष्टगुणाव्यवसाय
श्चकामश्चाष्टगुणःस्मृताः॥१०॥ उत्सवेव्यसनेचैवदुर्भि
क्षराष्ट्रविप्लवे। राजद्वारेश्मशानेच यस्तिष्ठतिसबांधवाः॥
विषादप्यमृतंग्राह्यं अमेध्यादपिकांचनं॥ नीचादपि
उत्तमांविद्यांस्त्रीरत्नंदुष्कुलादपि॥१२॥ उपकारगृही
तेप्रात्रशत्रुंप्रत्युद्धरेत॥ पदलग्नकरस्थेनकंटकेनैव
कंटकम्॥१३॥ धनिधान्यप्रयोगेषु तथाविद्यागमेषु
दा॥ आहारेव्यवहारेच त्यक्तलज्जासुखीभवेत॥१४॥
धनिनःश्रोत्रियोराजानदीवैद्यस्तुपंचमः॥ पंचयत्रन
विद्यन्तेतत्रवासंनकारयेत॥१५॥ यस्मिन्देशेनसन्मानो
लिवृत्तीनत्रनकारयेत॥ विवारमध्येप्रयोगः परोदेशः
रणीतम्॥१६॥ गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानांब्राह्मणोगुरुः
गुरुः॥ पतिरेकोगुरुःस्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतोगुरुः॥१७॥
ऋणशेषोव्याधिशेषः [illegible] तथैवच॥ पुनःपुनः
प्रवर्द्धेतेतस्मातशेषंनकारयेत॥१८॥ पुत्रप्रयोजनेन
पुत्रपौत्रप्रयोजनं॥ [illegible] नमंत्रसर्वमयेसम्यग्नम॥१९॥
नरानांभयमानाय [illegible]

आदो मागरूपवी कोकिलाणी। राजपुत्रकाः।। गौविद्या त्रीतपस्वी
क्षोभिते मातरस्मृता ।।२२।। मनव्यासे विंजविद्यामजीर्णे
भोजनं विषम् ।। विंछं गोष्ठीदरिद्रस्यं वृद्धस्य तरुणी विषमा
नस्वरस्यकतोधर्मी दुर्जनस्य कृतः क्षमा ।। वयस्याश्री
कुलेस्नेहः कृतः स्तवकामी नाम् ।।२३।। दुर्बलस्य बलं
राजा बालानां रुदतं बलं ।। बलं मूर्खस्य मौनं चौराणा
मनृतं बलम् ।।२४।। मनसा चिन्तितं कार्यं वचसा न प्रकाश
येत ।। लोकालतं तत कार्यस्य क्रियासिद्धिर्नजायते ।।२५।।
किंकरिष्यति वक्ता च श्रोता यत्र न विद्यते ।। नैव पत्यास
मो बन्धुर्नैव व्याधि समो रिपुः ।। नवपत्या समो स्नेहो न चदे
वात परं बलम् ।। अश्वनेमस्य हतें काष्ठं तात्र मपाने
श्रुद्धती ।। रजसा शुद्धते नारी नदी वेगेन शुध्यति ।।२७।।
प्रदीपानां भयं वर्जेफलानां पिष्यारभयं म ।। दीपवे
भयवजमा घूनादुर्जनो भयम् ।।२८।। वप्राप
भो राजा मृषि पुत्र स पण्डितः अधीच धनमाप्पत्तम
व मन्यते मंजेन ।।३०।। कोतिभारः समर्थानां किं नदूर
व्यवसायिनाम् ।। को विदेशः पंडितानां कं परः प्रियवा
देनां ।।३२।। न तत्र भेषजं वृद्धा भारीयस्य भ्रषन
[illegible] रांजाको लेसमं तन्मूषणम् ।।३३

उत्तमै संसर्गात नीची यात्युत्तमां गतिम॥ प्रहतै
हीनसंगं विद्याथ्ये गम पतैः कुमनै सह॥२४॥ वल
मीकम धुवास प्रव मूल पत्रस्य चन्दनम॥ मि
त्रा वराज को प्रास्त लोकं लोके नवर्द्धते॥ ल
ज्जा भूषन स्त्रीणां दुर्मीरुणा भूषण शकालम॥
सुवर्ति भूषनं पुंसां ज्ञानी भूषण क्रिया॥२६॥
नदीनां जाह्नी श्रेष्ठा प्रमदानां पतिव्रताः धा
न्य पुष्पेषु धनीनां च देशानां यकूजी वर्त्तिं २७ सो
भाने सलल पंदनैः सो भते दीत तो द्विजा॥ तपस्वी
तपसा एक्षा प्रसूरः प्राप्ता स्वर्ग साधिते॥२८॥ पठ पुर्व
स्त्री तुलमत र हृदये कुर॥ स्वदेशे पूज्यते राजा वि
द्वान सर्वत्र पूज्यते॥ ना माता न पिता ज्ञाति न भ्राता न
सहोदराः॥ दोष पुनरुत्संजातित वालवस्त्र हि पर्नं
मस्तु स्थानुजा न स्थासंत स्थाद्रव्य पर्ण वा॥ लज्जा
एकान्त स्थातिलि ज कुयो यता॥ स्वलं करोति
कार्याणि सज्जने परि भूयते॥ रक्षावनो हेरं न सीते
वचन स्यामो सुधे॥ ४२॥ पिता रक्षति कौमारे

79

भर्तारं रक्षति यावंनैः पुत्रा स्तुति रक्षति मुखेर्भार्येन
स्त्रीस्वातंत्र्यमर्हति ॥ ४६ ॥ पुंजनेच गुण्या सर्वमूरवी
दोषापूर्णकवलम् ॥ तस्मात मूर्ख सहस्रेन प्राज्ञ
एको विशिष्यते ॥ जरेके को गुणिपुत्रो नच मूर्ख पु
तेरपि ॥ एकश्चन्द्र तमोहन्ति नच तारा गणोरपि
एका नापि सुवने एक पुष्पिते न सुगंधिना ॥ वासितं
तद्वनं सर्वं सपुत्रेन कुलं यथा ॥ ४९ ॥ कादंन नष्ट को
न रायेन पांडव केरवाः परमयि परित्यागो न्नवा
परस्मा ॥ लेलाटे लिखितं न पत्र अब ष्टी प्रयाग कारके न
हरे मर्को वन्हना मसंपीतस्य लघने ॥ ५२ ॥ यस्य
नास्ति स्वयं प्रज्ञा पूर्ण पश्च तस्य करोतिकि ॥ लोचनाः
नावीहीनेन दर्पण किंकरोति ॥ हीनासेवा न
कर्तव्या न कर्तव्या नदा श्रय ॥ मृगा प्र चरन्ससा
ते सर्वे वसन्ति नित्यमम ॥ ५४ ॥ तप्र मूलो यथा
दृष्टि नुपार्दे भूर भोजन दरिद्रे दीयते दानं सफ
कुं न्नदनं ॥ ५५ ॥ पूरवकमेवि पाकेन धाम स्य अवे
नवानां तमेव यामिनाश्वरवै प्रेरना नरः ५६

भवितव्यमभवत्येव नालिकेरफलाम्बुवत् गजभुक्त
या स्मृते
कपित्थवत् सर्वं प्रयाति गच्छति स्थले ॥५७॥ गजाय
तथा रथादि नौकायां गच्छति स्थले॥ येपि प्राप्नुवन्त्य
प्राप्नुवन्ति कः पापिष्टस्तपर ॥५८॥ अप्राप्य दत्वा न
इच्छा च नरं प्रति सेव्यते न॥ स्वयं दत्वा हरेद्यस्तु
स पापिष्ठस्ततोऽधिकः ॥५९॥ मुख पद्मदलाकार
वाचा चंदनशीतला॥ हृदि कर्तरिसंयुक्तं त्रिविधं धू
र्तस्य लक्षणम् ॥६०॥ त्यज दुर्जनसंसर्गं भज सा
धुसमागमम् ॥ मूर्खता संगदोषेन मेकेन नहि ता
फणि ॥६१॥ घृतकुंभसमा नारी तप्तांगारसम
पुमान् ॥ तस्मात घृतं च वह्निं च नैकत्र स्थापये
द्बुधः ॥६२॥ माता स्वसृ पुत्री गुर्वी न सीता प्रादृष्टी
महान् ॥ नमनः सदृशो वेगं न विंतागहने लमे
३३२
बहवः फणिन संति भेकभक्षणतत्पराः एक एव
६४
वहीपोशोयधरनी धारणक्षमः ॥ कणिलठन
पदाग्रेकाचः शिरसि भूषणः यथेवा सत्येवास्तु
६५
काचः काचो मणिर्मणिः ॥ संभोमासंमद्गाचवा
वास्त्री नीर भुजंगमा॥ हतेन कथ्यादकं संचिद्द सान्दन

करानिष्टं ॥६७॥ महारोचंतिथेत मार्त्ताः
धमिमेकंचं तं येत ॥ महारोगे मेत्तु ध्याण जन
मना सह जायते ॥६८॥ दरिद्री व्याधितो मूर्ख
श्वका सीति तमेवकाः जीववंतो मृताः पंचपचमि
स्यौ येत महिः ॥६९॥ राजा जन कृतपापी राजापा
पपरो हतः ॥ स्त्री श्वपापे गुरुःपापि स्त्रीपोषयात
पति ॥७०॥ फ्रोल फ्रोले नमा गौरकघमो ज्ञाकेन
गजे गजे ॥ साधवो नहि सर्वत्र चंदनं न वने वने
॥ नरायरामेयघीरः पपूपतिपरमात्थिनाः
जम्हुनमयलब्धा कापि नो कापि प्रियंपा ॥७२
मता यस्य गहे नास्ति भार्या च प्रियवादनी ॥ अर
ण्य तेन गंतव्यं यथारण्य तथा गृहम् ॥ ७३
माता यदि विषं दद्यात् विक्रीणाति पिता पदि ॥
अन्यायं कुरुते राजा तंत्र ता तान को भवेत् ॥७४
दूरतः सोभते मूर्खो लवसाटीपटावृतः ॥ ताव
च्छोभते मूर्खो यावत्किंचिन्न भाषते ॥७५
लोपत्र सत ते याति भुक्तेचापि नितरं ॥ न लघु
ता याति यदि प्राज्ञस्य पं भवेत् ॥७६॥ कोकिला
नां स्वरं रूपं नारी रूपं पतिव्रता ॥ विद्यारूपं कुरू
पाणां क्षमारूपं तपस्विनां ॥७७॥ शीलाकातन्यज्ञो
जयो होमा चरणं परम् ॥ अर्थ प्रमापयत्न दायक्त्रिमति

हारं स उ चाते ७८ ॥ अपात्रेः पात्रतां याति यत्र पात्रं हते
विद्यते ॥ निरस्य पादपे देशे एरंडोपि द्रुमायते ॥ ७९
अपुर्वित स्नान अहार मंत्र मैथुन भोजनम् ॥ अपमानं
तपो दानं नव गोपानि नियत्नतः ॥ ८० ॥ गोभिर्विप्र
श्च सतीभिः सत्यवादिभिः ॥ अलुब्धैः दीनपाल
लेश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥ ८१ ॥ चंदनं शीतलं लोके
चंदनादपि चंद्रमा ॥ चंद्रचंदनयोर्मध्ये शीतलं वचनं
समात् ॥ सर्वरी दीपको चंद्रः प्रभाते रविदीपकः त्रैलो
क्यदीपको धर्मः सुपुत्रः कुलदीपकः ८२ ॥ एकेनापि
कुवृक्षेन कोटरस्थेन वह्निना ॥ दह्यते तद्वनं सर्वं कुपु
त्रेण कुलं यथा ॥ ८४ ॥ विद्यमानापि नरः पुज्यो यः स्वसि
द्धिपलंघितं ॥ प्राप्तं प्राप्तं सलपं वेप्राप्य निर्धनं परिभुयेत
नीव प्राप्यपदं प्राप्य सुसिद्धिमिहतं मनयाति ॥ सुखको
घनता प्राप्य सुनिहतं गतो घाम ॥ ८५ ॥ न हि भवति
वाद भाव्यं भवति भाव्यं यत्नेन ॥ करतलगतमपि
नश्यं ति यस्य च भवितव्यता ॥ ८७ ॥ अमित्रेण पुरा
वह्निसमं तं पुरुष आगतं ॥ अमितगुणवति
भार्या अमतं पुत्र पउते ॥ ऋण कारी पिता पात्रु
माता पात्रु विभचारणी ॥ भार्या रूपवति पात्रु
पात्रु पुत्र कुपउतः ॥ ९ ॥ प्रादें तथा भार एकिल तत

81

मुपार्जितं ॥ यथस्मास्त्वनेनित्यन जन्म मधुरायते
भावो यादृशाय स्य न जहाति कदाच न ॥ अग्रगोरः
पुष्पितघातेन मलित्वन मुचति ॥ ९२ ॥ चिता ज्वरो मनु
ष्याणां स्त्री नामानम यो ज्वरः ॥ अप्रयोगामुष्य ज्व
रस्तु एणाम ध्यानं मैथुनं ज्वरः ॥ ९३ ॥ चिंता चिंता
द्वयार्म ध्ये चिंता एव गरीयसी ॥ चिता दहति नि
र्जीवं दहेत्तिा सजीवनम् ॥ ९४ ॥ कृपणाः पवि जा
गाय वाधिनाशाय वाजिनः क्षेत्र को गृह नाशाय
सर्व नाशाय पामपकः ॥ ९५ ॥ हेलय कार्य नाशा
बुद्धिनाशा पतिचनम ॥ याचको मान नाशाय कु
ल नाशाय कुभोजनं ॥ ९६ ॥ पितुरेनमुरदथ्यात्
मातुरधिपात्सहानसं ॥ रसो वा मद्यात् मात दद्या
त्मेतक षीवजेत् ॥ ९७ ॥ मत्या बद्ध नजो नास्ति
परिघ हना तु मार्ग रिग ॥ जार स्वार्थ पति द्वेत्वाज
लेप्नृतिलतिका ॥ ९८ ॥ मतिका मम लोभेन
भ जान्यकुपते पया ॥ कंकरोमि कुगा चाम
हे न खेवचनं वद ॥ ९९ ॥ पाहि पाहि महे पाहि
पावति सर्वदा ॥ प्रभाते चोर भोनेन मम म
स्या मिविपाकिकी ॥ १०० ॥ इति श्री इस
शतिर्षु मसमाप्त ... ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ कश्चि नो नास्ती दारिद्रं जपतो नास्ति
पातकं । मौने न कलहो नास्ति नास्ति जागरतो भयं ॥१॥
अपुत्रस्य गृहं शून्यं दिशा शून्य न बांधवाः मूर्ख
स्य हृदय शून्यं सर्वं शून्यं दरिद्रतः ॥२॥ एकस्य पुत्रो नवि
द्वांसो न शूरो न च पण्डितः अंधकारकुलेतस्य नष्टचंद्र
न शर्वरी ॥३॥ सकटात पंच हस्तेषु सत हस्तेषु वाजिनं
हस्ति हस्त सहस्रषु देशत्यागे न दुर्जनः ॥४॥ क्षीर
हंस श्वेत वक श्वेत को भेद वक हंसयो ॥ क्षीरनीर समागम
तहंस हंस वको वकः ॥५॥ दूरस्थोपि समीपस्थो स
मीपि दूरतः चतुरांगुल प्रमाणेन कर्णचक्षुषयोपति
वने मयूर गगने स्वर्मेघा लक्षांतरे भानु जले च पद्म
दोलक्ष सोमो कुद जलाते जो जस्य ते नकदापि दुरं ॥६॥
कुग्रामवासो कुलहीन सेवा कुभोजनं क्रोधमुखी
भार्या ॥ पुत्रस्य मूर्खो विधवा च कन्या विना
ग्निना पं वहत् शरीरे ॥७॥ नदी तटे भुजे व तात
हस्तगते च धनं ॥ स्त्री गतमपि पत्कार्यं न तत् सर्व न
ले भवेत ॥८॥ सर्पः क्रूरः खल क्रूरः सर्पात्क्रूर
खलः ॥ मंत्रौषधिवशः सर्पः खल कोपिन साम्यति ॥
विद्वानेव च जानाति [illegible] विप्रसद्भावं ॥ द्वि [illegible]
विद्वज्जनपरिश्रमं । विजानाति ॥१०॥ रेवताप
मपेतम ज्ञाति [illegible] नेव पूजयेत ॥ [illegible] कोत

नीचं चैव पराक्रमैः ॥ १३ ॥ आलस्यस्य कुतो विद्याऽविद्यस्य कुतो धनं ॥ अधनस्य कुतो मित्रममित्रस्य कुतो सुखं ॥ १४ ॥ यस्य पुत्रो विधेयः स्याद्भार्या छन्दानुगामिनी ॥ विभवे यश्च संतुष्टस्तस्य स्वर्ग इहैव हि ॥ १५ ॥ ...

नीचं चचैव पराक्रमै ॥ १३ ॥ आलसस्य कुतो विद्या अ
विद्यस्य कुतो धनं ॥ अधनस्य कुतो मित्रं अमि
त्रस्य कुतो सुखं ॥ १४ ॥ यस्य ... विप्रगणस्तवाने
कलहा सदा ॥ पुत्र ... स्त्री ... गवा ... नत सम्म
वे ॥ १५ ॥ ... कतो ... न ... वाजना ॥ स
... रवै चनं ... कदाचना ॥ १६ ॥ ...
... पुत्र ... दारा ... तं नाश्रमत
तमथी ... पुनरा ... हि लोके पुरुष
स्य बंधु ॥ १७ ॥ ... तुराणां न विलं न बुद्धी कामा
तुराणां न भयं न लज्जा ॥ ... तुराणां न च पाकमु
द्धी ... तुराणां न भूमी न सज्जा ॥ १८ ॥ त्यजेदेका
कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे ... त्यजेत् ॥ ग्रामं ... न
पदस्यार्थे ... न पदं त्यजेत ॥ १९ ॥ लोका ...
भय लज्जा दान च धर्मशीलता ॥ पंच यत्र न विद्यते
तत्र वासं न कारयेत् ॥ २० ॥ ... भयमथुन
... नराणां ॥ धर्मो हि लोके
... लोके धर्मेन हीनाः पशुभिः समाना
नः ॥ २१ ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्यैकोपि न विद्य
ते ॥ अजा गलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ॥ २२ ॥
कुमित्रो ... कुभार्या ... कुं
राज्य ... कुदृष्टि ना ... नष्ट वैद्य ता

82

पूर्वं दत्तां स्वयं नारी पूर्वं दत्तं स्वयं च यत्॥ पूर्वं दत्तां स्वयं च या सा मे धावति धावति॥ २६॥ गंगाहीने कृतं देवं विद्याहीने कृतं कुलं॥ अप्रसूता हता नारी हतो यज्ञो मदक्षिणः॥ २७॥ निष्फलं मधुनं लोके तिष्फलं वेदवर्णनं॥ न फलं च सुतापाने निष्फलं तीर्थसंगतिः॥ प्रस्ताव सदृशं वाक्यं स्वभाव सदृशं प्रियं॥ आत्मशक्ति समं कोपं जो जानाति स पंडितः॥ २८॥ विद्या न रत्नानि कोति वा वै गुणे वहीना वहु भाग्ययंते॥ मदृपरु कृष्णव कराति पाद्वं॥ पूर्णं कुंभेन करोति शब्दं॥ २९॥ प्रथमं नार्जितं विद्या द्वितीये नार्जितं धनं॥ तृतीये नार्जितं धर्मं चतुर्थे किं करिष्यति॥ ३०॥ गतं न शोचामि कृतं न मन्ये खादन् न गच्छामि हसन् न जल्पे॥ द्वाभ्यां तृतीये न गतं वत्रा राजन्स्किं कारणं भोज भवामि मूर्खः॥ ३१॥ वामपार्श्वे जलपात्रं भोजने क्षिपते यदि॥ तज्जलं मद्यं तुल्यं भोजनं मांससंमतं॥ ३२॥ ताम्रपात्रे पयःपानं उच्छिष्टे घृतभोजनं॥ हस्ते च लवणं दत्त्वा तत्सर्वं गोमांसभोजनं॥ ३३॥ यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पंडितः स श्रुतवान् गुणज्ञः॥ स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयंति॥ यत्र विद्या गुरुः मार्गः पति तत्र सागरः

१ ...मयन्ति यथानुरागा पतिं मा श्रियन्ति॥ सर्वे गुणाः कांच
मैथुनान्ते स्नाने च पुत्रजाते च यामक्रि॥ श्रीमन्ति सर्वेदा
वौद्धि नरो न रायनो यथा॥३५॥ येषां न विद्या न तपो
न दानं न चापि शीलो न गुणो न धर्मः ते मर्त्यलोके
भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥३६॥

इति श्रीमतपंडित श्रीचाणाक्येन
विरचितं राजनीति समुच्चयं संपूर्णं समा
माप्तम् सं.१९२३ ६ वैशाख ७

83

84

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः॥ ॐ तत्सद्य ब्रह्म
णो द्वितीये प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे
वैवस्वतमन्वंतरे अष्टाविंशतिमे कलियुगे
प्रथमचरणे जंबूद्वीपे भारतखंडे आर्या
वर्ते पुण्यदेशे ऽमुकमासे ऽमुकपक्षे ऽमु
कतिथौ यथायोगनक्षत्रकरणमुहू
र्तसंयुतायां ऽमुकवासरे ऽमुकगोत्रोहं
जन्मनाम्नो वा प्रसिद्धनाम ऽमुकशर्मा
णाः इदं पदार्थं श्रीलक्ष्मीनारायणप्री
तये ऽहं करिष्ये॥२॥ ॐ तत्सद्य मासोत्त
मे मासे माहा मंगलप्रते मासे अमुकमा
से अमुकपक्षे ऽमुकतिथौ अमुकवास
रे अमुकशर्माहं ऽमुकगोत्रोहं तद्दत्त
णासंगतासिद्ध्यैतामस्यर्कैरैवतकं
श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये यथानाम
गोत्राय ब्राह्मणाय दानमहमुत्सृजेत

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमद्रामचंद्राय नमः ॥ श्रीगुरु
सतये नमः ॥ अथ रूपदीपक० ॥ पिंगल लिख्यते
सारद माता तुम बड़ी बुधि देहु दरहाल ॥ पिंगल की छा
या लीये बरनो बावन चाल ॥ १ ॥ गुरु गणेश के चरण गह
हीये धार कै विघ्न ॥ कुंवर भवानी दास को जगत करै
जै क्षिप्र ॥ २ ॥ रूपदीप प्रगट करो भाषा बुधि समान ॥
बालक को सब होत है उपजै अक्षर ज्ञान ॥ ३ ॥ पांडि
त की बानी कठिन भाषा सुगम प्रतक्ष ॥ क्रिपाराम की
क्रिपा सो कंठ करै सब शिक्ष ॥ ४ ॥ पिंगल सागर सम कहे
छंद भेद अपार ॥ लघु दीरघ गण अगण को वर
णो बुधि विचार ॥ ५ ॥ अथ लघु वरणनं ॥ केवल व
घोरी वरण अवर लघु तर देष ॥ कहूं घंट के चरण गुरु
चौथे लघु विशेष ॥ ६ ॥ दीर्घ वर्ननं ॥ आ ई ऊ ए ऐ ओ औ
अं अः आव मान ॥ मस्तक अरु पास गुरु तका हुर विजा
न ॥ ७ ॥ गण वर्णने ॥ मगन भगन कहीं जगन सगन
नगन गणेंद्र ॥ रगण तगण पिंगल भने गण आठे ल
षलेहु ॥ ८ ॥ सरव आदि मध्य अंत गुरु ते सहील सज्ञा
न ॥ पिंगल कह्यो विचार कै क्रम ही क्रम पहचान ॥ ९ ॥
गण फलाफल वर्णने ॥ लक्ष्मी कीरत रोग भै हू आयु
बुधि हित धारि ॥ करै निवास गवन करै फल ज्यो फल
विचार ॥ १० ॥ रगण अक्षर ० ॥ घग घ अक्षर दारं आठ
है ह ऊ घर घर नष म सो ३ ॥ रूपदीप पिंगल कहे आद
न दीजै को ३ ॥ ११ ॥ ताकै ने पांच वरणने ॥ सेकर के ८० ॥
सारंग दो चंद कहीए और मोती दाम ॥ तोटक को

लनैत[illegible] कुंडलिया नंगोदाम॥ कामकेमोहनजा[illegible]रै
नावलीसन [illegible] ॥ प्रमाणकाहै मल्लिकासै
सेवनीत्र्प्राहै॥ मालतीतिलकाऔरमोहादे हरगीराज्ञा
न॥ सोरठागाहीमनोउ गौहाउचंचलकापहचान॥ चौपै
ईऔरत्र्परलतोमरदतटशीरमधुभार॥ अनकूलदहा
[illegible]केचित्रपदाऔरपवंगमधार॥ रसावलापाधडीकरी
गफेरवुवैपांज्ञान॥ संकरत्रिभंगीचटपटामहरणफेरव
षान॥ लीलावतीपमावतीगीयासवैईहोइ॥ रडकुंडली
आकेडलनीरंगकामरमोर॥ रंगीघनाघरडुमल्लाहियो
मत्तगयंदगर्योउ॥ कंडसावषानौंरू लन्नाजसेसवपालेउ
घपैवीतायोपेग्रैसाटकछंदवषानपार॥ सवरूपदीपक
षानहैदैदीरदिवरवाइ॥१२॥ वावनछंदरूपकथयन॥
सारंगीछं०॥ जाणऋाठोऋादोसवपासातोभीपैलीजैहै॥
पारापारतीघोदीहैतो ऐसेचारोकीजैहै॥ औरोकेईभेदो
नाहीपांचोभागेभरणोहै॥ मेसोवाले ऐसेछंदोसोसा
रंगीजाणोहै॥१३॥ दोधकछं०॥ भगण॥ षाडसकली मत्तं
भल्लिजाणहू॥ पिंगलचारभगैनवषानहु॥ द्वादसऋंकसुधा
रवणावत॥ सोयहदोधकछंदकहावत॥१४॥ मोतीदामछं०॥
जगण॥ कलीमधचारजगणवनाइ॥ करोगीतमात्रहसोड
सपाइ॥ वतावतसेससनेहम नाम॥ कहावतछंदसमो
तीदाम॥१५॥ सोतरलनैनछं०॥ नगन॥ सधमसकरोम[illegible]
फन॥ वचनहर्षकर॥ चतरहननगणजु[illegible]गहि॥ ६
दसह लघुवरुधरधर॥ तरलनैनतवहमकर ६
१६॥ तोटकछं०॥ तगन॥ सगनोगिणचारकरे॥

यगलवारह अंकधरै ॥ तकमोरहमतहनैमगहो
यहतोटकछंदहनामकहो ॥१७॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ यगन
सभैचारयगनकोनेमजारो ॥ गिनै बीसमात्राकलीरए
ठानो ॥ यहीसेसनेभेदनीकेकहाहै ॥ कह्योयाहछंद
भुजंगीप्रयाहै ॥१८॥ कामनीमोहनछंद ॥ रगन ॥ चा
रगंनकोसायचैसोठरै ॥ वीसमात्राकलीसायोध
रै ॥ नागवाणीभलीदेषवेजाणीरो ॥
कामणीमोहनाछंदवषांनिरो ॥१९॥ मैनावलीछंद ॥
तगन ॥ धारोजहाचारतगंनलेपार ॥ वीसोसमीहोह
मात्राकलीभाइ ॥ वोलातवैसेसवाणीकहीएहू ॥ मै
नावलीनामसोछंदजाणिहू ॥२०॥ नराजछंद ॥ जगंन
जोडकेकलासचारवीसलैधरो ॥ वनाइअंकसोलहो
कलीसवारकैधरो ॥ लगकरागअंतरेलघूगडूवषा
निए ॥ कहासहेसनागनैनराजछंदजांनिए ॥२१॥
प्रमाणकाछंद ॥ लघूगडूविचारकै ॥ लगकरागधार
कै ॥ कलासवारहोधरो ॥ प्रमाणकाइयेकरो ॥२२॥
मलकाछंद ॥ अंकआठकोविवेक ॥ दीहऔलहूजु
रगका ॥ सेमवैनकूसमान ॥ मलकायछंदजान ॥२३॥
सेषनारीछंद ॥ करोदोयगंने ॥ तकेचारषने ॥ दसोप्र
नधारी ॥ कहोसेषनारी ॥२४॥ मोलतीछंद ॥ जगंना
हहोई ॥ कलाआठहोई ॥ कहोयहवेद ॥ सुमालती
छंद ॥२५॥ तिलकाछंद ॥ सगनाउचारै ॥ गणदोइधा
रै ॥ षटअंककहै ॥ तिलकासकहै ॥२६॥ विमो
हाछंद ॥ दोउरगंनले ॥ [illegible]कोनेमहै ॥ [illegible]विमोहाकै ॥२७॥
अंककहैनेमिसे

२ 86 [illegible]न छंद सोरठा सो तहै ॥ [illegible] हा छंद रठौर
दोहरा छं० ॥ तेरह मत्रा भाष पद जुग तरा क दस मंतु ॥ दो
हा छंद दस धार कै पौ वरनै क निपंत ॥ २८ ॥ सोरठा छं० ॥
आद द्वादश कहीए ॥ अठारह वार ह फिर तव कहीए ॥ सं
ष्या से सवताई ॥ गाहा छंद कहो इम भाई ॥ २९ ॥ उगाहा
छं० ॥ तिय हो इकला पथमै चरण समकी गपारह जा
न ॥ भनै सेस लसनपै ठीगरउ सो उगाहा षह चान ॥ ३० ॥
चुलका छं० ॥ पडकस आधा दोहरा कला पेच कोध
त मिलावै ॥ सेश चूलका छंद की सवै अठावन मत्र ग
नावै ॥ ३१ ॥ चौपई ॥ करे आठ मत्रा सात समोर ॥ सकल
इक पीतर पंद्रह होइ ॥ ऐसै धारो चारो पाइ ॥ सेस चौ
पई दई वताइ ॥ ३२ ॥ अडिल ॥ लघु दीरघ का नेम न की
जै ॥ ऐसे सोलह कचार भणीजै ॥ षोडस कला कती वि
चडारे ॥ छंद अडिल सो सेस उचारै ॥ ३३ ॥ तोमर छं
सगण करो इक आन ॥ फिर होइ दो जग जान ॥ त
व ऐक ऐसे सउचार ॥ उर धरे द तोमर धार ॥ ३४ ॥ मधुभा
र छं० ॥ षट मेल चार ॥ फेर जगण धार ॥ गन सेस हिस
मह भार दोस ॥ ३५ ॥ अनुकूल छं० ॥ एक सधारो भग
ण करीजै ॥ तापहिते ले दो गुरु गिण दीजै ॥ चार लहु
को फिर गण आवै ॥ सो अनुकूला उरग वतावै ॥
३६ ॥ हाकल छं० ॥ इस की कला चौदह करो ॥ ऐसी चा
ल चित मै धरो ॥ चौ कला इक पे च कल दोइ ॥ वरनै
सेस हाकल होइ ॥ ३७ ॥ त्रिपदा छं० ॥ दो भगण गुर
दोहै ॥ अंक वस मन मोहै ॥ सोह स कला इव जानो ॥ त्रि
पदा पहचानो ॥ ३८ ॥ पवंगम छं० ॥ करये ग्पारह आ

रफेरदसलेभरो॥सवमत्तएकवीसचंफ़ागैधरो॥
कनीहांकोजगतमेदरसकोलहै॥फेरदपदेगमनामसे
समुवसेकहै॥३९॥रसावलछंद॥तिनकीसंग्याचार
तानदसपैरमलोवत॥वीसचारकरेमेजकलीकाने
मगनावत॥नामरसावलसोरचकुकेमनमेआव
त॥गरुडपंषसनवातशेसकहजगतदसावत॥४१॥
पधडीछंद॥दसकरोमध्यमफिरश्रटमिलाइ॥गिनेंषो
डसमत्तापाइपाइ॥इकजगणसोअंतमेधरुपोइ॥
भणसेसपाधडीछंदहोइ॥४२॥इंदवैयाछंद॥कीजेव
लआदिकीषोडसतामेद्वादसलावे॥आठवीसको
नेमकलीमेऐसेचारवनावे॥दीरघसाधअंतरे
राषोअसरनेमनकररेगे॥इसीछंदकानामदुवे
यासेसनागमुषवरने॥४३॥सेकरछंद॥करआदि
विरतविचारषोडसफेरदसगिणलेहु॥सवेमत्तहै
षटवीसइसमेअंतगुरुलहुदेहु॥ऐसेसुधारोचा
रतुककोनिरमलेविश्राम॥सोकहापिंगलगरुडमे
तीछंदसेकरनाम॥४४॥त्रिभंगीछंद॥पहलेदस
कीजेदूजैतीजेआठोलीजेषटचतरा॥नागोकेहीसे
जगजकहीसेविस्वेवीसेदेवतरा॥वतासेआनो
कलावषानोतुककोठानोरनढंगी॥चारुकोभा
वेचितउलसावेछंदकहावेत्रिभंगी॥४५॥चरपटछ
छंद॥पहलेतैराचरतीरादसवहुरमलावे॥गुरको
कीजेअंतमेतुकलौंसोआवे॥सभमातालैदसकी
कलवारकहावै॥चरपटाछंदनामहैफणपतकहावै॥६

३

87

सरहस छंद ।। पहलै दस मत्रा पिर आठ दूजै तीजै गपारह
मान ।। सन्हैउ रतीसे रुककै भीतर अंत गुरु लाउ आन ।।
रनमै कघु गण का भेद नही है जैसै धरन प्रधान ।। पिं
गल उचारे जुगत विचारे छंद सरहट आन ।। ४७ ।। लीलाव
ती छंद ।। पहलै ह कवित करो अठारह दूजी चौदह पे
रधरो ।। कीजिये बतीस कला सम निरमल रुक जैसे है
चार भरो ।। तांही क घुगीण तअंत काकार समै इक
दीरघ लै अंत गहो ।। कीनी तव लै सगरउसे ।। वा तै र
हलीलावत छंद कहो ।। ४८ ।। पदमावती छंद ।। इसकी
विरत कला स्तु ठा डो उस दूजी फेर जो उसै [illegible] दीजै ।। ती
सअरु दोउ कली मछिय प्रउ ऐसे चार स्वार वरकी
जै ।। सवर भेद नाइल मै को दिरघ अंत दो गिण
आनो ।। सेसठार उलो जुगत वताव यो पदमावत छं
द वखानो ।। ४९ ।। गीआंना छंद ।। करचार चौगन चार सं
ग्पावउ रवार हलीजिए ।। सव आठवी सव खान मत्रा
कल कठ ल गीजिए ।। दीरघ लघु का भेद नाहीं राए
अंत वखानिये ।। वोलयो भुजंग सजुगत सेती छंद गी
यानानिये ।। ५० ।। पैडी छंद ।। तेरा मत्रा आदि की अंत
पत्लै ग पाभाखिये ।। लघु दीरघ का भेद नहि सव आ
ठवी सगीण राखिये ।। चत्रु समै ऐ वात कोर करण
अंत मै दिजिए ।। सेस नाग की जुगत सो भरण छंद पै
डीकी जिए ।। ५१ ।। रुउ नाम छंद ।। कीजै कला प्रथम
तिरै ठ मत्र ।। रहरा कोहु सैरे ।। तीजै गिणदस पांच वक
सिरा ।। फिर चौदै रकरण वे ।। पठ्ठ नेम पांच वे करीए ।। ५० ।।

रउसुभमात्रवसतहैकीनोसेसवखान॥३॥सौमैगौरदोहाध
रोंरउघरैत्रउचान॥५२॥कुंडलीछंदौछं॥कीजैदोहाछं
दधरआगेरोडदेऊ॥चौथैजमकविचारकैसोडलाला
लेऊ॥सोडलालालेऊचरनषटह्र धवनावऊ॥तवात
मैचौवीसकलीकामेलमतावऊ॥कहिसेसनेवातनाम
कुंडलीआदीजे मिलेआदसोअंतजथासररैहाकी
जै॥५३॥कुंडलनीछंद॥पढीहैगाहारुपदरुपनिकरऊस
मझैसे॥आगेरोडकआनऊकेहसेसकुंडलनीछंद॥
सोकुंडलनीछंदजहडलालालीजे॥त्रियनतेकरमतजो
उत्तवातकमैदीजै॥इसकायहीप्रमाणघरराकरुआ
रनगढीये॥मिलैजमकतेजौमैरुपधरैगाहापढीये॥
५४॥रोडकाछंद॥कीजैप्रथमरसमलायहुरैतीजैअठपा
रचौथैघाहुमात्रलेऊहुगनसमान॥सचपाघरकोवती
सवोलैइमनागईसउकतआपारदेहमिलतपचगन॥ज
हांवलाकाकेरनकोईजानतहुतरलोहरुकअंतवार
ठौरगरुलऊमान॥पांवोआरुपरसीवेमरुऔरंगेनक
सुनगिकेसीचालगैलछंदरंगडकावखान॥५५॥गीतीं
छंद॥गिराआगिनवकरीएसातसातभरीएदोऊठौरध
रीएपंचभीसही॥अंतकाचाठवीसकरगातकातकवर
रोचैसेचारचरणेनुगनतगुही॥लघुदीरघकोआ
निएकलोतलजानियेजमकपघानिराघरतसै॥
सेसनागआरतेसपनेमगहतेचअंरपसेसगेहतेरे
गीयौकहे॥५६॥पनीघरीछंद॥कीजीएचरनजहा
छोडगवनाकरपैरंआठकरीसातचौनगउरघीर

अंकरवे।तीसकौ समानजानरागकालकऐसेहीवसारके
विचारचारमंदीर।।पामेतपुदीरघकौ अंकूरभेदकरू
पेनाग्निसनवेकवित्तविचित्रचारकोहरीरा।।ऐसेहीवेद
नाकोपनाघरीहेपिंगलपुनिनकहे।।ऐसीचालकदीए
४६ ॥७॥ दुमलाघं०।।गिनआठसगनकौ।।कभीतरसरन
भेददतावतहे।।सवबीसविचारबनावतआठरसमंत
वतीसमलावतहै।।इसरूपकभेदहवीनलहैमनिस
धरुसधगनावतहै।।फेनपेतडुपेतजुवाह्नदिखावत
डुमलघंदकहावतहै।।५८।।मंगलपदघंद०।।सातभ
गनकरैतकसेसमअंतगुरुदृदफेरलगावे।।वीसरती
नकरैसवअवरमत्तवतीसहमेलमिलावे।।ढालस
लकरैनिजकाजतिजचातरमोरितैसेनवढावे।।नाग
कौसनगेविदवाहनमत्तठायेदसघंदकहावे।।५९
४८ कडखाघं०।।माखियेप्रथमदसहसेरेतीसरेवसुरस
सातदीजे।।मत्तसैतीसकोनेमपाकोवरेअंतमेदोगु
रुधरिलीजे।।नागकावचनसनगरुडमनमेधरेक
वोलकचारदससटालआवै।।घंदकडखाकुहेचालऐ
सेगहेजुगनकेभेदकोवत्तरपावे।।६०।।झूलनाघंद०।।
होमैआठगनकोनेमकीजेभलेऔरतेभेदकोन
गिनआनो।।गहोमत्तचालीसयापोगिनोकांवच्चौ
वीनकेपापजानो।।कलीचारवेवीचमेहोपटे
सेसैकहीचातरीनेग्रहेधारलीजे।।सत्तीससवे
ताहसोढालहीसो[redacted]यतिचालते
झूलनेघंदकीजे।।६१।।गवैयाघंद०।।सोडस

[illegible]

~~[illegible]~~

روز نام شب	نام دن
نام مالا دھنگ ادھب	(1) سوموار
تیا سنگھ … سکھ کی ساتھ	(2) منگلوار
ادی کسی ھیرا دیتی کھتم کرنا	(3) بدھوار
تیاگ کی سیوا کی …	(4) بیروار
دھیان کی ساتھی کی …	(5) شکروار
سیا بھرک شکی …	(6) سنیچروار
سیا بھرک شکی	(7) ادیت وار

